आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 9 ★ मूल्य : 10 रु.
15 सितम्बर, 2008 ★ भाद्रपद सं. 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

यह
श्रेष्ठतम
अलंकार
प्रकृति ने
बनाएँ
है...

और
यह
शुध्दतम
अलंकार
हम ने...

पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी
यही कहे जिनवाणी।

रतनलाल सी.बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरे • मोती

औरंगाबाद
आकाशवाणी चौक,
☎ ०२४०-२२४४५२०,२२

जलगाँव
सुभाष चौक,
☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३

Malhar - 08

औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/-
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जे पावकम्मेहि धणं मणुस्सा,
समाययंती अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्टिए नरे,
वेराणुबद्धा नरयं उवेंति।।2।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.2

पापकर्म से कुमतिवश जो,
मानव वित्त कमाते हैं।
देखो, बाँध वैर, धन तज वे,
नर नरकलोक को जाते हैं।।2।।

सितम्बर 2008
वीर निर्वाण संवत् 2534
भाद्रपद 2065

वर्ष ६५ अंक 9

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	ज्ञानावरण कर्म	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	मरण के पूर्व छोड़ें मोह-ममत्व	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	११
	नश्वर पर न इठलाएँ	-श्री योगेश मुनि जी म.सा.	१७
तत्त्व-ज्ञान-	नमोकार मन्त्र का परिचय	-आचार्य श्री उमेश मुनि जी म.सा.	२०
शोधालेख-	जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश-परम्परा	-डॉ. सोहनराज तातेड़	२६
	जैन कथा साहित्य : एक समीक्षात्मक सर्वेक्षण	-डॉ. सागरमल जैन	३१
चिन्तन-	सन्त दर्शन क्यों एवं कैसे?	-श्री चांदमल बाबेल	३८
	साधना के साधन-सूत्र	- श्री जशकरण डागा	५७
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Science of Dhovana-water	-Dr. Jeoraj Jain	४२
	Namaskāra Sūtra(2)	-Dr. Priyadarshana Jain	४८
विशिष्ट प्रश्नोत्तर-	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (१३)		५४
गीत-	मिला आज वह अति उत्तम है	- डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया	५९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (५२)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	६०
उपन्यास-	भाई-बहन (११)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	६४
प्रेरक-प्रसंग-	हिंसा की खिलाफत जरूरी	- डॉ. दिलीप धींग	६९
नारी-स्तम्भ-	ये जीमण, ये मायरा	-आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	७१
युवा-स्तम्भ-	तलाशें सम्यक् जीवनशैली	- श्री पदमचन्द गाँधी	७३
बाल-स्तम्भ-	देना भी सीखें	-श्री रामबिलास जैन	७६
स्वानुभव-	मृत्यु से न भयभीत हों हम	- श्री भीकमचन्द गोलेच्छा	७९
प्रेरक विचार-	Some Phrases	-Meenu Surana	२५
	सद्गुणों की महक	- प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता	३७
	Forgiveness	-Indra Prasad Jain	४७
	स्वाध्याय करने की कला	- श्री लक्ष्मी चन्द जी जैन	५८
कविता-	सामायिक को धार!	- डॉ. इन्दरराज बैद	५२
	मत करिए रात्रि भोजन	- श्री मगनचन्द जैन	५३
	सत्य सदा अमर	- साध्वी रुचिदर्शना श्री	८०
संवाद-	समस्या-समाधान (१५)		८१
स्वाध्यायी परिचय-	श्री हीरालाल जी मंडलेचा-जलगाँव	- श्रीमती मोहनकौर जैन	८५
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता(१८)का परिणाम		८९
परीक्षा-परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परिणाम		९५
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	८३
समाचार विविधा-	समाचार संकलन		१००
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१२१

सम्पादकीय

ज्ञानावरण कर्म

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जो विद्यमान ज्ञान को प्रकट न होने दे वह ज्ञानावरण कर्म है। आत्मा में स्वभावतः ज्ञान विद्यमान है, किन्तु वह ज्ञानावरण कर्म के कारण आवरित हो जाता है, प्रकट नहीं होता है। अब प्रश्न यह है कि उस ज्ञान का क्या स्वरूप है, जिसे ज्ञानावरण कर्म आच्छादित या आवरित करता है। ज्ञान का तात्पर्य है जानना। वस्तु को जैसी है वैसी जानना ज्ञान है। वस्तु का अयथार्थ ज्ञान अज्ञान अथवा मिथ्याज्ञान है। वस्तु को नाम, जाति, गुण आदि से जान लेना मात्र ज्ञान नहीं है, अपितु उसके स्वरूप का उसकी हेयता , उपादेयता एवं उपेक्षणीयता का बोध करना ज्ञान का सही स्वरूप है।

इसको एक उदाहरण से समझें। जो शरीर हमें मिला है उसके साथ हमारा इतना तादात्म्य होता है कि हम अपने को शरीर से अभिन्न समझने लगते हैं। मैं मोटा, मैं दुबला, मैं गोरा, मैं सुन्दर, मैं स्वस्थ, मैं अस्वस्थ आदि के रूप में हमें जो तादात्म्य होता है वह अज्ञान है, किन्तु ज्ञान नहीं। इस अज्ञान का कारण शरीर के प्रति प्रगाढ मोह है। यदि शरीर ही आत्मा हो तो फिर यह अनुभूति नहीं होनी चाहिए कि मैं बुद्धिमान् हूँ, मैं धनवान् हूँ, में परोपकारी हूँ आदि। ये सभी अनुभूतियाँ आत्मा का पर से सम्बन्ध जोड़ने पर होती हैं। इनमें से एक-एक की वास्तविक भिन्नता है, किन्तु उसका बोध नहीं होने से हम अज्ञान को ही ज्ञान समझते हैं। ज्ञानावरणकर्म हमारे ज्ञान को आच्छादित किए रहता है।

दूसरा उदाहरण लें। मैं धन-सम्पत्ति के साथ अपना नित्य सम्बन्ध मानता हूँ, तो यह भी अज्ञान ही है, क्योंकि कितनी भी धन-सम्पत्ति क्यों न हो उसका हमारे साथ नित्य सम्बन्ध नहीं हो सकता। धन-सम्पत्ति तो आत्मा से बाहर ही होती है। उससे हमारा माना हुआ सम्बन्ध होता है, वास्तविक सम्बन्ध नहीं।

हम यह समझते हैं कि हमारे पास जितने अधिक सुख-सुविधा के साधन होंगे, हम उतने स्वाधीन हो जायेंगे, तो यह मान्यता भी हमारे अज्ञान एवं मिथ्यात्व को ही सूचित करती है। वस्तु के स्वरूप का जो इन्द्रियज्ञान एवं बुद्धिज्ञान है वह तब तक अज्ञान की श्रेणि में ही आता है जब तक व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि सम्यक् न हो। दूसरे शब्दों में कहें तो ज्ञान के लिए दृष्टि का सम्यक् होना आवश्यक है।

दृष्टि का सम्बन्ध मोहकर्म के साथ है। मोहकर्म के दो रूप हैं- 1. दर्शन मोहनीय 2. चारित्र मोहनीय। मोह कर्म की प्रगाढ़ता से ज्ञानावरण का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जितना मोह अधिक होता है उतना ज्ञान पर भी आवरण स्वतः आता रहता है। राग एवं द्वेष के क्षणों में विवेक का प्रकाश प्रकट नहीं होता। ये व्यक्ति को विमूढ़ बना देते हैं। वह आग्रह बुद्धि से युक्त होता है। उसका विवेक कुण्ठित हो जाता है। विवेक का न होना ही ज्ञान पर आवरण आना है। विवेक ही ज्ञान का सम्यक् रूप है। यह इन्द्रिय ज्ञान एवं बुद्धि ज्ञान की अपेक्षा उच्च कोटि का ज्ञान है, जिसका प्रकटीकरण सीधा आत्मा से होता है। यह विवेक इन्द्रियज्ञान एवं बुद्धिज्ञान की यथार्थता की परीक्षा करने में समर्थ होता है अथवा कहें कि बुद्धि ज्ञान एवं इन्द्रिय ज्ञान की सीमाओं को विवेक के प्रकाश में जाना जा सकता है। ज्ञान का यह स्वरूप ही मोक्ष मार्ग में उपादेय होता है।

क्रोध, मान, माया एवं लोभ की तीव्रता या निरन्तरता से ग्रस्त होने पर विवेक अविवेक में परिणत हो जाता है। इसलिए क्रोधादि के क्षणों में किए गए निर्णय प्रायः सही नहीं होते। क्रोधादि चारित्र मोहनीय के भेदों में परिगणित होते हैं। उनमें भी अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया एवं लोभ 'विवेक' के प्रकट होने में विशेष बाधक होते हैं। इन क्रोधादि कषायों से भी अधिक बाधक दर्शन मोहनीय कर्म है, जो व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि को सम्यक् नहीं होने देता। दर्शन मोहनीय कर्म के तीन प्रकार बताये गए हैं- 1. मिथ्यात्व मोहनीय 2. सम्यक्त्व मोहनीय 3. मिश्र मोहनीय। इन तीनों प्रकार के दर्शन मोहनीय कर्म का तथा अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया एवं लोभ का क्षय, उपशम और क्षयोपशम होने पर सम्यक् दर्शन प्रकट होता है। सम्यक् दर्शन एक प्रकार की निर्मल अन्तर्दृष्टि है, जो विवेक का प्रकाश प्रदीप्त करती है। इसलिए कहा जाता है कि सम्यक् दर्शन होने पर अज्ञान स्वतः ज्ञान में परिणत हो जाता है। यह सम्यक् दर्शन आत्मा की अन्तः रुचि का प्रज्ञापक होता है। भोगों में रुचि होने पर ज्ञान की निर्मलता संदिग्ध होती है, क्योंकि उसमें ज्ञान पर आवरण आ जाता है। सत्यद्रष्टा भोगों की यथार्थता को जानता है। भोग उसके आत्मगुणों को कैसे मलिन बनाते हैं, यह भी उसे बोध होता है तथा भोग की रुचि व्यक्ति को पुद्गल की पराधीनता में कैसे आबद्ध करती है, यह भी उसे बोध होता है। इसलिए वह विवेक के प्रकाश में भोगों, पुद्गलों और आत्मगुणों के न्यूनाधिक महत्त्व को आंकता है। यह ज्ञान के स्वरूप के प्रकटीकरण का एक रूप है, जो व्यक्ति को ऐन्द्रियक सुखों से विरक्तता की ओर ले जाता है।

आज हम जिसे ज्ञान समझते हैं, उसमें भोगों के प्रति रुचि बढ़ाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन है। अतः इसे सम्यक् ज्ञान नहीं कहा जा सकता। यह व्यक्ति की अज्ञानता का ही विस्तार है क्योंकि, इसमें दृष्टि सम्यक् नहीं है। अशाश्वत को शाश्वत बनाने की दृष्टि सम्यक् नहीं कही जा सकती। पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, वनस्पति आदि को प्रदूषित करने के साधनों का विस्तार कर हम मानव जाति के विकास की परिकल्पना करते हैं तो यह हमारी अन्तःदृष्टि का दोष है। महापुरुषों का यह मानना है कि अपने द्वारा किसी को उत्पीड़ित किये जाने पर उसका कई गुणा फल उत्पीड़क को भोगना होता है। इसके विपरीत दूसरों के प्रति की गई भलाई का फल भी स्वतः कई गुणा होकर भलाई कर्ता को प्राप्त होता है। यह ज्ञान जिसको प्राप्त होता है वह किसी की हिंसा नहीं करता। यह घोषणा सूत्रकृतांग सूत्र में स्पष्टतः की गई है-

एवं खु णाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण।

आधुनिक विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, खगोल, संस्कृति, कला आदि का ज्ञान यदि व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि को मलिन बनाता है तो वह उस व्यक्ति के लिए अज्ञान ही कहा जा सकता है। इन विभिन्न परा एवं अपरा विद्याओं का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी अन्तःरुचि और अन्तर्दृष्टि के अनुसार होता है। सम्यक् ज्ञान से युक्त व्यक्ति आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान करके भी भोगों की रुचि में आबद्ध नहीं होता, वह उन साधनों का उपयोग स्व पर का समुचित कल्याण करने में इन विद्याओं की सार्थकता समझता है। दूसरी ओर मिथ्यात्व से ग्रस्त व्यक्ति समस्त विद्याओं को ऐन्द्रियक एवं लौकिक भोगों में उपयोग करके ज्ञानावरण कर्म का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज विज्ञान ने मानव को जो सुख-सुविधाएँ दी हैं, उनसे भोगवादी मानसिकता से ग्रस्त लोगों ने अपने चित्त को मलिन कर अपने को सुख-सुविधा के भोगों में उलझा लिया है। वह उनके प्रति अपनी पराधीनता को ही स्वाधीनता समझता है। इसे ज्ञान कहा जाए या अज्ञान यह स्वयं निर्णय करने का विषय है।

ज्ञान के क्षेत्र में सबसे अधिक भ्रम मतिज्ञान एवं मति-अज्ञान में भेद नहीं कर पाने के कारण होता है। हम इन्द्रियों एवं मन की सहायता से होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं। मति अज्ञान भी इन्द्रिय एवं मन की सहायता से ही होता है। ये दोनों ज्ञानावरण के क्षयोपशम से ही होते हैं, किन्तु दोनों में महद् अन्तर है। बाह्य रूप से दोनों अवस्थाओं में बाह्य वस्तु की जानकारी समान ही होती है, किन्तु दोनों के ज्ञाताओं में दृष्टि का आधारभूत अन्तर होता है। उदाहरण के लिए आहार का ज्ञान मतिज्ञानी और मति अज्ञानी को समान रूप से होता है, किन्तु मति अज्ञानी जहाँ उसे

अपनी जिह्वा लोलुपता की पूर्ति का साधन समझता है वहाँ मतिज्ञानी उसे शरीर संचालन का साधन समझता है।

इसका तात्पर्य है कि ज्ञान एवं अज्ञान का प्रभाव आचरण में प्रकट होता है। ज्ञानी का आचारण आम्यन्तर शुद्धि का हेतु होता है, जबकि अज्ञानी का आचरण विषय वासनाओं से ग्रस्त होने के कारण आभ्यन्तर मलिनता को ही अभिवृद्ध करता है। इस अज्ञान के साथ मोह की जितनी अधिक प्रगाढ़ता होती है उतना ही ज्ञान पर आवरण में विस्तार होता जाता है। संक्षेप में कहें तो ज्ञान को आचरण में नहीं लाने पर ज्ञानावरण का बंध होता है। आगम में ज्ञान का आदर नहीं करने पर ज्ञानावरण कर्मबंध की बात कही गई है। ज्ञानावरण के आगम में छह कारण प्रतिपादित हैं- 1. प्रत्यनीकता, 2. अपलाप, 3. अन्तराय, 4. प्रद्वेष, 5. आसादन एवं 6. विसंवाद। प्रत्यनीकता का अर्थ है ज्ञान के विपरीत आचरण। अपलाप का तात्पर्य है ज्ञान का प्रभाव अपने पर न होने देना। अन्तराय से आशय है ज्ञान के आचरण को भविष्य हेतु टालना। प्रद्वेष का अर्थ है प्राप्त ज्ञान के प्रति द्वेष कर भोगों को आवश्यक मानना। आसादन का अभिप्राय है निजज्ञान का अनादर करना। श्रद्धेय श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा के अनुसार इन सबमें ज्ञान का अनादर प्रमुख कारण कहा जा सकता है, क्योंकि ज्ञान के अनादर में ये सभी कारण समाए हुए हैं।

आदरणीय श्री लोढ़ा सा. अपनी प्रकाश्यमान पुस्तक 'बंध तत्त्व' में ज्ञानावरण का स्वरूप प्रकट करते हुए कहते हैं- ''विषय-भोग समस्त दुःखों की जड़ है, इस ज्ञान का प्रभाव अपने पर न होने देना, इस ज्ञान के अनुरूप आचरण न करना, विपरीत आचरण करना, इस ज्ञान की उपेक्षा करना, इसके आचरण को वर्तमान की वस्तु न मानकर भविष्य के लिए टालना, इसे अपनाने में अपने को असमर्थ समझना, निराश होना, निज ज्ञान के प्रभाव को प्रकट न होने देना, ज्ञान पर आवरण है, ज्ञानावरण कर्म है।''

ज्ञानावरण कर्म एक पौद्गलिक संस्कार है जो चेतना को सम्यग्ज्ञान के प्रकटीकरण से रोकता है। इसके मूल में दर्शनमोहनीय एवं चारित्रमोहनीय कर्म की भूमिका होती है। हम यदि अपने ज्ञान को अभिव्यक्त करना चाहते हैं तो अन्तर्दृष्टि में रही मिथ्या मान्यताओं को तिलांजलि देनी होगी। राग-द्वेष के परिणामों पर नियन्त्रण करना होगा। क्रोधादि कषायों को पराजित करना होगा। मोह कम होने पर ज्ञान का आवरण तो दूर होगा ही, मिथ्यात्व या अज्ञान भी सम्यग्ज्ञान में परिणत हो जाएगा। यह सम्यग्ज्ञान हमारे जीवन को आलोक से भर देगा एवं भ्रम के कारण हो रहे भटकाव पर विराम लग सकेगा।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(प्र.) कोह-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?
(उ.) कोह-विजएणं खंतिं जणयइ। कोहवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥67॥
(प्र.) माण-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?
(उ.) माण-विजएणं मद्दवं जणयइ। माण-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥68॥
(प्र.) माया-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?
(उ.) माया-विजएणं अज्जवं जणयइ। माया-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥69॥
(प्र.) लोभ-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?
(उ.) लोभ-विजएणं संतोसं जणयइ। लोभवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥70॥

-उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3, अध्ययन 29, गाथा 67-70

(प्र.) भगवन्! क्रोध पर विजय प्राप्त करने से जीव को क्या प्राप्त होता है?
(उ.) क्रोध पर विजय पाने से जीव क्षमाभाव को प्राप्त करता है। फिर वह क्रोध-वेदनीय कर्म का बन्ध नहीं करता और पहले बन्धे हुए कर्म की निर्जरा कर लेता है॥67॥
(प्र.) भगवन्! मान-विजय से जीव किस गुण को प्राप्त करता है?
(उ.) मान विजय से मृदुता प्राप्त होती है। फिर वह मान वेदनीय कर्म का बन्ध नहीं करता और पहले बंधे हुए कर्म की निर्जरा कर लेता है॥68॥
(प्र.) भगवन्! माया पर विजय से जीव किस गुण को प्राप्त करता है?
(उ.) माया पर विजय पाने से जीव सरलता को प्राप्त करता है। फिर वह माया वेदनीय कर्म नहीं बांधता और पहले बंधा हुआ हो तो उसकी निर्जरा कर लेता है॥69॥
(प्र.) भगवन्! लोभ पर विजय पाने से जीव को क्या प्राप्त होता है?
(उ.) लोभ-विजय से जीव को संतोष गुण प्राप्त होता है। फिर वह लोभ-वेदनीय कर्म को नहीं बांधता और पहले बंधे हुए कर्म की निर्जरा करता है॥70॥

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यदि आदमी को अपने विकारों पर काबू पाना है तो पहली शर्त है कि वह आहार प्रमाण से युक्त करे। दूसरी यह कि आहार दोष रहित हो।
- चित्त-शुद्धि करेंगे तो आत्मा में बल आएगा और हम कल्याण के भागी बन सकेंगे।
- जीवन चलाना महत्त्वपूर्ण बात नहीं है, महत्त्वपूर्ण बात है-जीवन बनाना।
- सच्चा सन्त बुरा करने वाले को भी प्यार की नजर से देखता है और सामने वाले को पानी-पानी कर देता है।
- मन के बाहर जाने का सबसे बड़ा कारण राग है, इसलिये इसे कम करने का उपाय है - बाहरी पदार्थों को अपना समझना छोड़ दो।
- अर्थ की गुलामी से छुटकारा पाने के लिये कामना को कम करना पड़ेगा।
- आज जैन समाज में दिखावा इतना बढ़ गया है कि देखकर विचार आता है। इससे जैन धर्म अपना नाम ऊँचा नहीं कर सकता।
- दुःख मिलने पर किसी अन्य पर रोष करना, किसी दूसरे को दुश्मन समझना, विरोधी अथवा अपना अनिष्ट करने वाला मानना उचित नहीं।
- संसार में जो दृश्यमान पदार्थ हैं, वे टिकने वाले नहीं हैं। जो उत्पन्न हुआ, उसका विनाश सुनिश्चित है, जो बनता है वह एक दिन अवश्य बिगड़ता है। ये इमारते बनीं हैं, बंगले बने हैं, किले बने हैं, वे सब कभी न कभी नष्ट होंगे, यह अवश्यम्भावी है। यह वस्तु का स्वभाव है।
- अगर किसी की वाणी में ऊपर से कटुता है, तो वह इतनी बुरी नहीं है, जितनी कि भीतर में भी कटुता। ऊपर वाला बोल देगा और समाधान पाकर शान्त भी हो जाएगा, पर भीतर की कटुता बड़ी खतरनाक होती है।
- जिसमें श्रद्धा नहीं है, वह ज्ञान का अधिकारी नहीं बन सकेगा।
- ज्ञान के साथ जो तपस्या है वह ऐसी बड़ी-बड़ी शक्तियों को प्रकट कर देती है, जिससे मानव का मन हिल जाता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

मरण के पूर्व छोडें मोह-ममत्व

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने श्रावण कृष्णा त्रयोदशी ३० जुलाई, २००८ को कल्पतरु गार्डन, कांदिवली, मुम्बई की प्रवचन सभा में 'समाधि-मरण' विषय पर अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए रत्नसंघ के तपस्वी संतरत्न ५९ दिवसीय संथारे के साधक श्री सागरमल जी महाराज के गुण-स्मरण, गुण-कीर्तन करते श्रद्धा-सुमन समर्पित किए। प्रवचन का आशुलेखन एवं सम्पादन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं! माताओं-बहिनों!

जीवन की पुस्तक के दो पृष्ठ मुख्य हैं। पहला पृष्ठ जन्म है तो अन्तिम पृष्ठ मरण। जन्म और मरण के बीच के पृष्ठों में जीवन चलता है। जीवन उनका सार्थक है जो कर्तव्य, धर्म, समाधि और शांति के साथ जीते हैं।

जीवन और मरण का जोड़ा है। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष से मास बनता है। प्रवृत्ति और निवृत्ति से साधना चलती है। उच्छ्वास-निःश्वास, जागृति और निद्रा, भोजन और पाचन, पढ़ाई और परीक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं। बच्चा मात्र पढ़ाई करे, परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो तो पढ़ाई पर पानी फिर जाता है। आपमें से अधिकांश व्यापारी हैं इसलिए जानते हैं, आय और व्यय की बैलेंस शीट से व्यापार का अंकन होता है। बाह्य रीति से जीने की कला आप खूब जानते हैं। सुखपूर्वक कैसे जीएं? दीर्घ जीवन कैसे प्राप्त हो? जीने हेतु भोजन कब करना, कितना करना, कैसे करना ये पहलू आप जानते हैं। शरीर की शक्ति क्षीण न हो उसका भी आप ध्यान रखते हैं। जीवन के विषय में जितना आपका ज्ञान है या जितना आप सोचते हैं, मरण के विषय में न आपका चिन्तन है और न कभी विचार ही करते हैं। कहना होगा- जीवन के लिए आप जितने सजग हैं, मरण के विषय में उतने ही बेभान हैं। आप इस सत्य से परिचित हैं कि जो जन्मा है वह एक दिन मरेगा। मरना निश्चित है। जीवन के साथ मरण अवश्यम्भावी है। अतः जीवन-सुधार के साथ यदि मरण-

सुधार का लक्ष्य नहीं रहा तो मानकर चलिये उस जीवन का उतना महत्त्व नहीं। जीवन सुन्दर हो यह आवश्यक है तो मरण-सुधार भी उतना ही जरूरी। आचार्य भगवन्त(पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) की भाषा में जीवन सुन्दर हो यह आवश्यक है। जिसका जीवन सुन्दर नहीं उसका मरण सुधरना अति कठिन है। आज आदमी जीना जानता है, पर वह मरने से डरता है। महापुरुषों ने कहा- मरने से क्या डरना? जिसने मरना सीख लिया, उसका जीवन धन्य हो गया।

आज प्रायः जीने की कला के प्रति सजगता देखी जाती है, मरने की कला के प्रति नहीं। हर व्यक्ति चाहता है- मैं सौ साल तक सुखपूर्वक जीऊँ। इसके लिए जो-जो प्रक्रियाएँ ध्यान में आती हैं, उनको अपनाता है। मेरे भोग छूटें नहीं, कमज़ोरी आए नहीं। अवस्था तो आए, पर व्यवस्था नहीं बदले। क्या यह संभव है? ऐसा सोच किसलिए? सुखपूर्वक जीने के लिए? आदमी सौ बरस तक जीना चाहता है और यह भी चाहता है कि मेरा देखना, सुनना, चलना, फिरना सब बराबर बने रहें। मेरे शरीर की एवं इन्द्रियों की शक्ति कम न हो। उसने जीना तो समझा है, मरना नहीं समझा। जिनके जीवन में कर्त्तव्य-परायणता है, जिनका जीवन धर्मनिष्ठ है, उन्हें न जीने की खुशी है, न मरने का गम। रहे तो लाख के, गए तो सवा लाख के।

मैं आपको थोड़ा वास्तविकता की ओर ले जाऊँ। घर में बच्ची है, माता-पिता उसका दुलार करते हैं, पालन-पोषण करते हैं, पढ़ाते हैं, लिखाते हैं, होशियार करते हैं। बच्ची पर जंवाई हँसता है आखिर इसको तो मैं लेकर जाऊँगा। बच्ची आपके घर रहने वाली नहीं है। एक पिता जोड़-जोड़कर तिजोरी भरता है। पुत्र हँसता है- आप जोड़ लो, चाहे जितना जोड़ लो आखिर में यह धन तो मेरे पास ही आने वाला है। धरती कभी हँसती है। तुमने मेरे से कमाया, आखिर मेरे में मिल जायेगा। इस शरीर को नहाते, शृंगार करते, हृष्ट-पुष्ट करते जब मौत देखती है तो वह हँसती है तू अपने-आपको चाहे जितना सजा ले आखिर तो मेरी गोद में आना होगा।

रोज मरने वालों को आप देखते हैं। कइयों को श्मशान घाट पहुँचाते हैं, उनकी अंतिम क्रिया करते हैं। वहाँ बैठे-बैठे मरने वाले की बातें करते हैं, लेकिन मैं मरूँगा ऐसा कभी मन में विचार नहीं आता। यह अवश्य सुना है जो आया है वह जायेगा- 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः'। वह चाहे गरीब है या अमीर, गाँव का रहने

वाला है या शहर का, वह चाहे राजा है या महाराजा, जो जन्मा है वह मरेगा। आया सो निश्चित जायेगा। जाना सबको है, पर जाना कैसे? भाई, डरने की जरूरत नहीं है। शास्त्र कहता है मृत्यु कल्पवृक्ष है। अगर मरण बिगड़ गया तो जीवन भर किया कराया पानी हो जायेगा। मरण के समय विकार-वासना आ गई तो जन्म-जन्मान्तर बिगड़ जायेगा। मृत्यु परीक्षा है। परीक्षा देना जरूरी है। परीक्षा नहीं दें तो आगे की कक्षा में कैसे जाएँ? उक्ति में ठीक ही कहा है-

मृत्युकल्पद्रुमे प्राप्ते येनाऽऽत्मार्थो न साधितः
निमग्नो जन्मजे बाले, स पश्चात् किं करिष्यति।

कल्पतरु रूप मृत्यु को पाकर जिसने अपनी आत्मा का हितसाधन नहीं किया, वह व्यक्ति अगले जन्म में पछताता है। इसलिये कहा है-

तप्तस्य तपसश्चापि, पालितस्य व्रतस्य च।
पठितस्य श्रुतस्यापि, फलं मृत्युः समाधिना।।

तपश्चर्या का फल देखना हो तो देखो 'मरण' समाधिपूर्वक है या नहीं? चाहे जितना ज्ञान हो, अच्छी क्रिया रही हो, पर यदि मरण समाधि युक्त नहीं तो उस ज्ञान का और क्रिया का क्या अर्थ? जीना जैसे कला है, मरना भी कला है। एक कविता में पढ़ा-

मरना भी तो एक कला है, नहीं सभी को आती है,
जिसे आ गई उसकी समझो, चौरासी कट जाती है।
जिसने मरण बिगाड़ा उसने, मानो सब कुछ लिया बिगाड़,
जिसने मरण सुधारा उसने, मानो सब कुछ लिया सुधार।।
पापात्मा को देख मृत्यु को, बिलख-बिलख कर रोते हैं,
धर्मात्मा ऐसे अवसर पर, भारी हर्षित होते हैं।
जीने पर यश सुख उसको, मरने पर पाए सुरलोक,
अथवा पाये मोक्ष धाम को, जहाँ नहीं कोई दुःख शोक।
एक मृत्यु को मार डालता, एक मृत्यु से मर जाता।
एक डूब जाया करता है, और दूसरा तर जाता।।

मरण समाधिपूर्वक हो। आप गुरुहस्ती का नारा लगाते हैं- "गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक-स्वाध्याय महान्।" पूज्य गुरुदेव ने 10 वर्ष से लेकर 81

वर्ष तक संयम की, श्रुत की, स्वाध्याय की और जीवन भर तप-साधना की ज्योति जगाई, वे महापुरुष अन्त समय में कहते हैं- मैं खाली नहीं चला जाऊँ। मेरा मरण समाधि के साथ हो। ऐसी भावना के साथ होने वाले मरण गाये जाते हैं।

तपस्वी श्री सागरमल जी महाराज का जीवन परिचय, उनकी सुकुमारता, उनकी दीक्षा की भावना, दीक्षा लेने के पश्चात् संयम-साधना और जब यह देख लिया कि अब शरीर रहने वाला नहीं है; छूटने के पहले शरीर छोड़ने की दृढ़ भावना के कारण तपस्वी संतरत्न ने 59 दिन तक आत्मचिंतन- आत्मरमण करते हुए मृत्यु को महोत्सव बनाया, इसकी कुछ झांकी आप तत्त्वचिंतक मुनिश्री से सुन गए हैं। उसे फिर से दोहराने के बजाय हम उस महापुरुष के आदर्श संथारे का चिंतन करें। संथारा किसी कामना या भय से नहीं किया जा सकता। प्रलोभन और भय से व्यक्ति मर सकता है, परन्तु तप साधना के द्वारा शरीर को इस प्रकार तपा नहीं सकता। मन से आसक्ति की ज्वाला बुझा देने का नाम है 'संथारा'। जीवन के प्रति मोह और ममता का त्याग हंसी खेल नहीं है। मृत्यु की विभीषिका पर विजय प्राप्त करने का नाम है- 'संथारा'। भोजन छोड़ देना संथारा नहीं होता। अनशन अलग है, संथारा अलग। संथारे में 'जीवियासामरणभयविप्पमुक्के' का आदर्श झलकता है। न जीवन की ममता, न मृत्यु का भय। न इस लोक की आसक्ति, न परलोक की आकांक्षा।

तपस्वी श्री सागरमल जी महाराज ने एक योद्धा की तरह मृत्यु को ललकारा। विनाशी भौतिक जीवन से अपने आपको हटाकर अविनाशी आत्म-तत्त्व पर अपने-आपको केन्द्रित किया। वे महापुरुष आत्मकेन्द्र पर आसन जमाकर बैठ गये। मृत्यु का भय उन्हें विचलित नहीं कर सका। उनके तप और ज्ञान की ज्योति जलती रही और वे उसमें कामना एवं वासना की आहुतियाँ देते गये। 59 दिनों तक वह महायज्ञ निरन्तर चला और आज ही के दिन श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को उस महापुरुष की मृत्यु महोत्सव बन गई। तपस्वी श्री सागरमल जी महाराज का सुदीर्घ संथारा सीझा। संथारा सीझने का मतलब है पक जाना। उनकी साधना पक गई।

रत्नसंघ परम्परा में पूज्य श्री सागरमल जी महाराज को 59 दिन का संथारा आया। इसी प्रकार इस गौरवशाली परम्परा में बुधमल जी महाराज, भगवानदास जी महाराज, भजनानन्दी माणक मुनि जी महाराज को सुदीर्घ संथारे आए। पूज्य गुरुदेव का तेरह दिवसीय आदर्श संथारा आपमें से कइयों ने देखा है। पं. रत्न शुभेन्द्र मुनि

जी को सोलह दिवसीय तप-संथारा आया। महासती सिंधुजी महाराज, सुगनकंवर जी महाराज के संथारों की कड़ी में अजमेर में वयोवृद्धा महासती श्री सूरजकंवर जी महाराज का ग्यारह दिन का चौविहार त्यागपूर्वक संथारा अपने-आप में अनूठा था।

किशनगढ़ के लोढ़ा कुलभूषण (श्री सागरमलजी महाराज)ने संसार में रहते रईसी देखी। दीक्षा लेने के बाद ज्ञान और क्रिया में रमणता और मृत्यु को महोत्सव बनाने के लिए सुदीर्घ संथारे में समाधिस्थ रहकर उस महापुरुष ने साधना का एक उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत किया।

उस महापुरुष का जीवन सरल था, निष्कपट था, धर्म में स्थिर था। ऐसे समता के सागर पूज्य श्री सागरमल जी महाराज ने आज से कुछ दशक पहले किशनगढ़ में संथारा अंगीकार किया। वे इतने सुकुमार थे कि एक दिन के उपवास में उनके गले में गांठे पड़ जाती, परन्तु उस महापुरुष ने मृत्यु को महोत्सव बनाने की ठान ली। संथारा करने और कराने वालों के लिए आज भी प्रश्न किये जाते हैं। कहा जाता है- इसे मारा जा रहा है। पूज्य श्री सागरमल जी महाराज को मारा जा रहा है, इस प्रकार की बात उस समय भी किशनगढ़ दरबार तक पहुँची। पहले भारत आजाद नहीं था, रियासतें थी और रियासत का महाराजा ही निर्णय करता था। महाराजा ने दीवान को भेजा, जाओ पता करो, वास्तविकता क्या है?

दीवान साहब स्थानक पहुँचे। पूछा- "महाराज को क्यों मार रहे हो? महाराज ने खाना क्यों छोड़ दिया?" दूसरे भाई जबाब दें, इसके पूर्व पूज्य सागरमल जी महाराज ने कहा- "दीवान साहब! यह शरीर अब छूटने वाला है। शरीर छूटे इसके पहले मैं छोड़ दूँ तो ठीक है। एक आदमी किसी किराये के मकान में रहता है। मकान मालिक अवधि पूरी होने पर मकान खाली करने का कहे, वह जोर जबरदस्ती करे, धक्के मारकर निकाले, उसके बजाय स्वयं निकल जाए तो क्या आप इसे अच्छा नहीं मानते? दीवान का सिर झुक गया। उनको बात समझ में आ गई। इस शरीर को छोड़कर जीव जाना चाहता है तो इसमें सहयोग करें। छुड़ाने या छूटने की बजाय स्वयं द्वारा छोड़ना अच्छा है। छूटने में दुःख है, छोड़ने में सुख।

आपकी जेब में रुपये हैं। जेब फटी है। आपका पर्स गिर गया, गुम हो गया। रुपये भले ही पचास हैं, पर क्या आप पर्स ढूँढने का प्रयास नहीं करेंगे? एक के पचास रुपये गिरे और एक ने पाँच लाख रुपये हाथ से दे दिए। तकलीफ किसमें? गया

ज्यादा या दिया ज्यादा? पाँच लाख जानते हुए छोड़े हैं, पचास छूटे हैं। दुःख छूटने का है, छोड़ने का नहीं।

एक व्यक्ति किसी कारण एक दिन भोजन नहीं करे तो घर वाले कहते हैं पटोलिया पी लो, दूध पी लो। वहीं यदि उपवास कर ले तो? उपवास करने वाले को खीचड़ी, पटोलिया, दूध कुछ भी खाने-पीने को नहीं कहते। एक रोग के कारण अन्न छोड़ता है, दूसरा उपवास के कारण। तप किसमें? छोड़ने में तप है। पूज्य सागरमल जी महाराज ने चालीस या इकतालीसवें दिन स्पष्ट कह दिया -शरीर मुझे छोड़े उसके पहले मैं शरीर को छोड़ देना चाहता हूँ। दीवान साहब तपस्वी मुनि की दृढ़ता, सहनशीलता, आत्मरमणता के समक्ष नतमस्तक हो गये और दरबार से जाकर कहा- "महाराज के लिए जो कुछ भी सुना है वह अन्यथा है। पूज्य श्री सागरमल जी महाराज का उनसठ दिन निर्विघ्न संथारा चला। एक उपवास कठिन होता है तो फिर खाना छूटना, घर छूटना, परिवार छूटना कितना कठिन है? आप छोड़ेंगे या छूटेगा, चिन्तन करना।

मैं एक घर में गोचरी गया। पत्नी को पति मार रहा था। संतों को देखकर मारना तो बन्द हो गया, पर पत्नी विलाप करती हुई कहती है - "मारो, खूब मारो। मैं तो ऊबी आई आडी जाऊँ।" वह जमाना था। उस समय आज की तरह तलाक कम होते थे। वे जैसी भी स्थिति होती उसमें निंभना जानते थे।

यह शरीर जाने वाला है। एक-न-एक दिन छूटेगा। जो छोड़ेगा वह मृत्यु को महोत्सव बना सकेगा। हम मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले पूज्य सागरमलजी महाराज के मरण से सीखें। उस महापुरुष के गुणगान करें और सभक्ति श्रद्धा सुमन अर्पित करें। आपकी पंचरंगी की साधना चल रही है, आप मृत्यु से डरें नहीं, मृत्यु को महोत्सव बनाने की कला का अभ्यास करते रहें, यही उस महापुरुष को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

'जिनवाणी' पर अभिमत

'जिनवाणी' मैं २५ वर्षों से पढ़ता आ रहा हूँ। पत्रिका की साज-सज्जा एवं लेख का स्तर दिनों-दिन प्रगति पर है। बधाई।

-गौतम लुणावत, चेन्नई-600079

प्रवचन

नश्वर पर न इठलाएँ

श्री योगेशमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा के द्वारा १० जून, २००७ को कर्नाटक भूमि में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री जगदीश जी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं! माताओं-बहिनों!

आकाश में दृग्गोचर इन्द्रधनुष को, घास पर पड़ी ओस की बूँद को एवं पानी के बुलबुले को क्षणभंगुर बताया गया है। हाथी का कान भी सदैव अस्थिर अवस्था में रहने वाला होता है। हाथी स्वयं के प्राणों की सुरक्षा के लिये कान हिलाता रहता है। उसे नाक में होकर चींटी के प्रवेश का खतरा है, इस हेतु वह सावधान रहकर कान हिलाता रहता है। प्राणों की सुरक्षा का प्रयास सब करते हैं, लेकिन आत्मा के लिये क्या कर रहे हैं-इस हेतु चिंतन चल रहा है- भावना का। भावना के चिन्तन से हम मुक्तिगामी बन सकते हैं। बारह भावनाओं में पहली भावना अनित्य है। **'असंखयं जीवियं मा पमायए।'** यह जीवन असुरक्षित है, अनित्य है, अशाश्वत है। आयुष्य टूट जाने पर उसे घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता। भगवान् महावीर से देवेन्द्र ने आकर कहा- "भगवन्! आपके इस समय भस्मग्रह लगा हुआ है। अतः आप आयु को थोड़ा बढ़ा लीजिये।" भगवान् महावीर ने कहा- "यह आयुष्य घटता बढ़ता नहीं है।" तीर्थंकर की आयु न बढ़ती है न घटती है।

आत्मा जब शुभ भावों में रमण करता रहता है, तो प्रशंसा होती है अशुभ भावों में आने से अपयश मिलता है। सरल वृत्ति वाला अशुभ कार्य नहीं करता- दुष्प्रवृत्ति वाला शुभ कार्यों से परे हो जाता है।

चार दिन की जिंदगी है, फिर जाना पड़ेगा। अतः परिवार एवं समाज के बीच अकरणीय कार्य नहीं करें। क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष इनके परिणाम घातक होते हैं। अहंकार से टकराहट पैदा होती है। अहंकार के कारण ही आज बिखराव की स्थिति बनी है। इन्द्र-चक्रवर्ती जैसे भी इस संसार से चले जाते हैं,

मानव तो साधारण प्राणी है। आज मानव कुत्ते जैसी वृत्ति वाला बना हुआ है। एक कुतिया गाड़ी के नीचे बैठी थी। गाड़ी चलने पर उसने पूँछ ऊँची कर दी। वह सोचती है कि यह गाड़ी मेरी पूँछ के बल से चल रही है। संघ, समाज में कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि यह संघ मेरे बल पर ही चल रहा है, यही अहंकार वृत्ति है। अहंकार नहीं करें। अनित्य भावना को जीवन में उतारें। आप राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार.... मात्र गुनगुनाते हैं, आचरण नहीं करते।

भरत चक्रवर्ती ने चिन्तन किया तो काँच का महल ही निमित्त बन गया। देही से देहातीत हो गये। कई व्यक्ति कहते हैं भूखे भजन न होई गोपाला..... पेट के लिये अन्न जरूरी है। एक भाई उदरपूर्ति के लिये कमाई की तलाश में निकला... उसने सोचा मैं पढ़ा लिख कम हूँ। अग्रेंजी भी नहीं आती, क्या करना चाहिये? उसने अंग्रेजी में सामान्य जानकारी की दृष्टि से तीन वाक्य याद किये- (1) Yes sir. (2) No sir. (3) Very well sir. वह इन वाक्यों का आशय भी नहीं समझता था कि इनको कहाँ बोला जाय, कहाँ नहीं। वह भाई काम की तलाश में एक सेठ के अहाते में पहुँच गया। संयोग से सेठ साहब अपनी राड़ो घड़ी बाहर रखकर अन्दर स्नानगृह में स्नान कर रहे थे। सेठजी स्नान कर बाहर निकले। देखा, राड़ो घड़ी गायब थी। पास ही खड़े उस भाई से पूछ लिया- "क्या तुमने मेरी घड़ी ली?" उसने सहजता से याद किये अंग्रेजी के वाक्य कहे- Yes sir. सेठ जी ने फिर कहा-घड़ी वापस दे। उसने कहा- No sir., सेठ जी ने कहा- घड़ी वापस नहीं दी तो पुलिस के डण्डे एवं जेल की हवा खानी पड़ेगी। उसने कहा- Very well sir.,उस भाई को काम तो नहीं मिला, जेल की हवा खाने को अवश्य मिल गई। उसके शब्दों के कहने के निमित्त के कारण सजा मिली। कब, कहाँ, क्या कहना चाहिए, इसका विवेक आवश्यक है।

हाँ, तो जो संसार में आया है उसे एक दिन जाना ही पड़ेगा.... जब तेरी डोली निकाली जायेगी बिना मुहूर्त के उठा ली जायेगी....."जब तक नाड़ी की खट्खट् है तब तक जीवन की खटपट है" सभी का जाना निश्चित है। पापी मौत से भयभीत रहता है। धर्मी संथारा लेकर मृत्यु को महोत्सव बना लेता है। लुकमान प्रसिद्ध हकीम था। उसने भी बताया मौत रुकने वाली नहीं है। अतः जो धर्म के मर्म को समझ लेता है वही धर्मी है। तीसरे मनोरथ में भी कहा है - वह दिन परम कल्याणकारी होगा, जिस दिन संलेखना संथारा कर पण्डित मरण को प्राप्त होऊँगा।

मुर्दे के शरीर को चाहे मिट्टी में रखो, ताबूत में रखो या सोने की पेटी में रखो उसका स्वभाव सड़न-गलन का है, अतः वह तो बदबू फैलायेगा ही। अतः इस तथ्य को समझकर अच्छी करणी एवं पुरुषार्थ कर मानव जन्म को सार्थक करें।

क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला 5, रविवार, 4.9.2008 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

सुमेरसिंह बोथरा	ज्ञानेन्द्र बाफना	नवरतन डागा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

पी.एस. सुराणा	नवरतन भंसाली, आनन्द चौपड़ा	प्रेमचन्द जैन
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

डॉ. मंजुला बम्ब	मधु सुराणा	आशा गांग
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

कुशल गोटेवाला	बुधमल बोहरा, प्रमोद हीरावत	महेन्द्र सुराणा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

सुशीला बोहरा	सुरेश चोरडिया	राजेश कर्णावट
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

चंचलमल चोरडिया	मोहनकौर जैन
संयोजक	सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

विमला मेहता	धर्मेश चौपड़ा	सुभाष हुंण्डीवाल
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर

तत्त्व ज्ञान

नमोकार मंत्र का परिचय

आचार्यप्रवर श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु'

आचार्य श्री उमेश मुनि जी म.सा. 'अणु' ने सामायिक सूत्र पर विभिन्न द्वारों से थोकड़े की रचना की है। नमोकार मंत्र पर भी उन्होंने थोकड़े के रूप में ७ द्वारों से विचार किया है। उनकी 'अणुस्तोकसंग्रह' पुस्तक से यहाँ नमस्कार मंत्र पर सामग्री प्रस्तुत है। -सम्पादक

नमोक्कार मंत्र का विवरण-

१. नामद्वार, २. सूत्र-परिचय द्वार, ३. सूत्र-विभाग द्वार, ४. अर्थ द्वार, ५. हेतु द्वार, ६. फलद्वार, ७. कर्ता द्वार।

१. नामद्वार : इस सूत्र के अनेक नाम हैं। नमोक्कार सुत्त, परमेष्ठि मंत्र, महामंत्र, नवपद आदि.....

प्रश्न : इसका सुत्त(सूत्र) नाम सही है या मंत्र नाम सही है?

उत्तर- दोनों नाम सही हैं। जब नमोक्कार सामायिक-सूत्र के साथ बोला जाता है, तब यह सुत्त है और जब जाप किया जाता है, तब यह मंत्र है। ये दोनों नाम पुराने समय से चले आ रहे हैं। महामंत्र आदि नाम इस सूत्र की महिमा के सूचक हैं। परन्तु इस सूत्र के पीछे जो चमत्कार की महिमा है, वह धर्म का अंश नहीं है- धर्मक्रिया है।

इस सूत्र का गुणनिष्पन्न नाम ही अधिक प्रचलित है।

२. सूत्र-परिचय द्वार : यह सूत्र गद्य और पद्य दोनों में है। इसमें 8 विराम हैं। पद्य-प्राकृत की दृष्टि से सिलोग है, संस्कृत भाषा की दृष्टि से अनुष्टुप् छंद है। एक मान्यता के अनुसार इसमें गद्य पाठ नहीं है। उनके अनुसार पूर्व विभाग का आर्या छंद है, किंतु उसमें आर्या-छंद के लक्षण घटित नहीं होते हैं। लगता है नमोक्कार सुत्त को लय में बोलने के कारण पद्य-रचना मानने की मान्यता प्रचलित हुई हो।

३. सूत्र-विभाग द्वार : इसके 2 विभाग हैं- मूल सुत्त और चूलिका। कई

लोग मूल सुत्त को ही मान्य करते हैं, चूलिका को नहीं। मूल सुत्त के 5 अर्थाधिकार माने गये हैं। एक-एक पद का एक-एक अर्थाधिकार माना है। चूलिका गाथा में 3 अर्थाधिकार माने हैं। पूर्व के 2 चरणों के 2 अर्थाधिकार और बाद के 2 चरणों का एक अर्थाधिकार। इन अर्थाधिकारों की अपेक्षा से ही विराम अर्थात् संपदा मानी है। प्राचीन ग्रंथकारों ने मूल और चूलिका को मिलाकर उसे महाश्रुतस्कंध कहा है।

एक-एक पद को एक-एक अध्ययन के तुल्य माना है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार इसके 68 अक्षर हैं। दिगम्बर परम्परा में 2 मान्यताएँ हैं - 68 अक्षर की भी, 67 अक्षर की भी। जो 67 अक्षर मानते हैं, वे 'हवइ' की जगह 'होइ' बोलते हैं।

कुछ विचारक चूलिका गाथा को अर्वाचीन मानते हैं, इसे भद्रबाहु स्वामी की रचना बताते हैं।

४. अर्थ द्वार : पहले पद के अर्थ में बहुत विवाद है कुछ पहले पद में मात्र तीर्थंकर को लेते हैं, तो एक परम्परा सामान्य केवलियों को भी अर्हन्त पद में मानती है। हमारा मत दूसरी परम्परा का अनुसरण करता है। मूल सुत्त में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है। ये पाँचों पद आत्मा की विशुद्ध और विशुद्ध होती हुई दशा है। परम विशुद्ध दशा सिद्ध भगवान की है और विशुद्ध दशा अरिहंत भगवान की है। शेष 3 पदों की विशुद्ध होती हुई दशा है।

इसमें मुख्य रूप से 2 प्रकार की आत्माओं को ही नमस्कार किया गया है। सिद्ध आत्मा अर्थात् विशुद्ध आत्मा और संयत आत्मा। संयत में अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु चारों पद आ जाते हैं। यह नमस्कार जो जिस पर्याय में वर्तमान में विद्यमान है, उसी पर्याय की अपेक्षा से किया गया है। चूलिका गाथा में नमोक्कार का माहात्म्य बतलाया है। दोनों विभागों का अर्थ भिन्न है। सूत्रविभाग में परमेष्ठियों को नमस्कार है। वह भी साधक की क्रिया है। पर उस नमस्कार का संबंध परमेष्ठियों से है। चूलिका गाथा में नमस्कार की महिमा बतलायी है, उनसा संबंध साधक की क्रिया से है।

५. हेतु द्वार : नमोक्कार के अनेक हेतु हैं, परंतु यहाँ दो मुख्य हेतु समझना चाहिये। **प्रथम हेतु-** समस्त धर्मक्रियाओं के पूर्व मंगल-रूप में इस सूत्र का उच्चारण। इससे क्रियाओं का प्रारम्भ होता है। **दूसरा हेतु-** व्रत प्रत्याख्यान को

पारने के लिए इसका स्मरण किया जाता है। कायोत्सर्ग पारने के लिए तो सामायिक के मूल पाठ में ही विधान है। इसके उच्चारण के बिना कोई भी प्रत्याख्यान पारे नहीं जाते। इस प्रकार यह आदि मंगल भी है और अंत मंगल भी है। एक अन्य सामान्य हेतु है- सुप्रणिधान की सिद्धि के लिये स्मरण करना।

६ फल द्वार : नमोक्कार का फल सर्वपाप प्रणाशन है। पाप दो प्रकार के हैं बद्ध और क्रियमाण। क्रियमाण पाप 18 हैं। जितनी देर नमोक्कार-मंत्र गिनता है, उतनी देर के लिये जो पाप-क्रिया में प्रवृत्त नहीं होता है तो उससे अठारह पाप के द्वार बंद होते हैं, इसलिये संवर होता है।

बद्ध पाप आठ हैं - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, मोहनीय, अशुभ आयु, नीच गोत्र, अशुभ नाम, अंतराय। इनमें अशुभ आयु को छोड़कर शेष 7 कर्मों का इससे प्रणाशन हो सकता है और नमस्कार के स्मरणकर्ता के अशुभ आयु का बंध नहीं होता है, इस अपेक्षा से अशुभ आयु का भी प्रणाशक है।

७. कर्ता द्वार : इस सूत्र के रचयिता के विषय में इस युग में विवाद चल रहा है। दिगम्बर लोग इसे षट्खंडागम के रचयिता की रचना मानते हैं। परन्तु यह बात सही नहीं है। क्योंकि षट्खंडागम से दशवैकालिक सूत्र, भगवती सूत्र और सामायिक सूत्र प्राचीन हैं। उनमें स्पष्ट रूप से नमोक्कार का उल्लेख है और भगवतीसूत्र में तो पाँचों पद लिखित हैं।

प्राचीन परंपरा इस सूत्र को अनादि मानती है। क्योंकि परमेष्ठि अनादि काल से हैं और उन्हें नमस्कार करने वाले भी अनादिकाल से हैं इसलिये उनके नमस्कार का सूत्र भी अनादिकालीन है। हाँ, सूत्र रूप से प्रत्येक तीर्थंकर के गणधर इसे साधकों को प्रदान करते होंगे।

८. प्रश्न द्वार :

प्रश्न (१) पहले पद के कितने पाठान्तर है?

उत्तर : अरहंताणं, अरिहंताणं, अरूहंताणं - ये तीन पाठान्तर हैं। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि सही पाठ कौनसा है? लगता है किसी समय में अर्धमागधी भाषा बहुत बड़े लोक समुदाय के संपर्क की भाषा के रूप में रही हुई है। अतः उसमें उच्चारभेद भी रहा होगा। अतः लोक व्यवहार और व्याकरण की दृष्टि से तीनों ही रूप सिद्ध हैं। परंतु दो रूप विशेष प्रचलित हैं,

अरुहंताणं रूप प्रचलित नहीं है, उसमें भी 'नमो अरिहंताणं' रूप अधिक प्रसिद्धि में रहा, क्योंकि उस पद से अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं।

इसलिये निर्युक्ति की अपेक्षा यह रूप ज्यादा प्रचलित रहा। आज कोई 'नमो अरहंताणं' पद का विशेष आग्रह रखते हैं। परन्तु इस विषय में आचार्यप्रवर माधवमुनि जी म.सा. ने यह निर्णय दिया है कि तीनों ही रूपों का परमार्थ एक है। परन्तु हमने हमारे गुरुजन के मुख से 'नमो अरिहंताणं' सीखा है। इसलिए यही बोलना श्रेयस्कर है।

प्रश्न (२) क्या नमोक्कार मंत्र लौकिक फल की अपेक्षा से गिना जाता है?

उत्तर : यह तो गिननेवाले की इच्छा पर निर्भर है। विधान तो आत्मकल्याण के लिये ही जपने का है। परन्तु दुःखी लोग बहुत आतुर होते हैं, उन्हें किसी न किसी प्रकार का आलम्बन चाहिए, जो उन्हें इधर-उधर भटकने से रोक सके। इसलिये लौकिक दृष्टि से भी लोग नवकार मंत्र का स्मरण करते हैं।

नमोक्कार मंत्र की कथाएँ लौकिक फल की ही प्रतिपादक हैं। कई लोग ऐसा अनुभव करते हैं कि नमोक्कार मंत्र का स्मरण करने से हमारे कई कार्य-सिद्ध होते हैं और लोगों का आकर्षण भी लौकिक फलों की ओर ही अधिक रहता है।

लौकिक फल की आकांक्षा से गिनने वालों के लिये एक कथा में चेतावनी दी है-

एक ब्राह्मण ने जैन धर्म अंगीकार किया। उसके जाति-बंधु उसका तिरस्कार करने लगे। एक दिन शीत ऋतु में अलाव के आसपास बैठकर लोग ताप रहे थे। उस जैन ब्राह्मण की गोद में उसका छोटा बालक भी था। ब्राह्मण लोग वहाँ जैन धर्म की निंदा करने लगे। उस जैन ब्राह्मण ने प्रतिवाद किया। जोरदार विवाद हो गया। जैन ब्राह्मण को क्रोध आ गया। उसने क्रोध में अपने बच्चे को अग्नि में फेंकते हुए कहा- मेरे नवकार मंत्र में बल होगा, तो यह बच्चा नहीं जलेगा। योगानुयोग से अग्नि बुझ गयी। बच्चा बच गया। लोगों को आश्चर्य हुआ। कोई संत उस गांव में पधारे। सारी बातें कही। तब श्रमण ने कहा- "भाई! इस प्रकार धर्म को दाँव पर नहीं लगाना चाहिये। आसपास में कोई सम्यक्दृष्टि देव हो तो चमत्कार घटित होता है और कोई देव नहीं हो तो चमत्कार घटित नहीं होता है। धर्म तो

आत्मकल्याण के लिये है, चमत्कार के लिये नहीं। इसलिये लौकिक फल की आकांक्षा वालों को इस संकेत को समझ लेना चाहिये।

प्रश्न (३) नमोक्कार मंत्र में पाँच वर्ण किस अपेक्षा से है?

उत्तर : इन वर्णों की कल्पना में तीन कारण हो सकते हैं।

१. नवपद आराधना ओली, २. मंत्र-तंत्र युग का प्रभाव, ३. ग्रह शांति की आकांक्षा।

आगमों में न अरिहंत भगवान् का रंग बताया, न सिद्धों का। सिद्ध तो रूपातीत हैं। उनका क्या वर्ण बतायें? सभी अरिहंत सफेद नहीं होते हैं। ये रंग ध्यान करने की अपेक्षा से कल्पित हैं, ऐसा अनुमान है।

नवपद आराधना ओली का जब महत्त्व बढा, तब नवपद की आराधना की जाने लगी। उसमें आयंबिल पद के वर्ण के अनुसार नियत किये गये। पाँच पद का वर्ण सफेद- अरिहंत, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप। सिद्ध भगवान् का वर्ण लाल, आचार्य का वर्ण पीला, उपाध्याय का वर्ण हरा और साधु का वर्ण काला।

मंत्रो में अमुक-अमुक कार्य की सिद्धि के लिये अमुक-अमुक वर्ण का ध्यान किया जाता है और तंत्रो में भी रंगों का विशेष महत्त्व है।

संभवतः उसके प्रभाव से सिद्ध-चक्र यंत्र में भी रंगों की अवतारणा की गयी है।

ग्रहशांति की आकांक्षावाले लोगों को ग्रह पीडा की शांति के लिये ज्योतिषी अमुक-अमुक रंग के रत्नादि को धारण करने का उपाय बताते हैं। इसलिये ग्रहों के रंग भी माने गये हैं। इन ग्रहों के रंग के अनुरूप रंग का ध्यान और रत्नधारण किया जाता है। तीर्थंकर भगवान् पाँचों वर्ण के हैं। इसलिये लोगों ने अपने इष्टदेव का ध्यान ग्रहशांति के लिये करना प्रारम्भ किया। फिर परमेष्ठि मंत्र महामंत्र है, उसका स्मरण प्रायः प्रत्येक जैन करता है। इसलिये उनमें भी रंगों की अवतारणा की गयी होगी।

आज तो हर वार की आरतियाँ बनी हुई हैं।

प्रश्न (४) जप ५ पद का करना चाहिये या नवपद का?

उत्तर : इस विषय में दो परंपराएँ हैं। स्थानकवासी, दिगंबर और तेरापंथी ये 5 पद

को ही मंत्र भाग मानकर उनका ही जाप करते हैं। चूलिका गाथा को छोड़ देते हैं।

जबकि श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परंपरा में नवपद के जाप किये जाते हैं। वे 5 पद की माला गिनना कच्ची माला समझते हैं।

प्रश्न (५) क्या पाँच पद का जाप करने से दोष नहीं लगता है?

उत्तर : ऐसा कहीं विधान देखा नहीं कि नव ही पद एकसाथ गिनना चाहिये। तीर्थंकर भगवान् जब दीक्षा लेते हैं, तब मात्र एक पद 'नमो सिद्धाणं' ही बोलते हैं। उदयगिरि खंडगिरि के राजा खारवेल के शिलालेख पर दो ही पद उट्टंकित है- 'नमो अरहंताणं। नमो सिद्धाणं।'

नवपद-आराधना ओली में एक-एक पद की ही माला गिनी जाती है। इस प्रकार पाँच पद गिनने में किसी प्रकार का दोष नहीं है।

प्रश्न (६) णमो बोलना चाहिये या नमो ?

उत्तर : व्याकरण-शास्त्र की दृष्टि से दोनों ही पद शुद्ध हैं। अर्थ की दृष्टि से भी इससे अर्थभेद नहीं होता है। ध्वनि को महत्त्व देने वाले 'ण' को प्रधानता देते हैं। क्योंकि मंत्र शास्त्र कि दृष्टि से टवर्ग की 'ण' ध्वनि सशक्त मानी है। फिर आरंभ और अंत दोनों में णकार हो जाता है, तो ध्वनि की अपेक्षा से उस मंत्रपद का महत्त्व बढ जाता है। परंतु यह दृष्टि बाह्य है। आत्म-दृष्टि से इसका कुछ भी महत्त्व नहीं है। (प्राचीन अर्धमागधी में 'न' का प्रयोग अधिक होता रहा है, अतः 'नमो' भी शुद्ध है।)

SOME PHRASES

1. Don't judge each day by the harvest you reap but by the seeds you plant.
2. Great minds discuss ideas, average minds discuss events, small minds discuss people.
3. Two things always in life to be remembered, don't take any decision when you are angry, don't make any promise when you are happy.

-Meenu Surana, Surana Ki Badi Pol, Nagaur (Raj.)

शोधालेख

जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश-परम्परा विज्ञान

डॉ. सोहनराज तातेड़

लोक या ब्रह्माण्ड (Universe) मुख्यतया दो तत्त्वों-चेतन और जड़ से बना है। इन दोनों का अस्तित्व शाश्वत है। दोनों के पर्याय बदलते रहते हैं, इसी कारण सृष्टि में हर क्षण रूपान्तरण होता रहता है। जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार चेतना एवं जड़ का तादात्म्य अनादि अनन्त काल से है तथा वह तब तक बना रहेगा जब तक आत्मा पौद्गलिक कर्म-बंधनों का पूर्ण क्षय कर मुक्त अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेती।

जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार **'उपयोगलक्षणो जीवः'** अर्थात् जीव (आत्मा-चेतना) का लक्षण उपयोग है। ज्ञान-दर्शन को उपयोग कहते हैं। ज्ञान-दर्शन को आवरित करने वाले कर्म ज्ञानावरण एवं दर्शनावरण हैं। इन कर्मों का भी मूल मोहनीय कर्म है। मोह के ही रूप हैं- राग-द्वेष। राग-द्वेष से कर्म-बंध होता है। तत्त्वार्थसूत्र भाष्य में कहा गया है- **'बध्यते परतन्त्रीक्रियते आत्माऽनेनेति बन्धनम्'**। जिसके द्वारा आत्मा परतन्त्र कर दिया जाता है, वह बंधन (कर्म) है। जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार कर्मबद्ध आत्मा ही नये कर्मों का संचय करती है, मुक्त आत्मा कर्म संचय नहीं कर सकती, क्योंकि उनके कर्मबीज या राग-द्वेष पूर्ण नष्ट हो चुके हैं। जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार आत्मा कर्म का उपादान है। आत्मा कर्म की कर्ता तथा भोक्ता है। उपादान तभी व्यक्त होता है जब उसे निमित्त मिले। कर्मों को भोगने के लिए निमित्त बनते हैं-योग (मन-वचन-काया), वातावरण तथा परिस्थिति। बिना निमित्त के कर्म आत्म-प्रदेशों में ही भोग लिए जाते हैं। कषाय (राग-द्वेष) योगों की चंचलता बढाते हैं। योग चंचल होने पर कषाय को उत्तेजित करते हैं तथा कर्मयोग्य पुद्गलों का बंध होता है। इस प्रकार एक चक्र है।[1]

शरीर माध्यम बनता है चेतना की अभिव्यक्ति का एवं कृत कर्मों के भोगने का। स्थूल शरीर का घटक है **'जीन'**। सूक्ष्म शरीर का घटक है **'कर्म'**। जैसा **'जीन'** होता है, गुणसूत्र होता है, व्यक्ति वैसा ही बन जाता है। यह जीन सभी

संस्कार सूत्रों तथा सारे विभेदों का मूल कारण है। वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic Science) की भाषा में कहा जाता है कि एक-एक जीन पर साठ-साठ लाख आदेश लिखे हुए होते हैं तो कर्मशास्त्र की भाषा में कहा जा सकता है कि कर्म-स्कन्ध में अनन्त आदेश लिखे हुए होते हैं। अभी तक वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic Science) **'जीन'** तक ही पहुँच पाया है और यह **'जीन'** स्थूल शरीर का ही घटक है, किन्तु कर्म सूक्ष्मशरीर का घटक है। इस स्थूल शरीर के भीतर तैजस शरीर है, विद्युत शरीर है। वह सूक्ष्म शरीर है। कर्मशरीर सूक्ष्मतम है। इसके एक-एक स्कन्ध पर अनन्त-अनन्त लिपियाँ लिखी हुई हैं। हमारे पुरुषार्थ का, अच्छाइयों का, बुराइयों का, न्यूनताओं और विशेषताओं का सारा लेखा-जोखा और सारी प्रतिक्रियाएँ कर्म शरीर में अंकित रहती हैं। वहाँ से जैसे स्पंदन आते हैं, आदमी वैसा ही व्यवहार करने लग जाता है।[२]

प्राण से तात्पर्य जीवन-शक्ति है। जिसके संयोग से यह जीव जीवन अवस्था को प्राप्त हो और वियोग से मरण अवस्था को प्राप्त हो उसको प्राण कहते हैं। पाँचों इन्द्रियों की जो ज्ञान करने की शक्ति है उसे कहते हैं- पाँच इन्द्रिय प्राण। मनन करने, बोलने और शारीरिक क्रिया करने की शक्ति को कहते हैं- मनोबल, वचनबल और कायबल। बल और प्राण एक ही हैं। पुद्गलों को श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करने और छोड़ने की शक्ति-श्वासोच्छ्वास प्राण कहलाती है। इस प्रकार अमुक भव में अमुक काल तक जीवित रहने की शक्ति को कहते हैं- **आयुष्य प्राण।**

प्राण का संबंध पर्याप्ति के साथ है। प्राण जीव की शक्ति है और पर्याप्ति जीव द्वारा ग्रहण किए हुए पुद्गलों की शक्ति है। पर्याप्ति कारण है और प्राण कार्य है। जीव की मन, वचन और काया से सम्बन्ध रखने वाली कोई भी ऐसी प्रवृत्ति नहीं, जो पुद्गल द्रव्य की सहायता के बिना होती है। पाँच इन्द्रिय प्राणों का कारण है- इन्द्रिय पर्याप्ति। मनोबल, वचनबल और कायबल का क्रमशः कारण है- मनः पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति और शरीर पर्याप्ति। श्वासोच्छ्वास प्राण का कारण है- श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति। आयुष्यप्राण का कारण है आहार पर्याप्ति। क्योंकि आहार पर्याप्ति के आधार पर ही आयुष्यप्राण टिक सकता है। जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार इन दस प्राणों में मुख्य प्राण है-आयुष्यप्राण। शरीर की समस्त क्रियाएँ और

समस्त अंगों का कार्य संचालन तभी तक संभव है जब तक आयुष्यप्राण क्रियाशील है। इसके समाप्त होते ही समस्त क्रियाएँ सम्पूर्ण रूप से बन्द हो जाती हैं जिसे हम मृत्यु की संज्ञा देते हैं।[३]

जब आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है, तब नये जन्म के प्रारम्भ में वह जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार पर्याप्ति नाम-कर्म की सहायता से भावी जीवन यात्रा के निर्वाह के लिए एक साथ आवश्यक पौद्गलिक सामग्री का निर्माण करती है। इसे या इससे उत्पन्न होने वाली पौद्गलिक शक्ति को पर्याप्ति कहते हैं। पर्याप्तियों का क्रम इस प्रकार है- आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मनः पर्याप्ति। कुल छः पर्याप्तियाँ हैं। छहों ही पर्याप्तियों का आरम्भ एक काल में होता है, परन्तु उनकी पूर्णता क्रमशः होती है, इसलिए इस क्रम का नियम रखा गया है। आहार पर्याप्ति को पूर्ण होने में एक समय और शरीर पर्याप्ति आदि पाँचों में से प्रत्येक पर्याप्ति को अन्तर्मुहूर्त लगता है। आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा, मनः पर्याप्तियों के माध्यम से जीव आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा एवं मन के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करते हैं। उन्हें तदनुरूप परिणत करते हैं और असार पुद्गलों को छोड़ देते हैं।[४]

वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic Science) के अन्तर्गत 'जीन' को जैन कर्म-सिद्धान्त के अन्तर्गत शरीर पर्याप्ति के रूप में माना जा सकता है। पर्याप्ति का अर्थ जीवनोपयोगी पुद्गलों की शक्ति के निर्माण की पूर्णता है। सबसे कम विकसित प्राणी में कम से कम स्पर्शनेन्द्रिय प्राण, कायबल, श्वासोच्छ्वासप्राण आयुष्य प्राण कुल चार प्राण तथा आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति और श्वासोच्छ्वास ये चार पर्याप्तियाँ अवश्य होती हैं। इस प्रकार जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार प्राणों तथा पर्याप्तियों के योग से प्राणी का जीवन क्रम चलता है। कोशिकाओं में जो वृद्धि-विभाजन विशिष्टता (Specialisation), भिन्नता (Differentiation) आदि क्रिया होती है, वह सब इन पर्याप्तियों का ही हिस्सा है। इन पर्याप्तियों का नियंत्रण कर्मों द्वारा होता है। कोशिकाओं की मृत्यु होती है तथा अनेक कोशिकाओं द्वारा निर्मित बहुकोशीय प्राणी की भी मृत्यु हो जाती है। यह मृत्यु आयुष्य कर्म के हिसाब से होती है। जितना जिसका आयुष्य होगा, वह उतने

वर्ष तक जीवित रहेगा।

व्यक्ति के व्यवहार, आचार, विचार और प्रत्येक क्रिया कलाप का अंकन व्यक्ति के भीतर निरन्तर होता रहता है। ऐसा आज विज्ञान की अनेक शाखाएँ भी मानने लगी हैं। वही अंकन कालांतर में उस व्यक्ति को प्रभावित करता है। भारतीय दर्शनों ने इस अंकन प्रणाली की कर्म-सिद्धान्त के रूप में विस्तृत विवेचना की है। आधुनिक विज्ञान उस अंकन की विभिन्न पद्धतियों और संस्थानों की चर्चा को आधार बनाता है। हमारा मस्तिष्क भी हमारे क्रिया-कलापों को रिकार्ड करता है। हमारी प्रतिरोधात्मक कोशिकाएँ भी उनका अंकन करती हैं और अंततः उन सभी अंकनों का आधार बनता है संस्कार सूत्र 'जीन'। इन दोनों के स्वतंत्र अध्ययन से जहाँ दोनों को समझने में सुविधा होगी वहीं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समस्याओं को सुलझाने में मार्ग दर्शन मिलेगा।

कर्मसिद्धान्त अति सूक्ष्म है, बुद्धि से परे का सिद्धान्त है। वंश-परम्परा विज्ञान ने कर्म-सिद्धान्त को समझने में सुविधा प्रदान की है। **'जीन'** व्यक्ति के आनुवांशिक गुणों के संवाहक हैं। प्रत्येक विशिष्ट गुण के लिए विशिष्ट प्रकार का जीन होता है। ये आनुवांशिकता के नियम कर्मवाद के संवादी नियम हैं। यह स्थूल शरीर सूक्ष्म कोशिकाओं (Biological Cells) से निर्मित है। मानव शरीर में लगभग साठ-सत्तर खरब कोशिकाएँ हैं। इन कोशिकाओं में गुणसूत्र होते हैं, जिन्हें क्रोमोसोम (Chromosomes) कहते हैं। प्रत्येक गुणसूत्र दस हजार जीन से बनता है। जीन सारे संस्कारसूत्र हैं। मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका में छियालीस क्रोमोसोम होते हैं। इन्हें वंश सूत्र की संज्ञा भी दी गई है। जीवविज्ञान के अनुसार प्रत्येक कोशिका या बीजकोष (Germ Plasm) में 23 पिता के तथा 23 माता के वंश सूत्रों (Chromosomes) का समागम होता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इनके संयोग से 167,77,216 प्रकार की विभिन्न संभावनाएँ अपेक्षित हो सकती हैं।[५] यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो वातावरण, परिस्थिति, पर्यावरण, भौगोलिकता, आनुवंशिकता, जीन और शरीर की ग्रन्थियों के विभिन्न स्रावों द्वारा रासायनिक परिवर्तन ये सभी कर्म सिद्धान्त के संवादी सूत्र हैं।

जीन हमारे स्थूल शरीर का अवयव है और कर्म हमारे सूक्ष्मतम शरीर का अवयव है। दोनों शरीर से जुड़े हुए हैं, एक स्थूल शरीर से और दूसरा सूक्ष्म शरीर से।

यह सूक्ष्म शरीर कर्म शरीर है। मृत्यु का संबंध केवल स्थूल शरीर से है। सूक्ष्म शरीर मरणोपरान्त भी विद्यमान रहता है। जैनदर्शन में जिसे तैजस, कार्मण शरीर कहा गया है, सांख्य दर्शन में उसे लिंग शरीर कहा जाता है। संसारावस्था में ये निरन्तर साथ रहते हैं। इस चर्चा को वैज्ञानिक संदर्भ में इस प्रकार कहा जा सकता है। वैज्ञानिक पदार्थ की चार अवस्थाएँ मानते हैं: - ठोस, द्रव्य, गैस एवं प्लाज्मा। एक अवस्था और खोजी गई जिसे प्रोटोप्लाज्मा या जैवप्लाज्मा कहा जाता है। अध्यात्म-योग की भाषा में प्रोटोप्लाज्मा हमारी प्राण शक्ति है, जो हमारे अस्तित्व का सटीक प्रमाण है। वैज्ञानिकों का यह कहना है कि प्रोटोप्लाज्मा अमर तत्त्व है। मृत्यु के पश्चात् भी यह रसायन, जो हमारी कोशिकाओं में रहता है, शरीर से अलग होकर वायुमंडल में बिखर जाता है। वही प्रोटोप्लाज्मा निषेचन की क्रिया के समय 'जीन्स' में शिशु के साथ पुनः चला जाता है।[६]

वंश-परम्परा विज्ञान की भाषा में पृथ्वी में भी कुछ अति सूक्ष्म जीव होते हैं, जिन्हें विषाणु (Virus) कहते हैं। ये विषाणु जैसे ही किसी जीवित (Living media) माध्यम के सम्पर्क में आते हैं तो इनकी असंख्यात गुना (Infinite) वृद्धि होती है। इनका शरीर एक कोशिका से बनता है, जिसे बैक्टीरिया कहते हैं। उसमें एक केन्द्रक होता है। केन्द्रक में DNA होता है। उसमें वंश-वृद्धि के गुण होते हैं। इसी कारण यह एककोशीय जीव चयापचय की क्रिया करता है। वंश-वृद्धि का घटक तत्त्व DNA है, जो एककोशीय जीव में भी पाया जाता है।[७] (क्रमशः)

संदर्भ ग्रन्थ-

१. तत्त्वार्थ सूत्र - वाचक उमास्वाति, व्याख्या- पं. सुखलाल संघवी
२. कर्मवाद - युवाचार्य (वर्तमान आचार्य) महाप्रज्ञ, पृ.१३७
३. जीव-अजीव - आचार्य महाप्रज्ञ, पृ.२२
४. वही, पृ. १८
५. मनोविज्ञान और शिक्षा, पृ. १६१
६. आचारांग प्रथम अध्ययन : एक अनुशीलन, पृ. १०
७. वही, पृ. १४

-सलाहकार, जैन विश्वभारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं (राजस्थान)

शोधालेख

जैन कथा-साहित्य : एक समीक्षात्मक सर्वेक्षण

प्रो. सागरमल जैन

कथा-साहित्य का उद्भव उतना ही प्राचीन है, जितना इस पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व। चाहे साहित्यिक दृष्टि से कथाओं की रचना कुछ परवर्ती हो, किन्तु कथा-कथन की परम्परा तो बहुत पुरानी है। कथा-साहित्य के लिए अंग्रेजी में Narrative literature शब्द प्रचलित है, अतः आख्यान या रूपक के रूप में जो भी कहा जाता है या लिखा जाता है, वह सभी कथा के अन्तर्गत आता है। सामान्य अर्थ में कथा वह है जो कही जाती है। किन्तु जब हम कथा-साहित्य की बात करते हैं, तो उसका तात्पर्य है किसी व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में कथित या लिखित रूप में जो भी हमारे पास है, चाहे वह किसी भी भाषा में हो, कथा के अन्तर्गत आता है। यह सत्य है कि पूर्व में कथाओं को कहने की परम्परा मौखिक रूप में रही है, बाद में उन्हें लिखित रूप दिया गया। दूसरे शब्दों में पूर्व में कथाएँ श्रुत परम्परा से चलती रही हैं, बाद में उन्हें लिपिबद्ध किया गया है। यह बात जैन कथा साहित्य के सन्दर्भ में भी सत्य है। जैन परम्परा में भी कथाएँ पहले अनुश्रुति के रूप में ही चलती रही हैं और यही कारण है कि लौकिक परम्पराओं के आधार पर उनमें समय-समय पर संक्षेपण, विस्तारण, परिशोधन, परिवर्तन एवं सम्मिश्रण होता रहा है। उनका स्वरूप तो उस समय स्थिर हुआ होगा, जब उन्हें लिखित स्वरूप प्रदान कर पुस्तकारूढ़ किया गया होगा।

मौखिक परम्परा के रूप में इन कथाओं ने समग्र भूमण्डल की यात्राएँ की हैं और उनमें विभिन्न धर्मों एवं सामाजिक संस्कृतियों के माध्यम से आंशिक परिवर्तन और परिवर्धन भी हुआ है। विभिन्न देशों में प्रचलित कथाओं में भी आंशिक साम्य और आंशिक वैषम्य देखा जाता है, हितोपदेश और ईसप की कथाएँ इसका प्रमाण है। जैन कथाओं में भी इन लोक-कथाओं के अनेक आख्यान सम्मिलित हो गये हैं, जैसे-शेख चिल्ली की कथा। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि इन कथाओं के पात्र देव, मनुष्य और पशु-पक्षी सभी रहे हैं। जहाँ तक जैन कथाओं का प्रश्न है उनके भी मुख्य पात्र देव, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी देखे जाते हैं। जैन कथाओं में जैन लेखकों के

द्वारा तो देवों एवं मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षी ही नहीं, वृक्षों और फूलों को भी रूपक बनाकर प्रस्तुत किया जाता रहा है। आचारांग एवं ज्ञाताधर्मकथा में कछुए की रूपक कथा के साथ-साथ सूत्रकृतांग में कमल को भी रूपक बनाकर कथा वर्णित है। लोक-परम्परा में प्रेमाख्यान के रूप में हिन्दी में तोता-मैना की कहानियाँ आज भी प्रचलित हैं, किन्तु ऐसे प्रेमाख्यान जैन परम्परा में नहीं हैं, उसमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, फल-फूल आदि के रूपक भी तप-संयम की प्रेरणा के हेतु ही हैं।

जैन-कथा साहित्य का सामान्य स्वरूप

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि जब भी हम जैन कथा-साहित्य की बात करते हैं तो वह बहु-आयामी और व्यापक है। रूपक, आख्यानक, संवाद, लघुकथाएँ, एकांकी, नाटक, खण्ड-काव्य, चरितकाव्य और महाकाव्य से लेकर वर्तमान कालीन उपन्यास शैली तक की सभी कथा-साहित्य की विधाएँ इसके अन्तर्गत आ जाती हैं। आज जब हम जैन कथा-साहित्य की बात करते हैं, तो जैन परम्परा में लिखित इन सभी विधाओं का साहित्य इसके अन्तर्गत आता है। अतः जैन कथा-साहित्य बहुविध और बहु-आयामी है।

पुनः यह कथा-साहित्य भी गद्य, पद्य और गद्य-पद्य मिश्रित अर्थात् चम्पू इन तीनों रूपों में मिलता है। मात्र इतना ही नहीं यह भी विविध भाषाओं और विविध कालों में लिखा जाता रहा है।

जैन साहित्य में कथाओं के विविध प्रकार

जैन आचार्यों ने विविध प्रकार की कथाएँ तो लिखीं, फिर भी उनकी दृष्टि विकथा से बचने की ही रही है। दशवैकालिक सूत्र में कथाओं के तीन वर्ग बताये गये हैं-अकथा, कथा और विकथा। उद्देश्यविहीन, काल्पनिक और शुभाशुभ की प्रेरणा देने से भिन्न उद्देश्यवाली कथा को अकथा कहा गया है, जबकि कथा नैतिक उद्देश्य से युक्त होती है और विकथा वह है, जो विषय-वासना को उत्तेजित करे। विकथा के अन्तर्गत जैन आचार्यों ने राजकथा, भत्तकथा, स्त्रीकथा और देशकथा को लिया है। कहीं-कहीं राजकथा के स्थान पर अर्थकथा और स्त्रीकथा के स्थान पर कामकथा का भी उल्लेख मिलता है।

दशवैकालिक में अर्थकथा, कामकथा, धर्मकथा और मिश्रकथा-ऐसा भी एक चतुर्विध वर्गीकरण मिलता है और वहाँ इन कथाओं के लक्षण भी बताये गये हैं। यह वर्गीकरण कथा के वर्ण्य विषय पर आधारित है। पुनः दशवैकालिक में इन चारों

प्रकार की कथाओं में से धर्मकथा के चार भेद किये गये हैं। धर्मकथा के वे चार भेद हैं- आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेगिनी और निर्वेदनी। टीका के अनुसार पापमार्ग के दोषों का उद्भावन करके धर्ममार्ग या नैतिक आचरण की प्रेरणा देना आक्षेपणी कथा है। अधर्म के दोषों को दिखाकर उनका खण्डन करना विक्षेपणी कथा है। वैराग्यवर्धक कथा संवेगिनी कथा है। एक अन्य अपेक्षा से दूसरों के दुःखों के प्रति करुणाभाव उत्पन्न करने वाली कथा संवेगिनी कथा है, जबकि जिस कथा से समाधिभाव और आत्मशांति की उपलब्धि हो या जो वासना और इच्छाजन्य विकल्पों को दूर कर निर्विकल्पदशा में ले जाये वह निर्वेदनी कथा है। ये व्याख्याएँ मैंने मेरी अपनी दृष्टि के आधार पर की है। पुनः धर्मकथा के इन चारों विभागों के भी चार-चार उपभेद किये गये हैं, किन्तु विस्तार भय से यहाँ उस चर्चा में जाना उचित नहीं होगा। यहाँ मात्र नाम निर्देश कर देना ही पर्याप्त होगा।

(अ) आक्षेपणी कथा के चार भेद हैं- 1.आचार, 2.व्यवहार 3.प्रज्ञप्ति और 4.दृष्टिवाद

(ब) विक्षेपणी कथा के चार भेद हैं - 1. स्वमत की स्थापना कर, फिर उसके अनुरूप परमत का कथन करना 2.पहले परमत का निरूपण कर, फिर उसके आधार पर स्वमत का पोषण करना 3. मिथ्यात्व के स्वरूप की समीक्षा कर फिर सम्यक्त्व का स्वरूप बताना और 4. सम्यक्त्व का स्वरूप बताकर फिर मिथ्यात्व का स्वरूप बताना।

(स) संवेगिनी कथा के चार भेद हैं - 1. शरीर की अशुचिता, 2. संसार की दुःखमयता और 3. संयोगों का वियोग अवश्यम्भावी है- ऐसा चित्रण कर 4. वैराग्य की ओर उन्मुख करना।

(द) निर्वेदनी कथा का स्वरूप है - आत्मा के अनन्त चतुष्टय का वर्णन कर व्यक्ति में ज्ञाता-द्रष्टाभाव या साक्षीभाव उत्पन्न करना।

विभिन्न भाषाओं में रचित जैन कथा-साहित्य

भाषाओं की दृष्टि से विचार करें तो जैन कथा-साहित्य प्राकृत, संस्कृत, कन्नड, तमिल,अपभ्रंश, मरुगुर्जर, हिन्दी, मराठी, गुजराती और क्वचित् रूप में बंगला में भी लिखा गया है। मात्र यही नहीं प्राकृत और अपभ्रंश में भी अपने विविध रूपों में वह मिलता है। उदाहरण के रूप में प्राकृतों के भी अनेक रूपों यथा अर्धमागधी, जैन शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि में जैन कथा साहित्य लिखा गया है और

बहुत कुछ रूप में आज भी उपलब्ध है। गुणाढ्य ने अपनी बृहत्कथा पैशाची प्राकृत में लिखी थी, यद्यपि दुर्भाग्य से आज उपलब्ध नहीं है। आज जो जैन कथा-साहित्य विभिन्न प्राकृत भाषाओं में उपलब्ध है उनमें सबसे कम शौरसेनी में मिलता है, उसकी अपेक्षा अर्धमागधी या महाराष्ट्री प्रभावित अर्धमागधी में अधिक है, क्योंकि उपलब्ध आगम और प्राचीन आगमिक व्याख्याएँ इसी भाषा में लिखित हैं। महाराष्ट्री प्राकृत में जैन कथा साहित्य उन दोनों भाषाओं की अपेक्षा भी विपुल मात्रा में प्राप्त होता है और इसके लेखन में श्वेताम्बर जैनाचार्यों एवं मुनियों का योगदान अधिक है। दिगम्बर आचार्यों की रुचि अध्यात्म और कर्म-साहित्य में अधिक रही, फलतः भगवती आराधना में संलेखना के साधक कुछ व्यक्तियों के नाम निर्देश को छोड़कर उसमें अधिक कुछ नहीं मिलता है। कुछ जैन नाटकों में शौरसेनी का प्रयोग अवश्य देखा जाता है। इस परम्परा में हरिषेण का बृहत्कथाकोश ही एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त आराधना कथाकोश भी है।

अर्धमागधी और अर्धमागधी-महाराष्ट्री के मिश्रित रूप वाले आगमों और आगमिक व्याख्याओं में जैन कथाओं की विपुलता है, किन्तु उनकी ये कथाएँ मूलतः चरित्र-चित्रण रूप तथा उपदेशात्मक ही हैं, साथ ही वे नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने की दृष्टि से लिखी गई हैं। आगमिक व्याख्याओं में निर्युक्ति साहित्य में मात्र कथा का नाम-निर्देश या कथा-नायक के नाम का निर्देश ही मिलता है। इस दृष्टि से निर्युक्तियों की स्थिति भगवती आराधना के समान ही है, जिनमें हमें कथा निर्देश तो मिलते हैं, किन्तु कथाएँ नहीं हैं। कथाओं का विस्तृत रूप भाष्यों की अपेक्षा भी चूर्णि या टीका साहित्य में ही अधिक मिलता है। चूर्णियाँ जैन कथाओं का भण्डार कही जा सकती हैं। चूर्णि साहित्य की कथाएँ उपदेशात्मक तो हैं ही, किन्तु वे आचार-नियमों के उत्सर्ग और अपवाद की स्थितियों को स्पष्ट करने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। किन परिस्थितियों में कौन आचरणीय नियम अनाचरणीय बन जाता है, इसका स्पष्टीकरण चूर्णि की कथाओं में ही मिलता है। इसी प्रकार विभिन्न परिस्थितियों में किस अपराध का क्या प्रायश्चित्त होगा, इसकी भी सम्यक् समझ चूर्णियों के कथानकों से ही मिलती है। इस प्रकार चूर्णिगत कथाएँ जैन आचार-शास्त्र की समस्याओं के निराकरण में दिशा-निर्देशक हैं।

जहाँ तक महाराष्ट्री प्राकृत के कथा-साहित्य का प्रश्न है, यह मुख्यतः पद्यात्मक है और इसकी प्रधान विधा खण्डकाव्य, चरितकाव्य और महाकाव्य है।

यद्यपि इसमें धूर्ताख्यान जैसे कथापरक एवं गद्यात्मक ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं तथापि इस भाषा में सर्वाधिक कथा-साहित्य लिखा गया है और अधिकांशतः यह आज उपलब्ध भी है।

प्राकृतों के पश्चात् जैन कथा-साहित्य के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ संस्कृत भाषा में भी उपलब्ध होते हैं। दिगम्बर परम्परा के अनेक पुराण, श्वेताम्बर परम्परा में हेमचन्द्र का त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि अनेक चरित्रकाव्य संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त जैन नाटक और दूतकाव्य भी संस्कृत भाषा में रचित हैं। दिगम्बर परम्परा में वरांगचरित्र आदि कुछ चरित्रकाव्य भी संस्कृत में रचित हैं। ज्ञातव्य है कि आगमों पर वृत्तियाँ एवं टीकाएँ भी संस्कृत में लिखी गई हैं। इनके अन्तर्गत भी अनेक कथाएँ संकलित हैं। यद्यपि इनमें अधिकाशं कथाएँ वही होती हैं जो प्राकृत आगमिक व्याख्याओं में संगृहीत हैं तो फिर भी ये कथाएँ चाहे अपने वर्ण्य विषय की अपेक्षा से समान हों, किन्तु इनके प्रस्तुतीकरण की शैली तो विशिष्ट ही है। उस पर उस युग के संस्कृत लेखकों की शैली का प्रभाव देखा जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रबंध ग्रन्थ भी संस्कृत में लिखित हैं।

संस्कृत के पश्चात् जैन आचार्यों का कथा-साहित्य मुख्यतः अपभ्रंश और उसके विभिन्न रूपों में मिलता है, किन्तु यह ज्ञातव्य है कि अपभ्रंश में भी मुख्यतः चरितकाव्य ही लिखे गये हैं। स्वयम्भू आदि अनेक लेखकों ने अपभ्रंश में चरितकाव्य लिखे हैं - जैसे पउमचरिउ आदि।

भाषाओं की अपेक्षा से अपभ्रंश के पश्चात् जैनाचार्यों ने मुख्यतः मरुगुर्जर भाषा को अपनाया। कथासाहित्य की दृष्टि से इसमें पर्व कथाएँ एवं चरितनायकों के गुणों को वर्णित करने वाली छोटी-बड़ी अनेक रचनाएँ मिलती हैं, विशेष रूप से चरितकाव्य और तीर्थमालाएँ मरुगुर्जर में ही लिखी गई हैं। तीर्थमालाएँ तीर्थों सम्बन्धी कथाओं पर ही विशेष बल देती हैं। चरित,चौपाई, ढाल आदि विशिष्ट व्यक्तियों के चरित्र पर आधारित होती हैं और वे गेय रूप में होती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें 'रासो' साहित्य भी लिखा गया है जो अर्ध ऐतिहासिक कथाओं का प्रमुख आधार माना जा सकता है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी, गुजराती, मराठी और बंगला में भी जैन कथा-साहित्य लिखा गया है। महेन्द्रमुनि (प्रथम),उपाध्याय अमरमुनिजी एवं उपाध्याय पुष्करमुनि जी ने हिन्दी भाषा में अनेक कथाएँ लिखी हैं। इसमें

महेन्द्रमुनिजी ने लगभग 25 भागों में, अमरमुनिजी ने 5 भागों में और उपाध्याय पुष्करमुनि जी ने 140 भागों में जैन कथाएँ लिखी हैं। एक भाग में एक से अधिक कथाएँ भी वर्णित हैं। ये सभी कथाएँ कथावस्तु और नायकों की अपेक्षा से तो पुराने कथानकों पर आधारित हैं, मात्र प्रस्तुतीकरण की शैली और भाषा में अन्तर है। इसके अतिरिक्त उपाध्याय केवल मुनि जी और कुछ अन्य लेखकों ने अनेक जैन उपन्यास भी लिखे हैं। जहाँ तक मेरी जानकारी है वर्तमान में पाँच सौ से अधिक जैन कथाग्रन्थ हिन्दी में उपलब्ध हैं और इनमें भी कथाओं की संख्या तो सहस्राधिक होगी।

हिन्दी के अतिरिक्त जैन कथा-साहित्य गुजराती भाषा में भी उपलब्ध है, विशेष रूप से आधुनिक काल के कुछ श्वेताम्बर आचार्यों और अन्य लेखकों ने गुजराती भाषा में अनेक जैन कथाएँ एवं नवलकथाएँ लिखी हैं, यद्यपि इस सम्बन्ध में मुझे विशेष जानकारी तो नहीं है फिर भी जो छुट-पुट जानकारी डॉ. जितेन्द्र बी.शाह से मिली है, उसके आधार पर इतना तो कहा जा सकता है कि गुजराती भाषा में जैन कथाओं पर लगभग तीन सौ से अधिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। गुजराती कथा लेखकों में रतिलाल देसाई, चुन्नीलाल शाह, बेचरदास दोशी, मोहनलाल धामी, विमलकुमार धामी, कुमारपाल देसाई, धीरजलाल शाह तथा आचार्य भद्रगुप्तसूरि, भुवनभानुसूरि, शीलचन्द्रसूरि, प्रद्युम्नसूरि, रत्नसुंदरसूरि, चन्द्रशेखरसूरि आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही दिगम्बर परम्परा में भी कुछ कथाग्रन्थ हिन्दी एवं मराठी में लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त गणेशजी ललवानी ने बंगला में भी कुछ जैन कथाएँ लिखी हैं।

जहाँ तक दक्षिण भारतीय भाषाओं का प्रश्न है तमिल, कन्नड में अनेक जैन कथा ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनमें तमिल ग्रन्थों में जीवकचिन्तामणि, श्री पुराणम् आदि प्रमुख हैं। इसके साथ कन्नड में भी कुछ जैन कथाग्रन्थ हैं। इनमें 'आराधनाकथै' नामक एक ग्रन्थ है, जो आराधनाकथाकोष पर आधारित है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन कथा साहित्य बहुआयामी होने के साथ-साथ विविध भाषाओं में भी रचित है। तमिल एवं कन्नड़ के साथ-साथ परवर्तीकाल में तेलुगु, मराठी आदि में भी जैन ग्रन्थ लिखे गये हैं। (क्रमशः)

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.)

प्रेरक विचार

सद्गुणों की महक

प्राणिमित्र नितेश नागोरा जैन

1. चाहे हम कितना ही धन-वैभव, व्यापार-कारोबार फैला लें, किन्तु एक दिन सबकुछ यहीं छोड़कर जाना है। यह सारा खेल तभी तक है जब तक सांसें चल रही हैं और हमारी आँख खुली है, ये थमी कि सबकुछ थम जायेगा। ऐसे में फिर पल-पल, क्षण-क्षण, हाय-हाय, और-और की कामना एवं असीमित तथा अनन्त इच्छाओं की भूल-भूलैया में भटकन क्यों?
2. हम सभी अपने अंत का विचार करें तथा जो एक दिन छोड़ना ही है उसे अधिक मजबूती से पकड़ने की कोशिश नहीं करें। क्योंकि "जो मेरा है वह जाता नहीं, जो जाता है वह मेरा नहीं।" इस प्रकार का चिंतन ही हमें सुखी बना सकता है।
3. मैं नोट छापने की मशीन, बंधुआ मजदूर नहीं हूँ। मुझे संतोष, निर्लोभता एवं सादगी अपनाकर अपना आत्मिक सुख बढ़ाना है, क्योंकि आत्मिक आनंद एवं सच्चा सुख साधनों में नहीं साधना में है।
4. मुझे अपने शरीर की तरह, अपनी आत्मा के प्रति भी जागृति एवं लगाव रखना है। मेरी आत्मा दुर्गुणों से गंदी-मैली न हो जाये। मुझे अपने जीवन को सद्गुणों की महक से महकना है।
5. मुझे मानव जीवन की सार्थकता के लिए हर संभव प्रयास करना है। सहयोग, उदारता, आपसी प्रेम, सौहार्द और गुणग्राहकता के सद्गुण मुझे प्रतिदिन बढ़ाने हैं और अपने जीवन के निर्वहन के साथ जीवन का निर्माण भी करना है। अन्ततः निवेदन यही है कि-

मरते-तड़फते प्राणी को प्राण दीजिए,
'स्व' के साथ पर का भी कल्याण कीजिए।
पेट और पेटी भरकर तो, खप गये कितने ही,
जीवन के निर्वहन के साथ जीवन का निर्माण कीजिए।।

- कर सलाहकार, 175 जैन हाउस, भवानीमंडी (राज.)

चिन्तन

सन्त-दर्शनः क्यों एवं कैसे?

श्री चाँदमल बाबेल

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूताः हि साधवः- साधु तीर्थ रूप होते हैं, जिनके दर्शन करने से पुण्य रूपी फल की प्राप्ति होती है। संतों का क्षणमात्र का सत्संग समुद्र तिरने के लिए नौका तुल्य है। वर्तमान विज्ञान की मान्यता है कि शरीर और मन से सूक्ष्म तरंगें निकलती हैं, जिनका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता है। साधु-संतों के शरीर के शान्त परमाणु सम्पर्क में आने वालों के मन को शान्ति प्रदान करते हैं। उनकी ध्वनि की तरंगें सद्भावना उत्पन्न करने वाली होती हैं। उनके स्पर्श से वायु की लहरें भी वातावरण को आनन्दमयी बनाती हैं तथा प्रसन्नता प्रदान करती हैं। इस प्रकार सम्पर्क में आए प्राणियों के दोषों का विसर्जन होता है। सन्तों का सत्संग व्यक्ति के विकारों को हटाता एवं मिटाता है, अज्ञान का अपहरण करता है तथा सद्गुणों का विकास करता है। सन्त-दर्शन ताप को हरता है एवं संतोष उत्पन्न करता है। इससे शान्ति का वातावरण बनता है।

आज विश्व में या देश में जैसा भी यत्किंचित् शान्ति का वातावरण है, उसका एक प्रमुख कारण सन्तों का पावन सान्निध्य है, क्योंकि ये ही समाज में व्याप्त दुर्जनता, दानवता, पाशविकता मिटाते हैं। विकृति के बाजार में संत सुसंस्कृति का शंखनाद हैं। कवि का कथन उचित ही है -

हम क्रोध के बादल चढ़े, बरसन लगे अंगार।
इस जग में साधु न होय तो, जल जावे संसार॥

एक विचारक ने ठीक ही कहा है-

सन्त आध्यात्म के आकाश में, इन्सानियत का इन्द्रधनुष है।
सन्त सौहार्द के सितार पर, सद्भावना का संगीत है॥
सन्त अपनत्व के आंगन में, आत्मीयता की आराधना है।
सन्त प्यार और स्नेह की सीढ़ी पर परमात्मा की प्रार्थना है॥

संत दर्शन के छः अंग इस प्रकार हैं:-

(१) अभिगम :- अभिगम पाँच हैं-(1) सचित्त का त्याग, (2) अचित्त का विवेक, (3) मुखवस्त्रिका, (4) अंजलीकरण, (5) मन की एकाग्रता। सचित्त के त्याग से व्यक्ति जीवों की विराधना से बच जाता है। इससे जीवों को अभयदान

मिलता है। सन्त मुनिराज सचित्त को नहीं छूते हैं। कहा भी जाता है कि सन्त बनने पर छः काया के जीवों में प्रसन्नता का संचार होता है, क्योंकि उन्हें अभयदान मिलता है। अचित्त के विवेक से प्रदर्शन का भाव दूर होता है, सदाचार की प्रवृत्ति बढ़ती है। एवं अहंकार कम होता है। उत्तरासंग या मुखवस्त्रिका से यतना पूर्वक बोलने का अवसर मिलता है तथा वायुकाय के जीवों की विराधना नहीं होती है। अंजलीकरण से मन में विनय का भाव बढ़ता है, उत्साह एवं प्रसन्नता बनी रहती है। मन के एकाग्र होने पर संसार के प्रपंचों और पाप की प्रवृत्ति की समाप्ति होती है। संसार से विमुखता और धर्म के प्रति सम्मुखता होती है।

(२) दर्शन :- सन्तदर्शन से विषय-कषाय उपशान्त होते हैं। हृदय में पवित्रता के भाव बनते हैं। हमारे चिन्तन में सन्तों के गुणों का, व्यवहार का, संस्कार का प्रतिबिम्ब बनता है। यह प्रतिबिम्ब हमारे आचार-विचार में विशिष्ट तेजस्विता एवं विलक्षणता को साकार करता है, निखार लाता है। सन्त-दर्शन से देव, गुरु एवं धर्म इन तीनों तत्त्वों का संयोग मिलता है, क्योंकि स्वयं सन्त मूर्तिमान् धर्म हैं, गुरु हैं, तथा अरिहन्त देव के प्रतिनिधि हैं।

(३) वन्दन :- पंचांग नमन से काययोग पवित्र होता है, शान्त एवं स्थिर बनता है। वन्दन से उच्च गोत्र कर्म, पुण्य, संवर, निर्जरा की वृद्धि होती है। पाप, आस्रव, बन्ध घटते हैं।

(४) पर्युपासना :- कायिक, वाचिक, मानसिक पर्युपासना से अशुभ कर्मों की निर्जरा होकर पुण्य का महान् फल मिलता है, दर्शन विशुद्धि होती है। इससे ज्ञानदर्शनचारित्र रूप बोधि-लाभ प्राप्त होता है। शरीर, मन और आत्मा की आधि, व्याधि, उपाधि सब विसर्जित होते हैं। जिससे स्वाध्याय, साधना, तप में निर्विघ्नता आती है। बाद में आकांक्षा रहित होकर व्यक्ति क्लेश रहित हो जाता है।

(५) श्रवण :- जिज्ञासापूर्वक बुद्धि से और मन लगाकर सुनना ही सच्चा श्रवण है। पुण्य, पाप एवं धर्म के विवेचन से युक्त जिनवाणी बड़े पुण्य से सुनने को मिलती है। जिसकी होती है पुण्यवानी उसे सुनने को मिलती है जिनवाणी, आत्मसात् करें तो बन जाती है कल्याणी।

तीर्थंकरों की वाणी अगाध है,अनन्त है। तीर्थंकर प्रभु हजारों वर्षों तक देशना देते रहें तो भी जिनवाणी में रिक्तता नहीं आती है। हम बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें इस प्रकार की जिनवाणी सुनने का अवसर मिलता है। इससे आचार, अनाचार

को तथा यथार्थ-अयथार्थ को समझने का अवसर मिलता है। आवश्यकता इस बात की है कि जिनवाणी को हम आत्मसात् करें।

एक अन्धा व्यक्ति रात्रि में, अपने हाथ में लालटेन लेकर चल रहा था ताकि निकलने वाले को मार्ग नज़र आ जावे तथा कोई अन्धे से भी नहीं टकरावे। सामने एक व्यक्ति अपनी धुन में चला आ रहा था। वह रोशनी का लाभ नहीं लेकर उस अन्धे से टकरा गया और गिर पड़ा। गिरने पर उसने कहा- "अरे दिखता नहीं है, अन्धा है क्या?" दूसरों में दोष निकालने की प्रवृत्ति आज संस्कृति बनती जा रही है। अन्धा बोला- "हाँ भाई! अन्धा हूँ मुझे दिखाई नहीं देता है। आपके गिरने से चोट लगी होगी, मुझे क्षमा करना।" तब वह व्यक्ति बोला- "फिर लालटेन लेकर क्यों चल रहे हो?" अन्धा बोला- "यह आप जैसे अन्धों के लिए है जो आँखें होते हुए भी देखकर नहीं चलते हैं।"

ठीक इसी स्थिति से आज हम भी गुजर रहे हैं। हमें भगवान् महावीर के सिद्धान्त रूपी अनुपम रत्न मिले हैं, किन्तु हम उनका अपने जीवन में उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। जिस प्रकार वह व्यक्ति अपनी आँखों का मार्ग दृष्टिगत होने पर भी उपयोग नहीं कर पा रहा था। सत्य बात तो यह है कि यह अमूल्य ज्ञानराशि हमें सहज़ में मिली है, किन्तु हम इस अमूल्य राशि का मूल्य नहीं आंक पा रहे हैं, यही एक विडम्बना है। आज महावीर की वाणी सन्तों के माध्यम से हमें मिल रही है। यह हमारे अन्धकार को मिटाने वाली है, हमें सद्गुणों से अंलकृत करने वाली है, धर्माचरण की ओर बढ़ाने वाली है, जीवन जीने की कला सिखाने वाली है तथा कर्त्तव्यों से अवगत कराने वाली है। मानव जीवन का लक्ष्य बताने वाली है। निवृत्ति-प्रवृत्ति दोनों को समझाने वाली है। यह आत्मा को परमात्मा बनाने का माध्यम है।

(६) प्रत्याख्यान :- पाँच आस्रव, अठारह पाप, चतुर्विध आहारत्याग आदि त्याग-प्रत्याख्यान हैं जिनसे मूल और उत्तर गुण प्रकट होते हैं। संयम के अनुकूल जो भी प्रतिज्ञा की जाती है- जो भी त्याग किया जाता है वह सब प्रत्याख्यान है। मन-वचन-काया के समूह द्वारा होने वाले किसी अनिष्ट का, जिससे निषेध किया जाता है, वही प्रत्याख्यान है। इसके दो भेद हैं-

(अ) द्रव्य प्रत्याख्यान- इसमें कन्दमूल, हरी वनस्पति, मादक वस्तुओं आदि का प्रत्याख्यान किया जाता है।

(ब) भाव प्रत्याख्यान- इसमें विषय-कषायों का त्याग किया जाता है, जिससे

आस्रव द्वार बन्द हो जाता है, इच्छाओं का निरोध होता है। प्रत्याख्यान से द्रव्यों के प्रति भी तृष्णा कम होती है अथवा समाप्त हो जाती है।

उपर्युक्त छः अंगों को समझकर विवेक के साथ सन्तों से लाभ उठावें तो जीवन में अवश्य ही कल्याणकारी परिवर्तन आ सकता है। हम आध्यात्मिक जीवन जीकर कर्म-निर्जरा की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं, किन्तु हम भौतिकता की चकाचौंध में इतने उलझते जा रहे हैं कि इस ओर हमारा चिन्तन नहीं चल पा रहा है। कवि का कथन है :-

भोग विलासों की चकाचौंध में, डूब गया है आदमी।
जीवन के सही मकसद को, भूल गया है आदमी॥
व्यर्थ आडम्बर और प्रदर्शन की लगी परस्पर होड़ है।
आज अपनी ही राहों से लो भटक गया है आदमी॥

ये सन्त हमें मोह निद्रा से जाग्रत कर रहे हैं। बारबार धर्मोपदेश से राह भटकों को सुमार्ग बता रहे हैं। हम बहुत पुण्यशाली हैं, जिन्हें सन्तों के दर्शन एवं वाणी श्रवण का अवसर मिल रहा है।

सन्त की कितनी महत्ता है। आज तीर्थंकर नहीं, किन्तु उनके प्रतिनिधि ये सन्त हैं जो कि तीर्थंकर की वाणी के द्वारा हमारे अज्ञान और मिथ्यात्व का अपहरण करने में सहयोगी हैं। हमें निरन्तर सजग कर रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम मोह निद्रा से जब तक जागृत नहीं होंगे तब तक हमें जीवन में सफलता नहीं मिल सकती है। यदि शुभ आचरण, क्रिया, कर्म हमारे जीवन में अवतरित हो जायें तो हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म, क्रोध, मान, माया, लोभ,ईर्ष्या, घृणा, स्वार्थ, छल, कपट, वैमनस्य, विषमता, परिग्रह में आसक्ति, आदि दुष्प्रवृतियाँ हमारे जीवन-व्यवहार में नहीं आ सकती। अध्यात्म का सूत्र है अपने आपको देखो **'अज्झत्थमेव पस्स'** अपने भीतर झांकों **'संप्पिक्खए अप्पगमप्पएण'** अर्थात् आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो। सन्त हमें ऐसे ही सूत्र देकर हमारे जीवन में शाश्वत सुखों की प्राप्ति करने में सहायक बनते हैं। किसी सन्त की वाणी है:-

सन्त समाधि का बीज देता है,
सन्त आचरण का आशीष देता है।
सन्त जागरण का ताबीज देता है,
सन्त तो कभी नष्ट न हो वो चीज देता है॥

-4, महावीर कॉलोनी, चितौड़गढ़-312001(राज.)

अंग्रेजी स्तम्भ

Science of Dhovana-water

Dr. Jeoraj Jain

As per Jain Philosophy, **water** is considered to be a water-bodied living-being, having only one sense called **touch-sense** as opposed to human beings having 5 sense-organs. So far, there was no scientific evidence to prove this postulation. As per contemporary science, a living being must contain DNA and RNA chemicals. Since water is only a simple chemical, having hydrogen and oxygen elements in form of H_2O, it could not be considered as a living-being, Here, one should keep in mind that we are talking about **apkayika** living-being(immobile water-bodied) and not of mobile Micro-Organisms (**traskaya**), present in water.

However, recently a **scientific model** of the structure of living water has been formulated by the author. The basic micro unit called **'Yoni'**, consists of a minimum of 18 water-molecules. It looks like a net type of hollow cylindrical structure, through which dissolved oxygen radicals can pass through. By conducting certain experiments, direct as well as through certain indirect evidences, the validity of the hypothesis has now been proved. With the help of the above noted model, it has been proved that it satisfies the basic criteria of a living-being.

Certain interesting results are as follows:-

It is now possible

(1) to differentiate between living and non-living water and to label it.

(2) to understand as to how living-water becomes non-living by boiling or by rub-washing it with foreign materials, a processs called dhovana making.

(3) to understand as to how living water can carry memory and how a drop of water can contain innumerable number of water-bodied living beings, which constantly undergo

cycles of death and birth.

With a noble intention of **minimizing** the loss and killing of these bodies and to **protect environment**, **Jain** ascetics and many laities **use only non-living water.** A feeling of **karuna** is thus inculcated. More **details** about this philosophy and the **science** behind it are explained below through a series of relevant questions.

Q 1:- What are the *methods*, prescribed in Jain agamas, to convert living water into non-living water? Is there any *scientific* basis for it?

A 1:- Two methods are mentioned in **"Acārāṅga Sūtra"** to make inanimate type of water.

(1) Operating one type of water with another type of water. That means, by mixing one type of water with another type of water. For example, if water from a well is mixed with that from a pond, it becomes non-living.

Because both contain different types of minerals, they break the structure of each other and make it non-living for a certain period. Quality of mixing will decide the effectiveness of making them non-living.

(2a) Operation with **other beings** (foreign bodies/weapons) e.g. - boiling the water on fire. Boiling makes water 100% non-living. As per the theory of living-water, it exists in net like nano-tubular structures, called **"yonis"**. During boiling, these bodies break at elevated temperatures. Hence water becomes non-living. Besides, the dissolved air is driven out on boiling. Thus the breathing of yoni gets stopped to render it dead. (It is a dead body of fire-bodied living-being)

(2b)In another method, **foreign material** is mixed and dissolved into water either by rubbing and washing of kitchen utensils and grains, like kneading-pans, rice grains etc. **or** just by mixing of foreign materials like ash, cardamom etc into the water and shaking it well. The first method is a routine activity of Indian kitchens. A homogeneous and well rubbed water-mixture is 100% **non-**

living. Very small quantities of edible kitchen materials from grains and utensils go into the water and remain there as colloidal. As such this process is less violent to other living-beings. This is called Dhovana or "wash-solution". (**Ref.: Acārāṅga** 2nd Śrutaskandha adhyāya 8th, 21 types of non-living water- i.e., 20 types of dhovana & 1 type of boiled water. The last type of dhovana is termed thus:- "other type of dhovana like the wash-water of kitchen utensils, obtained after rubbing and cleaning them with ash or by wiping of floor.)

Scientifically judged, the foreign particles, during washing operation, block the openings of the tubular-body, so that it can no more **breathe**. The oxygen radicals are converted back into molecules. Due to internal rubbing, the yonis are also broken apart. The quantity of foreign materials should be more than a **critical** quantity, otherwise it would not be able to block the yonis and water would remain living-mass, as is the case with homeopathic remedies. It takes relatively longer time before it again becomes living-being.

One more thing happens in both these methods. The **mobile micro** organisms in water also become life-less. In the first method, it gets killed at elevated temperature of boiling. In the second method, they are rendered lifeless due to rubbing, fatal contact and alkalinity of foreign materials.

Thus we see that during the process of making water non-living, not only the water yoni and the dissolved air are affected but its micro organisms and bacteria are also affected.

Q2 :- What is ths chemistry of making Dhovana by adding foreign materials?

A2 :- The role of foreign materials mixed in water can be further analyzed.

There are two types of solids:-

(a) Polar materials: Their molecules carry charges. When this material is mixed in water, it gets converted into ions. Example: Salt NACL. Water structures or mols form hydration- envelopes around these ions. The water yonis are not broken or choked by small qantities of concentrates, Like homeopathic remedies. But very large quantities of foreign material may, by reducing life-energy, make it "sick", rather almost lifeless? The remedies, on the other hand elevate its energy-level?

(b)Non-polar materials: example sugar: (although it is a special material)

(i) It dissolves in water without forming hydration-envelopes. Its molecules sit in between the intermolecular or inter-cell voids and spaces, after it gets dispersed. Sugar is termed as "agreeable" material and is not permitted to be used for making dhovana for Vratī Śrāvakas. Normally repugnant materials are prescribed for making dhovana.

(ii) Normally, non-polar solids dissolve in non-polar liquids, e.g. non-polar benzene can dissolve wax, which is non-polar. But water cannot do it. In water, cardamom or ash can form colloidal. They choke yonis and make the Dhovana non-living.

(c) A third category of solid(which may be polar or non-polar) are the **non-eatable** materials.

They render water unfit for human consumption. Arsenic compounds, fluorides etc. belong to this category. They, in fact must be removed from water, even if they are available in traces, before water can be declared safe & potable.

(d) Mandate (conditions) while making Dhovana:

1. The solids for making dhovana must be easily available (or rather normally available) in houses, may be for some other purposes, like cardamom, ash powder etc.
2. The solid should not be like sugar etc., which is not permissible in **Vrata** - fastings.

3. It should not be harmful/non-edible for body.
4. It should be soluble or capable of forming **colloidal.**
5. The process should be simple with minimum or no parigraha, like washing of kitchen utensils. Washing of floor (without chemicals, of course) also makes Dhovana. The ash powder should be in sufficient quantity, So that some of it settles down at the bottom.

The idea is to get dhovana water as a bye-product. Some dhovana may be fit for washing purpose only and not for drinking.

Q3 :- Boiled water is said to remain lifeless for a limited period as per the season. Is there any scientific explanation for it? Why does it become again a living being or animated body?

A3:- During boiling of water, its **Yoni structure** gets disintegrated. On lowering the temperature, it again starts forming tubular structure. However, dissolved air is completely driven out during the boiling process. On cooling, the water again starts absorbing air from the atmosphere slowly. The rate of absorption depends on temperature and humidity of the atmosphere. After some time the water becomes saturated with air. Initially in dead water, like boiled water, 2-D structures (Of different sizes) in shape of Hex or panta are formed due to Hydrogen-Bridges. These unit structures join together and fold up to form 3-D structures. As per the natural of **minimum surface energy**, these 3-D structures take the shape of hollow "spheres", considered to be the most stable structures of water. Vacant spaces are created in between the spheres, which are filled with air, dissolved in water.

This trapped air opens up the spheres to convert it into tubular structures to get thorough passage. The air is normally dissociated into ions. When these ions (rather **oxygen radicals**) pass through the net-like water tunnel, energy is generated by the interaction of tube with the

moving charged oxygen radical. This is the time, when this yoni becomes live, These net-like yoni structures are capable of storing energy and information, making water a **first-rank energy and information carrier.** All biological processes are controlled by information- i.e., by its reception, storage and release, The time period to remain un-animated varies with the atmospheric conditions i.e. the season.

(Ref.: Daśvaikālika Sūtra, 5th Adhyayana 2nd Uddeśhaka:- Boiled water remains devoid of life for 3, 4, 5 paharas according to the seasons). 1 pahar = 3 hours.

(Continue)

- Kamani center, 2nd floor , Bistapur, Jamshedpur-831001

FORGIVENESS : The key for Good Friendship

Two friends were walking through the desert. At some point of journey they had an argument and one friend slapped the other one. The one who got slap was hurt but without saying anything wrote in the 'sand:' "Today my best friend slapped me on the face."

They kept on walking until they found an oasis where they decided to take bath. The one who had been slapped got stuck in the mire and started drowning, but the friend saved him. After he recovered from the near drowning, he wrote on a stone: "Today my best friend saved my life."

The friend who had slapped and saved his friend asked him," After I hurt you, you wrote on the sand and now you write on a stone, why?"

The friend replied- " When someone hurts us we should write it down in sand where winds of Forgiveness can erase it away, but when someone does something good for us, we must engrave it."

-Indra Prasad Jain 'Nikku' , Sawai Madhopur

Tattva bodha

NAMASKĀRA SŪTRA (2)

Dr. Priyadarshana Jain

The first ***pada*** is ***namo arihantāṃ***, which means obeisance to the ***arihantas*** or ***arhats***. '***ari***' means enemies, here it means the internal enemies of attachment, hatred, delusion, passions, etc and 'hanta' means destruction, hence ***arihantas*** are those pure souls who have destroyed their inner enemies viz. attachment, hatred etc. They are the pure souls who have terminated the cycle of births and deaths and are not going to be reborn again. They have terminated all the miseries of the mundane world and have manifested the infinite latent qualities of the soul. They have become pure and perfect and enjoy infinite knowledge, darśana, bliss and power as they have annihilated the four destructive ***karmas*** viz. Knowledge-obscuring, darśana-obscuring, Delusion-producing and Power-obscuring. Any soul who exerts to annihilate the ***karmas*** can become pure and perfect, thereupon Godhood manifests in him, and they become worthy of veneration. As long as the soul is veiled by the ***karmas*** it suffers in transmigration. ***arihantas*** are the embodied Gods and ***siddhas*** are the disembodied Gods. When the ***arihantas*** annihilate the remaining four non-destructive types of ***karmas*** viz. age-determining, name-determining, status-determining and feeling-producing ***karmas*** they become ***Siddhas*** or the perfect souls in ***Nirvāṇa***.

The ***Arihantas*** have thirty-four ***Atiśayas*** i.e. extra-ordinary qualities, and thirty-five extra-ordinary traits of speech. They are devoid of 18 ***doṣas*** or defilements, which are as follows: false-faith, ignorance, pride, anger, conceit, greed, attachment, hatred, sleep, disgust, falsehood, stealing, jealousy, fear, violence, affection, pleasures, laughter. Thus they are beyond all defilements and conditioning.

They are also called as ***Vitarāga*** and ***Sarvajňa***. ***Vitarāga*** means they are devoid of attachment and ***Sarvajňa***

means omniscient or all-knowing. One who conquers attachment and aversion alone can become all-knowing omniscient. As a result of which they can cognize the past, present and future of all substances along with all their modes simultaneously. In other words the omniscient know the past, present and future of all living things and non-living things simultaneously.

Arihantas and ***siddhas*** are also called ***Jinas*** i.e. conquerors or victors and the path preached by them is called as ***Jainism*** in modern times although in older days it was known as ***arhat dharma, nigganṭha dharma*** etc. The people who follow ***Jainism*** are known as ***Jains***, in other words those who exert to conquer their inner enemies like the ***Arihantas*** are the ***Jains***.

Arihantas are the ***Jivanmukta paramātmans*** and ***Siddhas*** are the ***vīdehamukta paramātmans***. ***Arihantas*** may be the ***Tīrthaṅkara arihantas*** or ordinary ***arihantas*** . In every eon or time-cycle we have a set of twenty-four ***Tīrthaṅkaras*** who are spiritually evolved divine souls. In their past lives they exerted spiritually and sowed the seeds of emancipation. When they are born as ***Tīrthaṅkaras, Kalyāṇaka*** or five auspicious events take place in their lives viz.

Cyavana	- Conception
Janma	- Birth
Dikṣā	- Initiation
Kevalajñāna	-Omniscience
Nirvāṇa	- Emancipation.

Nobody initiates a would-be ***Tīrthaṅkara***. They initiate themselves, take to rigorous austerities, spend all their time in meditation and spiritual contemplation and seek spiritual bliss and perfection. When they become omniscients or ***kevalins*** they come amidst the masses and preach the law of righteousness, non-violence and self-restraint. They first practised the same and perfected themselves, only then they propounded the same for the welfare of all living beings. Lord ***Riṣabha*** was the first ***Tīrthaṅkara*** of this time cycle and Lord ***Mahāvira*** was the last. Infinite sets of ***Tīrthaṅkaras*** appeared

before them and many so will appear in the future time cycles. Essentially speaking there is no difference in what the first ***Tīrthaṅkara*** preached and the last, although practically some differences can be noted like practising five or four ***mahavratas***, ascetics wearing white or coloured clothes, time of ***Pratikramaṇa*** etc.

Besides ***Tīrthaṅkara arihantas*** there are the ordinary ***Arihantas*** who are not born as ***Tīrthaṅkaras*** but upon hearing the discourses of the ***Tīrthaṅkaras*** at other ascetics they exert for perfection. Just as all men are not kings, but all kings are men, so also all ***Tīrthaṅkaras*** are ***arhats,*** but not all ***arhats*** are ***Tīrthaṅkaras***. The knowledge and the bliss that they all enjoy is of the same type, spiritually they are all divine, pure and perfect, however some differences based on their earlier karmic conditioning may be noted as follows:

1. Those who bind the ***Tīrthaṅkara - Nāma - karma*** are born as ***Tīrthaṅkaras***, not so for ordinary ***Arhats***.
2. Would-be ***Tīrthaṅkaras*** descend either from heaven or hell, but ordinary ones can come from any one of the four existences.
3. ***Tīrthaṅkaras*** are born in ***Kṣatriya*** clan, but ordinary ***arhats*** can be born in any clan.
4. At the time of conception the mother of the ***Tīrthaṅkara*** sees fourteen dreams (sixteen according to ***Digambaras***), not so for ordinary ***arhats***.
5. ***Tīrthaṅkaras*** are born with three types of knowledge viz. ***mati Jnāṇa*** – sensory perception, ***Śruta-Jñāna*** – scriptural knowledge and ***avadhi Jñāna*** - clairvoyance, but an ordinary ***arhat*** may descend as an ignorant soul or self-realized one before becoming an ***arhat***.
6. The ***Tīrthaṅkars*** are venerated by the ***Indra***s i.e. King of Gods even before they become ***Tīrthaṅkaras***.
7. The five ***kalyāṇakas*** or auspicious events take place in the life of a ***Tīrthaṅkara*** and are celebrated even by the

celestial Gods.

8. ***Tīrthaṅkaras*** are destined to have the 34 extra-ordinary qualities and 35 extra-ordinary traits of speech.
9. ***Tīrthaṅkaras*** initiate themselves.
10. As soon as the ***Tīrthaṅkaras*** renounce the world, they get telepathic or ***manaḥparyāya Jñāna***.
11. The ***Tīrthaṅkaras*** establish the four-fold ***Jaina*** congregation or saṅgh.
12. All ***Tīrthaṅkaras*** have ***Gaṇadharas*** as their prime disciples.
13. A ***Tīrthaṅkara*** preaches only after he becomes omniscient.
14. A ***Tīrthaṅkara*** definitely renounces the world before becoming an omniscient but an ordinary ***arhat*** can acquire omniscience as a householder due to ***Bhāva Saṅyama***.
15. The legacy of a ***Tīrthaṅkara*** is carried on not so far ordinary ***arhats***.
16. A ***Tīrthaṅkara*** does not step on the 1st, 2nd, 3rd, 4th, and 11th ***Guṇasthānas***.
17. A ***Tīrthaṅkara*** gives alms continuously for a year called ***Varsīdāna*** before initiation.
18. The body of ***Tīrthaṅkara*** is made of auspicious ***pudgalas*** i.e. matter.
19. A ***Tīrthaṅkara*** has eight ***Prātihāryas*** like divine halo, umbrellas etc constructed by the celestial Gods.
20. Based on the preachings of the ***Tīrthaṅkara*** the ***Gaṇadharas*** construct the ***Dvādasṅga*** the sacred literatures of the ***Jains,***

Thus the ***Tīrthaṅkaras*** are the ***Jinas*** bestowed with extra-ordinary traits.Through this pada all **arhats** are venerated. **(Continue)**

-Lecturer : Dept. of Jainology,University of Madras, Chennai

कविता

सामायिक को धार !

डॉ. इन्दरराज बैद

सामायिक को धार, जीव तू सामायिक को धार,
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(१)

देख रहे हैं बड़ी विषमता, हम अपने चहुँ ओर।
भाँति-भाँति की गतियों पर है, नहीं किसी का जोर।
भव-सागर में डगमग करती नौका बिन पतवार, जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(२)

जीवन रात-दिवस का मेला, है उल्लास - विलाप।
कभी सुखों की शीतल छाया, कभी दुखों का ताप।
धूप-छाँव सा खेल रहा है मानव का संसार,जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(३)

जगे सुमति कुछ ऐसी जाए, भेद-भाव को भूल।
माटी-कंचन को सम जानें, पत्थर को भी फूल।
कोई नहीं पराया-अपना, बाँटें सबको प्यार, जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(४)

मणि-मुक्ता भी सामायिक को, कहाँ सकेंगे तोल ?
पुणिया श्रावक ने बतलाई, निधि है यह अनमोल।
आत्मरमण की दिनचर्या पर, ऋद्धि सभी न्यौछार, जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(५)

समता समरसता है दूजा, सामायिक का नाम।
मन-वच-कर्म विषमता हटती, भव बनता अभिराम।
बंधन सारे खुल-खुल जाएँ, खुलें मोक्ष के द्वार, जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

(६)

शुद्ध काय से शुद्ध भाव से, धर ले उत्तम ध्यान।
कर संतत निर्दोष साधना, मंगल अनुसंधान।
दुष्कृत्यों का करले चिंतन, अनुशीलन, सुविचार, जीव तू सामायिक को धार।
ध्यान, योग, स्वाध्याय, जाप, प्रभु-सुमिरन का आधार, जीव तू सामायिक को धार।

-14 Narayana Apartment, 10th Street,
Nanganallur, Chennai-600061

मत करिए रात्रि भोजन

श्री मगनचन्द जैन

मत करिए रात्रि भोजन, इसमें नहिं है कछु सार।
तन-मन रोगी हो जायेगा, यम की पड़ेगी मार।। मत.....
रात्रि भोजन करने से, होती है हिंसा भारी।
पैदा होती है इससे, तरह-तरह बीमारी।
तज दो रात्रि भोजन, मिट जायेंगे सारे विकार।। मत.....
छोटे कीट-पतंगे, गिरते भोजन-वस्तु में।
वे जाते हैं फिर अन्दर, खाने वाले के उर में।
हो जाता है भाइयों, अनजाने मांसाहार।। मत.....
जो रात्रि भोजन करते, वे ठीक समय नहिं सोते।
दिनचर्या बिगड़ जाती है, वे ठीक समय नहिं जगते।
दिवस-भोज अपना के, अब इसमें करो सुधार।। मत.....
आगम, पुराण पढ़ लेओ, पाओगे तुम सद्ज्ञान।
सभी तरह से हेय बताया, छोड़ो इसे सुजान।
दिन में भोजन करना, होता है सुखकार।। मत.....
श्रेष्ठ जैन-कुल पाया, कुछ इसका करो विचार।
परम्परा यह अच्छी, जैनों की मुख्य पहचान।
'मगन' करो दिन भोजन, जीवन का होगा सुधार।।मत.....

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (13)

प्रश्न२३-'आजीविय समयं' (आजीवक मत)का तात्पर्य समझाइए।

उत्तर- गोशालक को एक बार भगवान् पार्श्वनाथ के संयम से पतित होकर विचरने वाले छः शिष्य मिले। वे अष्टांग निमित्त के जानकार थे। गोशालक ने उनसे अष्टांग निमित्त सीख लिया और उसी से आजीविका चलाने के कारण उसका मत आजीवक मत कहलाया। आजीवक मत को गोशालक मत और नियतिवाद भी कहते हैं। वृत्तिकार ने त्रैराशिक मत भी आजीवक सम्प्रदाय को ही बताया। प्रस्तुत सूत्र के अध्ययन 6.7 में आजीवक मत से नियतिवाद को ग्रहण किया है। काल, स्वभाव, नियति, कर्म एवं पुरुषार्थ से पाँचों समवाय अनुकूल होने पर ही कार्य-सिद्धि होती है। तथापि केवल एक नियति को ही सर्वेसर्वा मानकर, शेष सभी का खंडन करने वाले नियतिवादी कहलाते हैं। इनका अभिमत है-

~~प्राप्तव्यो नियति बलाश्रयेण योऽर्थः सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा।~~
~~भूतानां महतिकृतेऽपि हि प्रयत्ने नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः॥~~

अर्थात् वही होता है जो नियति के बल से प्राप्त होने योग्य है, चाहे वह शुभ हो या अशुभ। प्राणी चाहे कितना ही प्रयत्न करे जो होने वाला है वह अवश्य होता है और जो नहीं होने वाला है वह कदापि नहीं होता है। बौद्ध ग्रंथ दीघनिकाय के सामण्ण फल सुत में आजीवक मत के प्रवर्तक मंखलिपुत्र गोशालक के नियतिवाद का उल्लेख इस प्रकार है- सत्त्वों के क्लेश का हेतु प्रत्यय नहीं है, बिना हेतु और प्रत्यय के ही सत्त्व(बाकी)क्लेश पाते हैं। बिना हेतु और प्रत्यय के सत्त्व शुद्ध होते हैं, न वे स्वयं कुछ कर सकते हैं न पराये कुछ कर सकते हैं। कोई पुरुषार्थ नहीं है बल नहीं है, वीर्य नहीं है, पुरुष का साहस नहीं है और न पुरुष का कोई पराक्रम है। सभी जीव अवश हैं, निर्बल हैं, निर्वीर्य हैं, नियति के संयोग से छः उन्नतियों में सुख-दुःख भोगते हैं।

'शास्त्रवार्ता समुच्चय ' में नियतिवाद का वर्णन करते हुए कहा गया है- चूँकि संसार के सभी पदार्थ अपने-अपने नियत स्वरूप से उत्पन्न होते हैं, अतः ज्ञात हो जाता है कि ये सभी पदार्थ नियति से उत्पन्न

हैं, यह समस्त चराचर जगत नियति से बंधा हुआ है। जिसे, जिससे, जिस समय, जिस रूप में होना होता है वह उससे, उसी समय, उसी रूप में उत्पन्न होता है। कौन इसका खण्डन कर सकता है? साथ ही काल, स्वभाव, कर्म और पुरुषार्थ आदि के विरोध का भी वह युक्तिपूर्वक निराकरण करता है।

इस प्रकार नियतिवाद का दृढ़ मंतव्य है कि जो कुछ होता है भवितव्यता से ही होता है। सूर्य, पर्व के बजाय पश्चिम में उदय होने लगे, अटल माना जाने वाला सुमेरू पर्वत भी कभी चलायमान हो जाय, तो भी भवितव्यता स्वरूप जो कर्म रेखा बन चुकी, वह तो अचल-अटल ही रहती है। वह किसी भी शक्ति से अन्यथा नहीं हो सकता। नियति के अनुसार ही फल मिलता है। वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र है, उस पर किसी का बल नहीं चल सकता। नियति के विधान को पुरुषार्थ भी अन्यथा नहीं कर सकता।

नियतिवादियों का यह कथन एक अपेक्षा से सत्य है, किन्तु ये अपना ही वर्चस्व स्थापित करके दूसरे (शेष+समवाय) का उत्थापन करते हैं अर्थात् ये विपक्ष के यथार्थ को स्वीकार नहीं करते, इसलिए ये असत्य हैं।

सूत्रकृतांग सूत्र, अध्ययन 7, उद्देशक 4 में कहा है- **"णिययाऽणिययं संतं अजाणंता, अबुद्धिया"** अर्थात् वे मिथ्याप्ररूपण करते हुए गुण(हठाग्रही) एवं पण्डितमानी नियतिवादी एकांत नियतिवाद को पकड़े हुए हैं। वे इस बात को नहीं जानते कि इस संसार में सुख-दुःखादि सभी नियतिकृत नहीं होते। पुरुषार्थ, काल, स्वभाव और कर्म भी उसमें कारण होते हैं। ऐसी स्थिति में अकेले नियति को कारण मानना, अज्ञान है।

प्रश्न ५: मेढ़ीभूए का अभिप्राय समझाइये।

उत्तर- मेढ़ी अर्थात् केन्द्र गायटे पर बैलों को चलाने के लिए बीच केन्द्र लकड़ी से अर्थात् मेढ़ी के चारों ओर 10-15 बैल बाँधते हैं। कुशल किसान मेढ़ी के निकट पूर्ण बल वाले बैल को रखता है, वह बैल मेढ़िया कहलाता है। वह मेढ़िया बैल सभी बैलों के हिचकोले-हिचके सहन करते हुए भी

चलता रहता है। इसी तरह आनन्द मेढ़ी के समान सबका कहा हुआ सुनते थे। मेढ़ीभूत का तात्पर्य है- (1) केन्द्रीभूत (2) इससे ही सभी बैल गतिशील होते हैं (3) मेढ़ी पर ही बैल निर्भर रहते हैं, नहीं तो कोई बैल कहीं चला जाए, कोई कहीं उससे व्यवस्था भंग हो जाती है, (4) सबका कहा सुनने वाले।

अर्थात् आनन्द जी भी पूरे परिवार के केन्द्रीभूत थे। वे पूरे परिवार को हेय से दूरकर उपादेय में प्रवृत्त करते थे। सभी परिवारिकजन, उन पर निर्भर थे। वे सभी के व्यवस्थापक थे। पूरे परिवार को एक सूत्र में बाँध कर रखते थे। साथ ही सभी को, सभी प्रवृतियों को सहन कर भी शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहते थे।

यही सब विशेषताएँ, एक मुखिया में होती है जैसे शरीर में चेहरा मुख्य होता है। उससे ही भीतर का ज्ञान होता है। बस वैसे ही परिवार में मुखिया होता है, जैसे मुख होता है। जैसे मुख पर ही 5 में 4 इन्द्रियों तो पूरी होती हैं, स्पर्शेन्द्रिय भी होती है, उसी प्रकार आनन्द श्रावक में मुखिया के सभी गुण सम्पूर्णतया विद्यमान थे।

शास्त्र में आनन्द श्रावक के इन गुणों को कहने के पीछे यह तात्पर्य भी हो सकता है कि अपने परिवार की आन बनाए रख सकता है, वही जिनशासन की भी शान बनाये रख सकता है। **(क्रमशः)**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित साहित्य प्राप्ति-हेतु अन्य स्थान इस प्रकार हैं-

(१) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, **जोधपुर-** 342001,(राज.) फोन 0291-2624891 **(2) Shri Navratan ji Bhansali,** c/o. Mahesh Electricals, 14/5, B.V.K. Ayangar Road, **Bangalore-560053**(Karnataka) Ph.: 080-22265957, Mob.: 09844158943 **(2) Shri B. Budhmal ji Bohra,** C/o. Bohra Syndicate, 53, Erullapan Street, Sowcarpet, **Chennai-79** (Tamilnadu) Ph.: 044-26425093, Mob.: 09444235065 **(४) श्रीमती विजया जी मल्हारा,** रतन सागर बिल्डिंग, कलेक्टर बंगला रोड, चर्च के सामने, **जलगाँव- ४२५००१** (महाराष्ट्र) फोन : 0257-2225903

चिन्तन

साधना के साधन-सूत्र

श्री जशकरण डागा

प्रत्येक साधक 'साध्य' की उपलब्धि हेतु साधना करता है। बिना उद्देश्य के साधना से कोई सिद्धि नहीं होती है। आत्मार्थी की साधना का लक्ष्य आत्मा से परमात्मा बनने का होता है। उसकी साधना के मुख्य तीन उद्देश्य होते हैं, यथा- (1)विषयों की आसक्ति को एवं कषायों को घटाना, (2) निज स्वरूप का यथार्थ ज्ञान करना और (3) साधक से 'साध्य' बनने हेतु निज स्वरूप में अवस्थित होना।

साधना पथ पर बढ़ने हेतु साधक को ज्ञानियों द्वारा कथित साधना के पाँच डग (विकास और प्रगति के क्रम) धारण करने योग्य हैं। ये पाँच डग इस प्रकार हैं- (1) अशुभ संकल्पों का त्याग कर अशुभ योगों की निवृत्ति करें। (2) शुभ संकल्पों की पूर्ति करें,शुभ योगों(भावों) में प्रवृत्ति करें। (3) शुभ संकल्पों (पुण्य) से प्राप्त सुखों में आबद्ध न हों, इस हेतु सजग एवं अप्रमत्त रहें। (4) मन को निदान (पौद्गलिक इच्छा एवं एषणाओं से) रहित कर सदा अध्यात्म ज्ञान में लगावें तथा (5) अध्यात्म ज्ञान से सम हो, वीतराग भाव में अवस्थित हो शाश्वत अखण्ड शान्ति एवं आनन्द में रमण करें। यह 'साध्य प्राप्ति' का विकास क्रम है।

साधना के लिए तीन की उपलब्धि आवश्यक है, यथा- **(१) समय-** समय के अभाव में साधना संभव नहीं है। जैसे नारकी जीवों के पास साधनार्थ समय नहीं होने से वे साधना नहीं कर सकते। **(२) समझ (बुद्धि)-** समय होते हुए भी बिना समझ के साधना संभव नहीं होती। जैसे- पशुओं में समझ न होने से वे साधना नहीं कर सकते। **(३) शक्ति-** समय और समझ दोनों हैं, पर शक्ति नहीं तो भी साधना नहीं हो सकती, जैसे- रोगों से एवं वृद्धावस्था से पीड़ित व्यक्ति।

हमें पुण्योदय से इन तीनों की अनुकूलता मिली है। अतः प्रमाद रहित हो साधना कर जीवन सार्थक करना चाहिए। इसी तथ्य को लक्ष्य कर, साधकों के लिए प्रभु महावीर ने कहा है-

"जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे॥"

अर्थात् जब तक जरा (वृद्धावस्था) पीड़ित न करे, व्याधि (रोग) न बढ़े एवं इन्द्रियाँ क्षीण न हों तब तक ही धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए। (दशवै. 8.36)

प्रायः बचपन में समझ की कमी होने से, युवावस्था में समय की कमी होने से एवं वृद्धावस्था होने पर शक्ति की क्षीणता के कारण साधना नहीं हो पाती है। अतः हमें समय रहते जो भी साधनार्थ अनुकूल साधन सामग्री (समय, समझ व शक्ति आदि) मिली है, उनका सदुपयोग करते हुए सजग और अप्रमत्त भाव से सदा धर्माराधन करते रहना चाहिए।

-डागा सदन, संघपुरा, टोंक- 304001(राज.)

स्वाध्याय करने की कला

१. सामायिक के समय में स्वाध्याय कीजिए।

२. स्वाध्याय हमारे चित्त को शुभ भावों में केन्द्रित रखता है।

३. इससे हमारी स्मृति तेज होती है।

४. स्वाध्याय से लिखने की कला का जन्म होता है।

५. स्वाध्याय करते समय मिले मुख्य बिन्दु डायरी में लिखना चाहिए।

६. दिल को छूने वाले वाक्यों का संग्रह करें।

७. नए एवं महत्त्वपूर्ण शब्दों का चयन करें।

८. संदर्भ ग्रन्थों के अध्ययन की प्रवृत्ति बनाएँ।

९. स्वाध्याय से प्रभावोत्पादक शब्द संसार मिलता है।

१०. कविताएँ भी बनने लगती हैं।

११. अपने अन्दर सद् गुणों का भंडार बनता है।

१२. स्वाध्याय से सुन्दर शुभ उपयोगी अच्छे शब्दों का संग्रह अपने मन-मस्तिष्क में होने लगता है। स्वाध्याय एक बहुत अच्छा सरल तप है। जो जीवन में निखार लाता है। तत्काल पवित्र बनाने वाला यह स्वाध्याय तप है।

१३. स्वाध्याय हमारे कथन एवं लेखन को पुष्ट करता है। स्वाध्याय से शिक्षा ग्रहण करने की भावना का उत्तरोत्तर विकास होता रहता है। जीवन अर्थपूर्ण एवं उपयोगी बनता है।

१४. सटीक सारगर्भित निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। हम हेय,ज्ञेय और उपादेय को भलीभांति समझने लगते हैं, स्वाध्याय में हमारा मुख्य ध्यान समझने का होना चाहिए। समझ के पश्चात् सब सरल है, बिन समझे सब मुश्किल है।

-श्री लक्ष्मीचंद जैन, छोटी कसरावद

आध्यात्मिक गीत

मिला आज वह अति उत्तम है

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है।
किया याद जो बीत गया है,
आने वाला सदा नया है,
वर्तमान को कभी न परखा, नहीं किसी से वह कुछ कम है।
कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है॥1॥
मोह-पाश में बँधे पड़े हैं,
निकल न पायें, वहाँ खड़े हैं,
सम्यक् दर्शन जगे बिना, जो कुछ है वह सारा भ्रम है।
कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है॥2॥
भाव हमारे सदा शुद्ध हों,
अन्तरंग भी नित्य बुद्ध हों,
ज्ञान और श्रद्धान साथ हो, सदाचरण निश्चित हरदम है।
कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है॥3॥
संयममय सारा जीवन हो,
द्वादशवाणी तपश्चरण हो,
सभी लालसायें छुट जायें, सुधरे नित जो भी व्यतिक्रम है।
कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है॥4॥
षोडश भावों का चिंतन हो,
खुलें त्वरित जो भी बंधन हों,
'अप्पा सो परमप्पा' जागे, सम्यक् श्रम का सफल कदम है।
कौन कहे कल कैसा होगा, मिला आज वह अति उत्तम है॥5॥

'मंगल कलश' 394, सर्वोदयनगर, आगरा रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)

धारावाहिक (क्रमशः५२)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- गुरु की महत्ता बतलाते हुए जम्बूकुमार कहते हैं कि यदि मैं तुम सबकी बात मानता हूँ तो चौरासी का चक्कर तैयार है और गुरु महाराज की मानता हूँ तो अनन्त सुख प्राप्त करता हूँ। यह सुनकर आठवीं पत्नी जेतश्री ने माता-पिता के प्रति पुत्र के कर्त्तव्य का स्मरण करवाया तथा परलोक की साधना से पूर्व इस लोक की साधना को आवश्यक बताते हुए कहा-

जैनधर्म में साधना के लिए वन में जाने की अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। गृहस्थी में रहकर माता-पिता की सेवा करके भी धर्म की साधना हो सकती है। चक्रवर्ती भरत ने एक दिन भी वनवास नहीं किया था और न घर छोड़कर वे साधु बने थे। फिर भी क्या उन्हें मोक्ष नहीं मिला? अथवा उन्हें कुछ हीन श्रेणी का मोक्ष मिला ? ऐसा नहीं है। उन्होंने गृहस्थी में रहते हुए भी अपनी आत्मा को उत्तमोत्तम संस्कारों से संस्कृत बनाया था, अध्यात्म भावना का चिन्तन किया था। इसी से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई और वही मोक्ष उन्हें मिला जो वनवास करने वाले यतियों को मिलता है।

मरुदेवी माता का उदाहरण आपको याद नहीं है। बताइए तो सही कि उन्होंने कब जंगल की खाक छानी थी? उन्हें तो हाथी के हौदे पर बैठ-बैठे ही केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई थी। वास्तव में बात यह है कि धर्म और आत्मिक निर्मलता का सम्बन्ध भावना से है, किसी स्थान या किसी वेष से नहीं है। वनवास करने से ही यदि मुक्ति मिलती होती तो भील,कोली, किरात आदि जंगली जातियाँ सब मोक्ष में पहुँच गई होती, क्योंकि वे जन्म से लेकर मरण पर्यन्त वन में ही वास करती हैं। बाह्य वेश लोक में पहचान कराने का साधन है। उससे आत्मिक निर्मलता का जरा भी सम्बन्ध नहीं है। वेष से ही मुक्ति होती तो श्रमण भगवान् महावीर नाना प्रकार के कष्ट सहने का, तपस्या करने

का तथा चारित्र पालने का उपदेश क्यों देते? अतएव प्रियतम! आप यदि मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो गृहस्थ अवस्था में रहते हुए माता-पिता की सेवा कीजिए। उन्हें प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त कीजिए। उनके आशीर्वाद और सेवा से आपको मुक्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप और क्या चाहते हैं?

आप उस ब्राह्मण की तरह बातें बना कर हमें भुलावे में डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।

जम्बूकुमार- किस ब्राह्मण की तरह?

जेतश्री- सुनिए। श्रीपुर नाम का एक विशाल और सुन्दरता में अमरपुरी को भी लज्जित करने वाला नगर था। उस नगर के राजा का नाम था सार। राजा सार को काव्य का तथा कथाओं का बड़ा शौक था। उसने अपने राज्य भर में यह घोषणा करा दी थी कि मुझे जो व्यक्ति नई बात सुनाएगा उसे एक लाख मोहरें पारितोषिक रूप में प्रदान की जायेंगी। राजा की इस उत्साहप्रद घोषणा का समाचार सुनकर अनेक लोग नई-नई रचनाएँ, अत्यन्त श्रम करके तैयार करके लाते और राजा को सुनाते थे। राजा की बुद्धि कुशाग्र थी। वह एक बार काव्य को या अन्य कथा आदि को सुनकर ही अविकल रूप से याद कर लेता था। सुनाने वाला जब अपनी रचना सुना चुकता तो वह अन्त में कह देता था- "महाशय, यदि आपकी रचना मौलिक होती तो मैं आपको एक लाख मोहरें पुरस्कार में देता। मगर यह मौलिक नहीं है। यह मुझे पहले से ही याद है। विश्वास न हो तो सुन लीजिए।"

राजा इस प्रकार कह कर अक्षर-अक्षर उस रचना को दोहरा देता था। रचनाकार यह देखकर आश्चर्य चकित रह जाता और राजा अपनी मोहरें बचा लेता था। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ घटी और सभी साहित्यकार राजा के द्वारा ठगे जाकर अपना सा मुँह लिए अपने रास्ते लगते। सब लोगों ने मिलकर राजा की चालाकी का बदला लेना चाहा।

श्रीधर नामक एक ब्राह्मण था। वह था तो निर्धन, पर बुद्धि का बड़ा धनी था। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। उसने राजा की अक्ल ठिकाने लाने की

युक्ति सोची। एक नई कल्पना करके वह राजा के पास आया और कहने लगा- "पृथ्वीनाथ! आज मैं भी आपको एक नई बात सुनाना चाहता हूँ। संभव है आपने वह बात पहले भी सुन रखी हो। तथापि मुझे वह नवीन जान पड़ती है। बात यह है कि आपके आदरणीय पिताजी ने मेरे पिताजी से दस लाख मोहरें ऋण के रूप में ली थी। यदि यह बात आपने पहले भी सुनी हो तो कृपा कर वह मोहरें मुझे अब ब्याज सहित लौटा दीजिए। कदाचित् यह बात आपने पहले न सुनी हो तो नई बात सुनाने के पुरस्कार स्वरूप एक लाख मोहरें मुझे प्रदान कीजिए।"

श्रीधर ब्राह्मण की यह बात सुनकर राजा बड़े असमंजस में पड़ा। यदि कहता है कि यह बात मुझे पहले ही याद है तो दस लाख मोहरें ब्याज सहित देनी पड़ेगी, और यदि यह कहे कि ऐसी बात मैंने पहले कभी नहीं सुनी तो एक लाख मोहरें देनी होगी। राजा ने सोच-विचार कर आखिर एक लाख मोहरें ब्राह्मण को देकर विदा किया और नौ लाख मोहरें बचा लेना श्रेयस्कर समझा।

प्राणनाथ! यह दृष्टान्त है। इसमें यह बताया गया है कि ब्राह्मण ने अपने बुद्धिकौशल से, राजा को चक्कर में डाल दिया और अपना मतलब बना लिया। ठीक इसी प्रकार आप बातें बनाकर हम भोली अबलाओं को ठग रहे हैं। हम सीधी साधी बालिकाएँ हैं, अतः हमें छल लेना आपके लिए कोई कठिन नहीं है। मगर हमारी दुर्दशा पर जरा विचार कीजिए। दीन-हीन बालिकाओं को निराधार छोड़ भागना क्या सत्पुरुषों के योग्य कर्तव्य है? हमारी आँखों के आँसू क्या आपके वैराग्य रूप ताप को ठंडा नहीं कर सकते? क्या हमारी लाचारी आपके कोमल दिल में करुणा नहीं उपजाती? क्या हमारी नम्रतापूर्ण प्रार्थना को आप लातों से ठुकरा देना उचित समझते हैं? अनेकों के जीवन को धूल में मिलाकर अपने जीवन का सुख प्राप्त करना क्या एक महान् स्वार्थ नहीं है? इस स्वार्थ के कारण क्या आप धर्म का निर्बाध आचरण कर सकेंगे? यह धर्म भी भला किस काम का है, जिसके कारण पाणिगृहीत पत्नियों के साथ अन्यायपूर्ण और निर्दय व्यवहार करना पड़ता है? जिसकी बदौलत माता-पिता की आशाओं पर पानी फेरना पड़ता है और सांसारिक सद्व्यवहारों का लोप करना पड़ता है? यह सब बुराइयाँ कराने वाला धर्म भी क्या सत्पुरुषों

द्वारा आचरणीय है? मगर मैं जानती हूँ कि धर्म ऐसी आज्ञा नहीं देता। वह लौकिक व्यवहारों का सर्वथा विरोधी नहीं है और न किसी के साथ निर्दयतापूर्ण आचरण करने को बाध्य करता है।

जीवनाधार! आपने धर्म के मर्म को समझने का प्रयास नहीं किया। यदि आप एकाग्र होकर, पकड़े हुए हठ को छोड़कर, मन को तटस्थ बना कर सोचें तो आपको स्पष्ट रूप से ज्ञात होगा कि आप धर्म के नाम पर अनुचित व्यवहार कर रहे हैं। हम रो रही हैं। विसूर रही हैं, फिर भी आपके दिल में दया का उद्रेक नहीं होता? सारा परिवार वियोग की संभावना मात्र से रो रहा है। धन्य है स्वामिन्! आपकी दया को, जिसका पालन करने के लिए आप इस प्रकार उतावले हो रहे हैं। आपकी दया का यदि यही असली स्वरूप है तो उसे लाख-लाख मुबारकबाद।

जीवन-धन! आप कृपा कर यह भी तो बताइए कि आप हमें किस कारण त्याग रहे हैं? हम में ऐसा कौन-सा असह्य अवगुण है, जिस कारण आप हमारा परित्याग करना चाहते हैं? क्या हमने आपकी किसी आज्ञा का उल्लंघन किया है? पत्नी का यह कर्तव्य है कि वह पति को सब प्रकार से सुख पहुँचाने का प्रयत्न करे। पति के साथ अत्यन्त विनम्र व्यवहार करे, मुख से कोई वचन ऐसा न कहे जिससे पति के हृदय को चोट पहुँचे। वह पति के जागने से पहले जागे, पति के सोने के बाद सोवे, पति के भोजन करने के पश्चात् भोजन करे। प्रसन्नचित्त होकर पति से वार्तालाप करे। पति हारा-थका जब बाहर से घर में प्रवेश करे तब मधुर व्यवहार से उसकी थकावट को मिटावे। पति की आर्थिक स्थिति का ध्यान रखकर गृह खर्च करे और अपने लिए उसी परिणाम में वस्त्राभूषण की माँग करे। जो बात पति को पसंद हो उसी के अनुसार अपनी रुचि में परिवर्तन कर ले। पति के मित्रों के साथ अच्छा व्यवहार करे और पति के शत्रुओं को अपना शत्रु समझे। तात्पर्य यह है कि वह पति के किसी कार्य में बाधक न बने। सब प्रकार से पति की अनुगामिनी हो। अपने अस्तित्व को पति के अस्तित्व में मिश्रित कर दे। मन-वचन-काय से पति-परायण होकर रहे। अन्य पुरुषों को पिता, भाई, पुत्र तुल्य समझे। पति को कष्ट में पड़ा देखकर उसे सांत्वना प्रदान करे और उचित सलाह देवे।

(क्रमशः)

उपन्यास (११)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- राजा रूपसेन निर्मला को घोड़े पर बिठाकर जंगल से अपने महल में ले आए। उधर सोमदत्त अपनी बहिन के पीछे-पीछे दौड़ते हुए किन्तु बेहोश होकर राजमार्ग पर गिर गया। तभी वहाँ से गुजरते हुए एक नगर सेठ ने उसे धीरज बंधाया और अपने घर ले गया। सेठजी ने सोमदत्त को जंगल में जाकर गायें चराने का कार्य दिया और रहने के लिए महल के पिछवाड़े का स्थान दे दिया। सेठ के यहाँ रहते-रहते सोमदत्त को कई वर्ष बीत गए। एक बार जंगल जाते समय उसे नवजात शिशु मिला। जिसे लेकर वह घर पर आ गया। तब सेठानी ने कहा-

"जहाँ से उठाया है, वहीं रख आ। किसका है, कहाँ से लाया ?"

सोमदत्त ने बताया- "कैसे रख दूँ वहाँ। यह तो वन में एक वृक्ष के नीचे मुझे मिला है। वहाँ रख दूँ तो जंगली जानवर खा जायेंगे। वहाँ किसी भी हालात में नहीं रखूँगा, मैं तो इसे पालूँगा।"

सेठानी चकराकर बोली-"क्या कहा-पालूँगा ? कोई कुत्ते का पिल्ला या बकरी का बच्चा थोड़े ही है जो पालेगा। तू पाल भी सकेगा ? ऐसे छोटे बच्चे का पालन तो माँ ही कर सकती है। तू नहीं पाल सकेगा।"

सोमदत्त बोला- "इसमें क्या कठिनाई है ? दूध पिला दिया, पेट भर गया तो बच्चा अपने आप खेलता रहेगा।"

सेठानी ने समझाने का प्रयत्न किया- "तू कुछ नहीं समझता। बच्चे की सर्दी-गर्मी बरसात आदि से रक्षा करनी पड़ती है। बच्चा तो कोमल फूल होता है, जिसकी रक्षा कुशल माली ही कर सकता है और ऐसा कुशल माली बच्चे के लिए माँ ही होती है।"

"मैं माँ नहीं बन सकता तो मामा तो बन ही सकता हूँ। 'माँ' में एक 'म' है, 'मामा' में दो। अतः इसकी दुगुनी सुरक्षा करूँगा।" सोमदत्त ने दृढ़ स्वर में कह दिया।

सेठजी ने व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके कहा- "सेठानी ! समझाने से क्या लाभ ? सोमू जिद कर रहा है तो पालने दो। अपना क्या जाता है ? हमें तो अपने काम से काम रखना चाहिए। फिर बहन की याद में यह अभी भी रोता है। अब इस

बालक के साथ मन बहलायेगा तो बहन की याद कम हो जायेगी।''

और फिर सोमदत्त से सेठजी ने कहा- ''सोमू ! तेरी इच्छा है तो इस बच्चे को पाल ले; पर ध्यान रखना-कोई गाय भूखी न रह जाय, किसी दूसरी ओर न चली जाय, खो न जाय, किसी हिंसक पशु की शिकार न हो जाय। ऐसा हो गया तो मुझसे बुरा कोई न होगा।''

''आपको कोई भी, किसी भी प्रकार की शिकायत न होगी सेठजी ! मैं आपका सब काम ध्यान और लगन से करता रहूँगा, आप निश्चिंत रहें।'' सोमदत्त ने सेठ को आश्वस्त किया।

सेठ-सेठानी चुप हो गए।

सोमदत्त को एक सहारा मिल गया, दिन काटने का। पहले तो वह वन में दिन-भर अकेला बैठा-बैठा ऊब जाता, लेकिन अब बच्चे के साथ बातें करते-करते, उसे रमाते, खिलाते दिन कब पूरा हो जाता, उसे पता ही नहीं चलता।

सोमदत्त उस बच्चे को बहुत प्यार करता था। उसे नहलाता, उसके कपड़े धोता, उससे प्यार भरी बातें करता, जब बच्चे को नींद आने लगती तो उसे एक कपड़े की झोली बनाकर वृक्ष की डाल से लटका देता। लोरी भी सुनाता।

अकेले में जब कभी बैठता सोमदत्त, तो उसके हृदय से एक ही आवाज आती- ''यह मेरी बहन निर्मला का पुत्र है, यह मेरा भान्जा है, मैं इसका मामा हूँ'', और फिर वह सोचने लगता- लेकिन मेरी बहन का पुत्र यहाँ वन में कैसे आ गया ? बहन कहाँ चली गई ? फिर विचार आता-वह व्यक्ति जो बहन को घोड़े पर बिठाकर ले गया था, उसी ने मेरी बहन से विवाह कर लिया होगा। इस विचार से उसके हृदय में आशा की किरण चमकती-मेरी बहन भी जरूर इसी शहर में है और वह एक दिन जरूर मिलेगी। इसी तरह छह महीने निकल गये। एक रात को बच्चा रोने लगा। सोमदत्त ने उसे बहुत बहलाया; लेकिन वह बहला ही नहीं। सोमदत्त लोरी सुनाने लगा-

मुन्ने मत रो रे झुलाये तेरा मामा।
सो जा सो जा सुलाये तेरा मामा।
हँस दे हँस दे हँसाये तेरा मामा।
चुप रह लोरी सुनाये तेरा मामा।
प्यारा-प्यारा बच्चा अब नहीं रोयेगा।
रात हो गई है राजा मुन्ना सोयेगा।।

आधी रात का नीरव, शांत समय। लोरी का स्वर दूर-दूर तक फैलता जा रहा

था। सोमदत्त मधुर स्वर में इस लोरी को गाता जा रहा था, जिससे मुन्ना चुप होकर सो जाय।

सोमू की झौंपड़ी से सटा हुआ राजमहल का आखिरी कक्ष। उसी में निर्मला अपने दुःख के दिन काट रही थी। रात-रात सोचती, कभी अपने भाग्य को कोसती, कभी भाई सोमदत्त की याद करती। इस रात उसे नींद नहीं आ रही थी। ठंडी रात में हवा के झौंकों के साथ लोरी के स्वर निर्मला के कानों तक पहुँचे। वह चौंक उठी-यह स्वर तो मेरे भाई सोमू का है। ध्यान से सुना-सोमू का ही स्वर था। विश्वास हो गया। शंका की गुंजाइश नहीं रही।

फिर सोचा-"यह किसे लोरी सुना रहा है। अभी इसकी आयु तो छोटी है। इसका तो कोई बच्चा हो ही नहीं सकता। तो क्या किसी अन्य के बच्चे को चुप कर रहा है?"

ऊँह ! बच्चा किसी का भी हो, मुझे क्या; पर स्वर तो मेरे भाई सोमू का ही है। निर्मला ने सोचा और अपने बिछड़े भाई से मिलने के लिए उसका दिल तड़प उठा।

स्वर की दिशा में कान लगाये तो जान पड़ा- महल की चार-दीवारी के बाहर, किन्तु नजदीक से ही स्वर आ रहा है।

लोरी का स्वर पुनः उसके कर्ण-कुहरों में आया-

मत रो, मत रो, प्यारे बच्चे मत रो !
मेरी बहन निर्मला आयेगी।
दूध पिलायेगी, लाड़ लड़ायेगी।
प्यार से दुलरायेगी, मीठी लोरी गायेगी।।

बच्चा अब भी चुप नहीं हुआ तो लोरी का स्वर आगे बढ़ा-

आ जा, मेरी बहन निर्मला आ जा।
मेरा राजा भैया बुलाता है आ जा।
भूख लगी है मेरे राजा भैया को आ जा।
मीठा दूध पिला जा, आ जा मेरी बहना, आ जा।

अपना नाम सुनकर तो निर्मला को पूरा विश्वास हो गया कि मेरा भाई सोमू ही किसी बच्चे को चुप करा रहा है, लेकिन बच्चा चुप नहीं हो रहा है। बच्च को नींद नहीं आ रही है।

बहन के लिए भाई बहुत प्यारा होता है। बहन-भाई का निश्छल, पवित्र प्यार तो संसार-भर में प्रसिद्ध है। निर्मला को भी अपने भाई से असीम प्यार था। उसके हृदय

में भाई से मिलने की हूक उठी, लेकिन परकटी चिड़िया की भाँति तड़पकर रह गई। उसे अपनी दशा पर रोना आ गया, आँसू बह उठे-

"हाय माँ ! तू हम बहन-भाइयों को छोड़कर चली गई। विमाता ने बहुत दुःख दिया, घर से निकाल दिया। माँ तेरे आँख फेरते ही पिता ने भी आँखें फेर लीं। दूसरी माँ आई तो पिता भी दूसरे हो गये। दोनों भाई-बहन जंगल-जंगल भटके और यह राजा भी मुझे लाया तो कैसे-कैसे वायदे किये थे. सब्जबाग दिखाये थे, लेकिन सब मिट्टी में मिल गये। इस राजा ने मेरी दशा दासियों से भी बुरी कर दी। राजा ने मुझसे कहा था- "तेरे भाई की खोज करके तुझसे अवश्य मिला दूँगा। लेकिन सब भूल गया। बड़ा धोखेबाज निकला। मेरे भाई से इसने मुझे मिलाया ही नहीं। बड़ा स्वार्थी है। और निर्मला अपने भाई की याद कर-करके रात भर आँसू बहाती रही, जल बिन मीन सी तड़पती रही।"

जो दासी नित्य प्रातः उसे उड़द के बाकुले देने आती थी उसने निर्मला की सूजी आँखे देखी तो सहानुभूति भरे स्वर में पूछा- "रानीजी ! आज तो आपकी आँखें सूजी हुई हैं। ऐसा मालूम होता है आप रात भर सोई नहीं, जागती रहीं।"

रानी निर्मला से इस दासी को बहुत सहानुभूति थी।

निर्मला ने कहा- "मेरा एक काम करेगी ?"

"जरूर करूँगी, आप बताइये।" दासी ने आश्वासन दिया।

निर्मला ने बताया- "इस महल की दीवार के बाहर पास ही मेरा भाई रहता है। नाम है उसका सोमदत्त। उसकी आयु लगभग बारह वर्ष होगी। उससे कहना-तेरी बहन निर्मला बुला रही है।"

दासी ने जाकर रानी निर्मला का समाचार सोमदत्त को दिया तो खुशी से वह नाच ही उठा। मेरी बहन यहीं है, रानी बन गई है। सोमू तो उछल पड़ा, उसके पैर धरती पर नहीं टिक थे। वह दौड़ा-दौड़ा महल के द्वार पर आया, अन्दर जाने लगा तो प्रहरी ने रोका- "कहाँ चला जा रहा है, अन्दर ? ठहर जा यहीं।"

प्रहरी का कठोर शब्द सुनकर सोमदत्त सकपका गया, वहीं का वहीं खड़ा रह गया, कुछ बोल ही न सका।

प्रहरी ने ही कड़ककर कहा- "खड़ा क्यों है ? महाराज की आज्ञा बिना महल में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता। पहले महाराज से आज्ञा लेकर आ।"

राजा का नाम सुनते ही सोमदत्त का साहस जबाब दे गया, निराश हो गया। राजा के सामने जाने में तो बड़े-बड़ों की हिम्मत नहीं पड़ती, वह तो बालक ही था।

अपना-सा मुँह लटकाये लौट गया। रास्ते में वही दासी मिली तो सोमदत्त ने उससे कहा- "अभी तो मैं गायें चराने जंगल में जाऊँगा। बहन से कह देना-रात के समय महल के नीचे खड़ा होकर बात कर लूँगा।"

दासी ने यही बात निर्मला को कह दी।

दोनों बहन-भाइयों का दिन बड़ी मुश्किल से कटा। सोमदत्त सेठ की गायें चराने जंगल को गया तो सही, लेकिन उसका मन नहीं लगा। दिन पहाड़ हो गया। बार-बार सूरज की ओर देखता कि कब दिन ढले, घर जाऊँ, कब रात हो और मैं बहन से बात करूँ।

निर्मला की भी यही दशा थी। आज उसकी आँखों में आँसू नहीं थे, प्रतीक्षा थी- अपने छोटे भाई से मिलने की, भाई से बात करने की, उसका सुख-दुःख जानने की। निर्मला अपना दुःख भूलकर, भाई का दुःख जानने को व्याकुल थी।

दिन डूबा। प्रहर रात भी निकल गई। नीरवता छा गई। निर्मला इसी इन्तजार में थी। झरोखे में आ खड़ी हुई, आवाज दी- "सोमू!"

सोमदत्त भी झरोखे के नीचे ही खड़ा था, बोला- "हाँ, निर्मला दीदी!"

"कहाँ चला गया था तू? राजा ने तुझे खोजने के लिए घुड़सवार भेजे तो तू मिला ही नहीं।"

"मेरी खोज में राजा ने घुड़सवार क्यों भेजे?"

सोमदत्त के इस प्रश्न पर निर्मला ने बताया- "जो व्यक्ति मुझे घोड़े पर बिठाकर लाया था, वह यहाँ का राजा रूपसेन है। मेरे कहने से ही उसने खोजी सवार भेजे थे।"

"तो तुम यहाँ की रानी बन गई हो दीदी! अच्छी तो हो ना?"

सोमदत्त के इस कथन पर निर्मला का दिल हूक उठा। आँखों में आँसू भर आये। आँसुओं का वेग रोककर बोली- "तूने बताया नहीं, कहाँ चला गया था?"

सोमदत्त ने अपने बारे में बताया- "बहन! जब तुम्हें घोड़े पर सवार करके वह व्यक्ति भागने लगा तो मैं पेड़ से उतर कर घोड़े के पीछे भागा, तुझे आवाज भी दी पर तूने सुनी ही नहीं। मैं भागता-भागता बेहोश होकर गिर पड़ा। इसी नगर के सेठ ने मुझे उठाया और अपने यहाँ पर ले आये। यह देख, पास की हवेली मेरे सेठजी की ही है। दीदी! मैंने तुझे बहुत खोजा, तू नहीं मिली। अब मैं उसकी गाय चराता हूँ। समय गुजर रहा है। लेकिन तेरी याद मुझे हर पल आती रही। तू तो रानी बन गई, मेरी याद नहीं आई होगी।"

(क्रमशः)

प्रेरक-प्रसंग

हिंसा की खिलाफत जरूरी

डॉ. दिलीप धींग

हिंसा और क्रूरता के कई रूप हैं। एक रूप पिछले दिनों सरकारी योजना में प्रकट हुआ। 12 जून, 2008 की राजस्थान पत्रिका(उदयपुर) के अंक में 'सैलानी लेंगे मत्स्याखेट का लुत्फ' शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ। समाचार के अनुसार झीलों की नगरी उदयपुर में देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये सरकार मनोरंजनार्थ मत्स्याखेट के लिए लाइसेंस जारी करेगी। लाइसेंस के साथ उन्हें कांटा-डोर भी दिये जाएंगे। जिनसे किनारे बैठकर या नौका विहार करते हुए कोई भी व्यक्ति तड़फती-मरती मछलियों को देखने का मजा ले सकेगा। इस योजना के अन्तर्गत झील में मत्स्याखेट प्लेटफार्म तथा दो सीटों की विशेष नावें भी चलाने का प्रावधान रखा गया। मनोरंजन के लिए मत्स्याखेट की इस क्रूर योजना को 'पर्यटकों को लुभाने की अनूठी पहल' तथा 'आम लोगों व सैलानियों के लिए नई सहूलियत' जैसी भ्रामक शब्दावली के साथ प्रस्तुत किया गया। सरकार ने इस योजना को 'गेम बीट' नाम दिया तथा इसके लिए 10 लाख रुपये स्वीकृत किये। शुरूआत में इसके लिए बड़ी झील को आरक्षित किया गया।

मैं विचार में पड़ गया। इससे नागरिकों में रही-सही संवेदनाएँ भी नष्ट हो जाएँगी। शान्त सुन्दर झीलें हिंसा के अड्डे बन जायेंगी। स्वस्थ सामाजिक पर्यावरण संकट में पड़ जाएगा तथा प्रदेश का धार्मिक पर्यटन दुष्प्रभावित होगा। जिस किसी ने यह खबर पढ़ी, क्रूरता के इस खुले प्रदर्शन की योजना पर सब हैरान व व्यथित हुए। पर विरोध कौन करे? अधिकतर लोग ऐसे मामलों में कन्नी काट जाते हैं। टका-सा जवाब देते हैं- 'अपने क्या लेना-देना, जिसकी जो जाने।' आज हिंसा इसलिए भी हावी है कि उचित समय पर सुनियोजित व संगठन तरीके से उसकी खिलाफत नहीं होती है। मैंने दूरभाष पर लोगों से इस समाचार पर राय जानी तो सबने इसे बिल्कुल ही गलत बताया। यहाँ तक कि सामिषभोजी लोगों ने भी इसे अनुचित माना।

आरंभिक तौर पर इस योजना के खिलाफ कई तथ्यों व तर्कों के साथ मैंने समाचार पत्रों में एक विज्ञप्ति जारी कर दी। साथ ही जैन युवा फेडरेशन की ओर से उदयपुर कलेक्टर को एक ज्ञापन दिया कि 'गेम बीट' को रद्द कर देना चाहिये। हमने यह भी अनुरोध किया कि अभयारण्य की तर्ज पर झील-जलाशयों को भी अभय

(आखेट-मुक्त) घोषित किया जाना चाहिये। जंगली युग के प्रतीक आखेट की वजह से संसारभर के सैकड़ों जलीय व स्थलीय जीव-जन्तुओं तथा पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ लुप्त हो गईं और अनेक प्रजातियाँ आज विलुप्ति के कगार पर हैं। सरकार को चाहिये कि जैव-विविधता, पारिस्थितिकी सन्तुलन तथा लोगों में प्रकृति-प्रेम बनाए रखने के लिए वह इस हिंसक योजना को वापस ले ले।

नागरिकों को हमारा विरोध तर्कसंगत लगा। मैंने दूरभाष पर तथा व्यक्तिशः मिलकर करीब दर्जनभर संगठनों के पदाधिकारियों को 'गेम बीट' का विरोध करने के लिए अनुरोध किया। विरोध के लिए ज्ञापन और विज्ञप्ति का मैटर भी लोगों को बनाकर दिया। इससे विरोध का उद्देश्य भी स्पष्ट हो गया और विरोध करने वालों को लिखने-कहने के लिए पर्याप्त सामग्री भी मिल गई। यह कार्य हमने तुरन्त किया और तुरन्त ही लोगों से आग्रह करके उनके संगठन व उनके नाम से विज्ञप्ति व ज्ञापन देने के लिए आग्रह किया। जैन समाज के साथ ही अन्य समाजों का भी गेम बीट के विरोध में पर्याप्त समर्थन मिला।

जिला कलेक्टर के अलावा मजिस्ट्रेट, गृहमंत्री तथा पर्यटन व मत्स्य विभाग तक हमने हमारी आवाज पहुँचाई। हम शीघ्र ही सफलता के करीब पहुँच गये। चौथे दिन ही 16 जून 2008 को सरकार ने मनोरंजन के नाम पर मत्स्याखेट की गेम बीट योजना को निरस्त कर दिया। इस पर मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक ने कहा- ''बात शुरू होने से पहले ही विरोध के कारण खत्म कर दी गई है।'' इस सफलता से अहिंसा के पक्ष में एक सकारात्मक वातावरण बना। अहिंसा प्रेमियों का मनोबल बढ़ा।

वर्ष 2008 में अहिंसा के लिए मेरे उल्लेखनीय सफल प्रयासों को जिनवाणी ने फरवरी-08 तथा जून-08 के अंकों में 'नये साल का इनाम' तथा 'साल का दूसरा इनाम' शीर्षक से प्रकाशित किया। अहिंसा की इस जीत को मैं 'साल का तीसरा इनाम' मान रहा हूँ। अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए हम जितना जिस रूप में कर सकें, हमें निष्ठापूर्वक करना चाहिये। आचार्य हस्ती ने कहा था- ''अहिंसा की सेवा भगवान् की सेवा है। जो अहिंसा की सेवा करेगा, वह समाज और विश्व की सेवा करेगा। हिंसा घटने से समस्त संसार की भलाई होगी; लोगों में परस्पर प्रेम बढ़ेगा; आपस में शान्ति तथा सौमनस्य का प्रादुर्भाव होगा।''[१]

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-02(राज.)

१. गजेन्द्र सूक्ति सुधा, पृ.-५

नारी-स्तम्भ

ये जीमण, ये मायरा : कहाँ है इनका दायरा?

आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

चातुर्मास चल रहा है। जिनवाणी की अमृत वर्षा हो रही है। हमारे लिये आत्म-जागरण का, आत्म-शोधन का, आत्म चेतना का यह मंगल प्रभात है। संतों की प्रेरणा से देश के हर कोने में तपस्या का न टूटने वाला सिलसिला चल रहा है। कोई मासखमण, कोई 21 तो कोई 15 की तपस्या कर रहे हैं तो कोई अठाई की तपस्या से ही संतुष्ट हैं। कोई सजोड़े तेले की तपस्या कर खुश नजर आ रहे हैं।

हमारे जैसे लोग जो तपस्या नहीं कर पा रहे हैं, वे भी तपस्वी भाई-बहिनों को देखकर उनकी तपस्या की अनुमोदना करते हुए खुश हो रहे हैं। मन में मोद बना रहे हैं। सारांश यह है कि सभी जगह आनन्द तथा उमंग है। श्रद्धा एवं भक्ति से माहौल सराबोर है। प्रमुदित करने वाला है। हम तपस्वी भाई-बहिनों का, उनके त्याग का, उनकी सहनशीलता का, समभाव का अभिनन्दन करते हैं।

गुरुदेव अपने प्रवचनों में तपस्या क्या है, तप क्यों किया जाता है, तप में कैसी जीया जाता है, आदि का बोध कराते रहते हैं, समझाते रहते हें। हम भी तपस्या के महत्त्व को समझ कर तप करेंगे तो इहंकार का विसर्जन होगा। हम सरल बनेंगे तो शांति, विनय,संतोष, करुणा और सत्य का जीवन में समावेश होगा। चेहरे पर मधुर मुस्कुराहट खिलखिलाती रहेगी। हर्ष तथा विषाद के क्षणों में भी हम समभाव में रहकर जीना सीख जायेंगे। अच्छे संस्कारों का सर्जन होगा। कर्मों की निर्जरा होगी। आत्मा पवित्र बनेगी। पर आजकल उपर्युक्त गुणों की झलक यदाकदा ही देखने का यौभाग्य प्राप्त होता है। नजारा, कुछ दूसरा ही नजर आता है। हमने अपनी आदतानुसार तप-त्याग को भी जानते, अजानते अपने प्रपंजों में समेट लिया है।

हमने त्याग की जगह आडम्बर एवं प्रदर्शन को अपना लिया है। लगता है सद्गुणों को अपने से कोसों दूर कहीं अरण्य के एकान्त में बैठा दिया है। ऐसा लगता है कि तपस्या के साथ जीमण करना और मायरा लेना, ये दो काम जुड़ गये हैं। जीमण की तैयारियों में रात-रात भर भट्टियाँ जलती हैं, छोटे-छोटे जीवों का संहार होता है।

ज्ञानी गुरुजन भी उपदेशों में बारम्बार यही फरमाते हैं, सावधान रहने की

सीख देते रहते हैं। परन्तु निर्णय तपस्वी भाई-बहिनों को या उनके परिवार वालों को ही करना है- जीमण करें या नहीं करे, छोटा करें या बड़ा करें? कुछ लोग मायरे की पतंग को खुले आकाश में बहुत ऊँचाई तक ले गये हैं, जहाँ पहुँचना सभी के बस की बात नहीं है। अपने समाज में सभी आजाद हैं, कोई रोकने, टोकने वाला नहीं है। बिरादरी का कोई अंकुश नहीं है। जबकि आजकल अन्य जाँत-पाँत वालों का संगठन मजबूत हो रहा है। उनके अपने नियम हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य होता है। हमारा समाज भी इस विषय में चिन्तन करे।

अपने ही परिवार की एक अंग रही हुई बाई जब तपस्या करती है तो सभी को खुशी होती है। तपस्या की अनुमोदना करना, उसकी खुशी में बाई को कुछ देने की बात तो गृहस्थ जीवन में समझ में आती है, पर सास-ससुर, जेठानी, देवरानी, ननद, बाल-गोपाल सभी को कुछ देकर मायरा भरना हमारी समझ के बाहर है। बचपन की एक घटना मेरे मानस को अभी तक झकझोर रही है। एक बाई की तपस्या सुखसाता से चल रही थी। अपनी भक्ति की शक्ति से आगे बढ़ रही थी। उसे मालूम हुआ कि उसका भाई मायरा भरने की जोगवाई जुटाने में, कोशिशों के बावजूद व्यवस्था नहीं कर पा रहा है तो 7 की तपस्या पर पारणा कर लिया। यह एक सच्चाई है।

मायरा भरने के रीति-रिवाजों ने ऐसी कई बहिनों को अपनी तपस्या अधूरी छोड़ने पर विवश कर दिया होगा, मजबूर कर दिया होगा। यह नौबत मत आने दीजिये। हम श्रावक-श्राविकाएँ गुरु भगवंतों के समक्ष दोनों हाथ जोड़कर मायरा नहीं लेने की, मायरा नहीं देने की शपथ ग्रहण करें।

एक बार फिर से दोहराना चाहता हूँ-

ये जीमण, ये मायरा, कहाँ तक है इनका दायरा?

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चैन्नई-600079

क्षमा-याचना

'जिनवाणी' पत्रिका के समस्त पाठकों एवं लेखकों से हमारा नियमित सम्बन्ध रहता है। हमारी ओर से रही भूल के कारण आपके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। हम अपनी भूल का परिमार्जन करते हुए आपसे निर्मल हृदय से क्षमा याचना करते हैं। आशा है आप क्षमा करेंगे।

-सम्पादक एवं सह सम्पादक जिनवाणी परिवार

युवा-स्तम्भ

तलाशें सम्यक् जीवनशैली

श्री पदमचन्द गाँधी

आधुनिकयुग की दौड़भाग की जिन्दगी तथा बेतहाशा दौलत-प्राप्ति की लालची प्रवृत्ति से व्यक्ति ने विश्व की दूरियों को तो कम कर दिया है, लेकिन अपने आपको अतिव्यस्त एवं संकुचित कर लिया है। इस प्रकार की वृत्ति के कारण व्यक्ति अपने भीतर कई प्रकार की बीमारियों को पाल चुका है, जिसका मूल कारण है बढ़ता हुआ 'अतिवाद'। आज व्यक्ति सभी प्रकार की सामाजिक, व्यापारिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक सीमाओं के तट-बन्धन को तोड़ता हुआ आगे बढ़ता जा रहा है। मानवीय मूल्य एवं संवेदनशीलता गौण हो चुकी है। इस 'अतिवाद' ने व्यक्ति की जीवनशैली(Life Style) को अव्यवस्थित (Disorder) कर दिया है। व्यक्ति को जो काम करना चाहिए वह नहीं कर रहा है। उसकी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति की स्थिति में असन्तुलन बढ़ता जा रहा है। यही असन्तुलन व्यक्ति की परेशानी का तथा असंयमित जीवन शैली का कारण बन चुका है।

यदि व्यक्ति सामर्थ्य से अधिक काम करता है तो शरीर एवं मन इस 'अधिकता' को लम्बे समय तक सहन नहीं कर पाता है। यदि वह सामर्थ्य से कम काम करता है तो व्यक्ति प्रमादी एवं आलसी तथा नकारात्मक सोच वाला बन जाता है। आज चाहे जवान, बूढ़ा या बालक, स्त्री या पुरुष कोई भी हो, अपनी जीवन शैली को असंयमित कर चुका है। व्यक्ति आधुनिक दौर के अनुसार दैनिक चर्या की क्रमबद्धता को भूल चुका है। नियमित समय पर होने वाला भोजन, आराम, काम, व्यापार, अध्ययन, गृहकार्य इत्यादि अनिश्चित समय में हो रहे हैं। देर से उठना, देर से सोना, समय पर भोजन नहीं करना, व्यायाम नहीं करना, धर्मध्यान नहीं करना, परिवार को समय नहीं देना, समय रहते काम नहीं करना, बिना योजना के चलना, अनुशासनहीनता तथा आचार संहिता के विपरीत कार्य करना इत्यादि ऐसे अनेक कारण हैं, जो जीवन शैली को अव्यवस्थित कर रहे हैं। जीवन शैली में असंयम एवं अनियमितता आने से मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं।

'सम्यक्' शब्द का अर्थ है ठीक-ठीक, या सामर्थ्य के अनुरूप शक्ति का

अनुकूल या यतनापूर्वक उपयोग। जितनी क्षमता है उतना ही कार्य करना उचित है, उससे कम एवं अधिक कार्य करना असंतुलन को बुलावा देना है। सत्त्वगुणी प्रवृत्ति के लोग इस प्रकार का सन्तुलन बनाने में सक्षम होते हैं। वे वर्तमान में जीवन जीते हैं तथा यथार्थ को स्वीकार करते हैं। वे तमोगुणी एवं रजोगुणी के साथ भी संतुलन बनाकर जीवन जीते हैं। सम्यक् जीवन हेतु भगवान् ने पंच महाव्रत एवं बारह अणुव्रत धारण करने का प्रावधान किया है। असन्तुलन का मूल कारण 'आसक्ति' है, क्योंकि इसी के कारण व्यक्ति मिथ्यादृष्टि होकर भोगविलास एवं इन्द्रिय सुखों की वासनाओं में फंसकर कर्म जनित भार से आत्मा को भारी बनाता है तथा जीवन को असंयमित बना लेता है। सम्यक्दृष्टि साधक अनासक्त बनकर अपने जीवन की यात्रा तय करता है तथा सम्यक् जीवन शैली अपनाता है। वह व्रत-नियम एवं प्रत्याख्यान को महत्त्व देता है तथा सम्यक् आचरण को अपनाता है।

रजोगुणी प्रकृति के लोग क्रियाशील होते हैं। वे कभी अपने सामर्थ्य से भी अधिक कार्य करने लगते हैं। आज देखने में आता है कि अच्छे आर्थिक 'पैकेज' के कारण व्यक्ति अति महत्त्वाकांक्षी बन गया है। वह अपनी क्षमता से अधिक कार्य करने लगा है। इससे मानसिक एवं शारीरिक थकान उत्पन्न होने से दीर्घकालीन क्षमता क्षीण हो सकती है। क्षमता से अधिक काम करने वाले व्यक्ति कम समय में अधिक से अधिक काम कर परिणाम पर ध्यान देने वाले अति महत्त्वाकांक्षी जन होते हैं। इस प्रकार के लोग भविष्य की कल्पनाओं में दौड़ लगाते हैं, वर्तमान को नज़र अन्दाज करते हैं। ऐसे लोग आशानुकूल परिणाम न मिलने पर या असफल होने पर अथवा कार्य पूर्ण न होने पर कुंठित हो जाते हैं। चिड़चिड़े हो जाते हैं तथा अपने को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए दूसरों को नकारते हैं। ऐसे लोग अपना शारीरिक एवं मानसिक सन्तुलन बिगाड़ लेते हैं तथा रोग-शोक के घेरे में आकर अपनी जीवन शैली बिगाड़ लेते हैं। ऐसी प्रवृत्ति के लोग आवश्यकता से अधिक सक्रिय होते हैं। वे कम समय में अधिक से अधिक परिणाम की चिन्ता करने वाले होते हैं। ऐसे लोग शीघ्र ही 'हाइपर एक्टिव' हो जाते हैं, जिससे वे मानसिक दबाव, चिन्ता,तनाव आदि कई बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार की जीवन शैली वालों का मन अस्थिर एवं चंचल होता है। वे किसी कार्य को पूर्ण करने से पहले ही दूसरे को प्रारम्भ करने की सोचते रहते हैं। ऐसे लोगों की सफलता भी संदिग्ध रहती है।

जो लोग अपने सामर्थ्य से कम काम करते हैं, वे तमोगुणी प्रवृत्ति के प्रतीक होते हैं। इनकी प्रवृत्ति काम नहीं करने की होती है, जिनके कारण वे आलसी, प्रमादी एवं आरामतलबी बन जाते हैं। इनकी सोच नकारात्मक होने से ये भावी समस्याओं से भयभीत हो जाते हैं, जिन्हें केवल निराशा एवं हताशा ही हाथ लगती है। ऐसे लोग 'हाइपोएक्टिव' कहलाते हैं, जिससे उनका शरीर सुस्त पड़ जाता है और मन में दुर्गुणों, व्यसनों एवं नकारात्मक सोच का जमघट रहता है। ऐसे लोग स्वप्न दिखाने वाले खयाली पुलाव एवं बड़ी-बड़ी बातें बनाने में आनन्द प्राप्त करते हैं। ये अपना जीवन व्यतीत करने में व्यसन का आश्रय लेते हैं। जीवन से इतने ऊब जाते हैं कि इन्हें जीवन दुःखों का घर एवं यातनापूर्ण लगने लगता है। कभी-कभी ये लोग आत्महत्या की राह पर भी चल पड़ते हैं।

सम्यक् जीवन शैली से शरीर एवं मानसिक स्वास्थ्य का ह्रास नहीं होता है, वरन् गुणात्मक विकास होता है। वह लक्ष्य की ऊँचाइयों तक पहुँच जाता है। वह किसी भी कार्य को सहजता पूर्वक कर लेता है। वह जानता है कि जीवन का रहस्य संघर्षों से भागना नहीं वरन् उनका डटकर मुकाबला करना है। ऐसे व्यक्ति कभी हताश एवं निराश नहीं होते हैं। संतुलन के कारण ही वे सभी कार्यों को समय पर मनोयोगपूर्वक सम्पन्न करते हैं। ये लोग वर्तमान को श्रेष्ठ मानकर उसका सदुपयोग करते हैं। उसके परिणाम पर ध्यान नहीं देते हैं। योजनाबद्ध रीति से एवं प्राथमिकता के आधार पर जीवन शैली अपनाने पर मानसिक एवं शारीरिक रोगों की भी सम्भावना कम रहती है।

सम्यक् जीवन जीने वालों की स्थिति एक चन्दन के टुकड़े के समान होती है, जो हरे भरे वृक्ष के रूप में दुनियां को महका देते हैं, काटने पर कुल्हाड़ी को सुगन्धित करते हैं, सूखने पर भी सौरभ देते हैं, घिसने पर सुरभि छोड़ते हैं, साथ में शीतलता प्रदान करते हैं। सम्यक् जीवनशैली सत्य का मार्ग प्रशस्त करती है, व्यक्ति को सत्त्वगुणी बनाती है तथा 'आसक्ति' से दूर रखती है। यह हमारे शरीर एवं मानसिकता में सन्तुलन बनाते हुए कई प्रकार के रोगों से निजात दिलाती है। एक शायर ने कहा है-

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिलशाद तूं।
जब न हो दुनियां में तो दुनियां को आए याद तूं।।

-25, महेश नगर विस्तार 'बी', बैंक कॉलोनी, गोपालपुरा, जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

देना भी सीखें

श्री रामविलास जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 10 अक्टूबर 2008 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक भिखारी था। रोज सुबह होते ही निकल पड़ता कंधे पर झोला लटकाए, जिसमें चावल के कुछ दाने होते और साथ में गिने-चुने कुछ सिक्के। वह दिनभर द्वार-द्वार भटकता। कोई तो उसे खरी-खोटी सुनाकर दुत्कार देता और कोई दया करके सिक्का या कुछ खाना उसके झोले में डाल देता। उसकी जिन्दगी बस इसी तरह कट रही थी।

एक दिन उसकी किस्मत का तारा चमका। उस दिन उसके कदम सहसा उसे राजमार्ग पर ले गए। सामने से धूल उड़ाता हुआ सम्राट् का रथ आ रहा था। यह देखकर भिखारी मन ही मन बहुत खुश हुआ। सोचा वाह! आज तो दाता के स्थान पर स्वयं सम्राट् हैं। इनके आगे झोली फैलाऊँगा तो अवश्य ही सोने-चाँदी के सिक्कों की वर्षा होगी। मेरी गरीबी के कष्ट भरे दिन समाप्त हो जायेंगे। सच है मिलता है तो छप्पर फाड़ कर मिलता है। वह आशाओं के पुल बाँध ही रहा था कि राजा का रथ उसके बिल्कुल समीप आकर रुक गया। सम्राट् स्वयं रथ से नीचे उतरा और उसके करीब आकर खड़ा हो गया। वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा हुआ सम्राट् को देखता ही रह गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि- जिससे, मिलने के लिए सेठ-साहूकार तक कतारों में खड़े रहते

हैं, आज वह सम्राट् खुद मेरे पास चलकर क्यों आया है?

वह सम्राट् से अपेक्षा कर रहा था कि सम्राट् आज उसे निहाल कर देंगे, मालामाल कर देंगे, किन्तु हुआ एकदम उलटा। सम्राट् ने उसके आगे अपने हाथों की अंजलि फैला दी और कहा- ''ज्योतिषियों की गणना के अनुसार राज्य पर एक महासंकट आने वाला है। इससे उबरने का एक ही उपाय है। वह यह कि सुबह मार्ग से जाते समय जिस व्यक्ति से मेरी सर्वप्रथम भेंट हो, मैं उससे भिक्षा माँगू। इसलिए सबके कल्याण के लिए, राष्ट्रहित के लिए मैं इस राज्य का सम्राट् तुमसे भिक्षा माँग रहा हूँ। जो भी देना चाहो, स्वेच्छा से मेरी अंजलि में डाल दो, मुझे स्वीकार होगा।'' भिखारी ने जैसे ही यह सुना, वह दो कदम पीछे सरक गया। उसे मानो साँप सूँघ गया। उसने कसकर अपने झोले को पकड़ लिया। आज तक तो उसने सदा माँगा ही माँगा था। कुछ देना तो उसकी फितरत में नहीं था। मन ही मन बोला- ''अरे यह क्या बात हुई? भला यह कैसा सम्राट् है? कुछ देना तो दूर, उलटा मुझ से ही माँग रहा है- पर, मना भी कैसे करूँ,दंड दे दिया तो?''

दंड के भय से भिखारी ने झोले में अपना हाथ डाला और सामग्री को टटोलने लगा। मन से फिर आवाज आई खून पसीने की कमाई है। ऊबड़-खाबड़ रास्तों में एडियाँ घिसघिस कर एक द्वार से दूसरे द्वार पर भटक-भटक खरी खोटी सुनने के बाद कहीं जाकर थोड़ा बहुत मिला है। उसमें से भी यदि दे दिया,तो मेरे पास क्या बचेगा? उसने झट से अपना हाथ झोले से बाहर निकाला। फिर दिल पर पत्थर रखकर एक दाना सम्राट् की अंजलि में डाल दिया। दाना लेकर सम्राट् के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। वह रथ पर सवार होकर चल दिया। अब उसे राज्य पर आया संकट दूर हो जाने का विश्वास हो गया। जहाँ भिखारी देने में तत्पर हो, भला वहाँ संकट कैसा? भिखारी रथ की ओर देखता रहा। रथ आँखों से ओझल हो गया। थोड़ी देर में भिखारी ने झोले में हाथ डाला और देखा कि चावल स्वर्ण के हो गये। दिन-दूनी, रात चौगुनी गति से वह भिखारी मालदार हो गया।

-सेवानिवृत अध्यापक, सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के पास,
खिड़की दरवाजा, अलीगढ़-304023 टोंक(राज.)

प्रश्न:-

1. सम्राट् को देखकर भिखारी क्यों खुश हुआ?
2. सम्राट् में राष्ट्रहित की भावना को प्रकट करने वाला प्रसंग लिखिये।
3. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिये- 1. छप्पर फाड़ कर देना, 2. साँप सूँघना, 3. दिल पर पत्थर रखना, 4. दिन-दूनी रात चौगुनी।
4. अभिप्राय बताइए- किंकर्तव्यविमूढ, राजमार्ग, अंजलि, ओझल, मालदार।
5. प्रश्न में आए मुहावरों के अतिरिक्त कथा के मुहावरों को लिखिए।
6. भिखारी के चावल स्वर्ण के क्यों हो गए?

बाल-स्तम्भ [जुलाई-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'निराला स्वप्न' कहानी के प्रश्नों के उत्तर २८ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	कानन जैन-जोधपुर	१९
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	चन्द्रेश मेहता-जोधपुर	१८.७५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	सेजल भंसाली-जलगाँव	१८.५०
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	मिली छाजेड़-समदड़ी	१८
	अक्षिता जैन-जोधपुर	१८
	लक्ष्मी जैन-अलीगढ़	१८
	नरेश चंद जैन-नदबई	१८
	सिद्धार्थ जैन-मालपुरा	१७.५०

जिनवाणी में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों का शुल्क निम्न प्रकार से है :-

(१) आवरण पृष्ठ रंगीन(भीतर), प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पृष्ठ वार्षिक रुपये ५०,००० (२) आवरण पृष्ठ अन्तिम वार्षिक रुपये १,००,००० (३) ब्लैक एण्ड व्हाइट पूरा पृष्ठ वार्षिक रुपये २५,००० (४) आधा पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाइट वार्षिक रुपये १५,०००

स्वानुभव

मृत्यु से न भयभीत हों हम

श्री भीकमचन्द गोलेच्छा(बाड़मेर वाले)

इस दुनिया के इतिहास में आज तक ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो जन्म के बाद इस भौतिक शरीर में अमर रह सका हो। कुदरत के इस नियम का स्वयं राम, कृष्ण, गौतम, बुद्ध और महावीर भी उल्लंघन नहीं कर सके। जब मृत्यु आती है तो कोई बहाना बनाकर ले जाती है, जैसे- दुर्घटना, गोली, कैन्सर आदि। मौत को तो सिर्फ बहाना चाहिये और यह मौत दो बातों पर हँसती है। एक तब जब डॉक्टर मरीज को कहता है कि तुम निश्चिन्त रहो, मैं जो हूँ ना, और दूसरी तब जब किसी के मरने पर कोई आदमी कहता है-बेचारा चल बसा। बेचारा कहने वाला इस अन्दाज में कहता है कि वह कभी मरेगा नहीं। कई लोग कहते हैं। बेचारे को तुरन्त डॉक्टर का इलाज मिल गया होता तो बच जाता। तो क्या डॉक्टर खुद कभी नहीं मरते हैं? मैंने अपनी जिन्दगी में कई बार मृत्यु को नजदीक से देखा है कि अब आई कि अब आई। मैं एक असाध्य रोगी था। मेरे शरीर में छोटे-मोटे 10 ऑपरेशन हो चुके हैं, जिसमें चार ऑपरेशन खून चढाकर करीब छह-छह घण्टे के हुए हैं। प्रथम ऑपरेशन में मुझे श्रवणेन्द्रिय से हाथ धोना पड़ा। अन्तिम ऑपेरशन में डॉक्टरों की लापरवाही से मेरे गले की आहार नली कट गई। मैं दस दिन तक अपना थूक भी नहीं निगल सकता था। एक-दो डॉक्टरों ने मुझे मृतक भी घोषित कर दिया। थोड़ी देर से वापस चैक करने पर, अभी जिन्दा है, थोड़ी देर का मेहमान है, ऐसा कहने लगे। मेरा इलाज 30 वर्ष की उम्र से चला 45 वर्ष की उम्र तक चलता रहा। आखिर मुझे इलाज से नफरत हो गई एवं मैंने प्रण कर लिया कि अब डॉक्टर की दवा नहीं खाऊँगा। मैं दो वर्षों में बिलकुल रोगमुक्त हो गया। मेरा इलाज करने वाले ज्यादातर डॉक्टर स्वर्ग चले गये। अब मैं 13 वर्ष से कोई दवा नहीं खा रहा हूँ एवं स्वस्थ हूँ। अब मेरे दिमाग से मौत का वहम बिल्कुल निकल गया है। मैं बहरा आदमी एक शब्द भी नहीं सुन सकता। फिर भी स्कूटर, ट्रेक्टर एवं अन्य वाहन बेधड़क चलाता हूँ। वह भी अहमदाबाद, जोधपुर, जयपुर आदि शहरों में चलाता हूँ। सिर्फ आगे देखता हूँ पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। घर वाले मुझे बहुत टोकते हैं, आप वाहन न चलाएँ। मैं यही कहता हूँ कि मैं सावधान हूँ, फिर भी मृत्यु आनी है तो आएगी। मुझे उससे कोई भय नहीं।

सांसारिक ममता में खोया हुआ प्राणी स्वेच्छा से भौतिक शरीर से अलग होना नहीं चाहता, इसलिये मृत्यु प्रसन्नता नहीं है, परन्तु कुदरत का कटु सत्य है कि जिस दिन लिखी हुई है, उस दिन आकर रहेगी, कोई भी नहीं कह सकता कि किसका अन्त कहाँ और किस रूप में होने वाला है तथा मृत्यु किसकी प्रतीक्षा कर रही है।

यह सत्य है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। खेद सिर्फ उन्हीं के लिये है जो अपने सिर पर पापों का भार बढ़ाकर विदा होने वाले हैं। इसलिये जब तक सांस चलती है तब तक प्रभु का भजन तथा धर्मसाधना करते रहना चाहिये।

जरा धर्म की गठरी बांधो, मौत मस्तक पे हो रही सवार है,
आता-आता ही सांस रुक जायेगा, इसका न कोई एतबार है।

आने वाला जाने की भी टिकट कटाकर लाता है, कहाँ से आये कहाँ जाना है? किसी को यह पता नहीं। इस संसार का नियम आना और जाना है। सभी का कल्याण हो, इसी भावना के साथ।

-कुशल नगर, पालरोड़, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2742267

सत्य सदा अमर

साध्वी रुचि दर्शनाश्री

मैं सत्य हूँ
मुझसे क्यों दूर भागते हो
मैं सदा प्रासंगिक हूँ
भूत-भविष्य-वर्तमान में
मैं आग्रह-दुराग्रहों की
दीवारों से मुक्त
खुले आसमान में शाश्वत हूँ
मैं पंथ, सम्प्रदाय से परे
न हिन्दू, न मुसलमान,
न जैन न बौद्ध
मैं सत्य हूँ, मैं सदा अमर हूँ
चाहे फाँसी हो, चाहे ज़हर हो
मैं कभी मरता नहीं, क्योंकि
मैं सत्य हूँ सदा अमर हूँ
सदा प्रासंगिक हूँ।

-शाजापुर (म.प्र.)

संवाद (15)

जून २००८ की जिनवाणी में सत्य बोलने के नियम का व्यापक स्वरूप समझने के सम्बन्ध में जिज्ञासा की गई थी। उसके समाधान जुलाई एवं अगस्त, २००८ के अंकों में प्रकाशित किए गए हैं। उसी श्रृंखला में देवेन्द्र भारती, जुलाई २००८ के अंक से उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. के लेख का अंश प्रकाशित है।

-सम्पादक

प्रत्येक साधक चाहे वह साधु हो गृहस्थ, सत्यव्रत को लेकर अवश्य चलता है। सत्यव्रत के बिना उसकी साधना एक कदम भी नहीं बढ़ सकती। सत्य उसकी साधना का केन्द्र बिन्दु है। सत्य के बिना श्रावक का कोई भी व्रत, नियम, त्याग,तप, प्रत्याख्यान आदि नहीं चल सकता। सत्य के बिना संसार का कोई भी व्यवहार नहीं चल सकता, यहाँ तक कि रोजमर्रा का जीवन भी सत्य के बिना नहीं चल सकता। क्या सामाजिक, क्या आर्थिक, क्या नैतिक और क्या राजनैतिक, क्या धार्मिक और क्या आध्यात्मिक, जीवन के सभी क्षेत्रों में सत्य अनिवार्य है। इसलिए श्रावक को ही क्या, प्रत्येक मनुष्य को सत्य का पालन करना चाहिए।

सत्य की साधना का द्वार किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, सबके लिए खुला है। साधु भी सत्य साधना के पथ पर चलता है और एक गृहस्थ (श्रावक) भी उस पथ पर चल सकता है। सत्य सबके लिए एक-सा है। परन्तु व्यक्ति की शक्ति, क्षमता और रुचि के अनुसार उसकी साधना में कुछ अन्तर है, मर्यादाओं में थोड़ी-सी भिन्नता है।

आगम में साधु के लिए बताया गया है कि वह तीन करण तीन योग से यानी कृत, कारित और अनुमोदन के रूप में मन, वचन एवं काया से असत्य का सर्वथा त्याग करे। इसलिए वह द्रव्य से समस्त द्रव्यों के लिए, क्षेत्र से सर्वक्षेत्र में, काल से सब कालों में और भाव से (तीन करण तीन योग से) असत्य का त्याग करता है। वह क्रोध, लोभ, भय और हास्य के वश तथा कर्कशकारी, कठोरकारी, निश्चयकारी, हिंसाकारी, छेदनकारी, भेदनकारी, सावद्य(संतप्त) भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता। उसकी भाषा हास्य एवं व्यंग्य से युक्त मर्मभेदी, कषाय एवं प्रमाद से युक्त नहीं होनी चाहिए। वह शब्दों का निरर्थक प्रयोग नहीं कर सकता। उसकी वाणी हित, मित, प्रिय, तथ्य और पथ्य से युक्त होनी चाहिए। उसकी भाषा में किसी प्रकार का पक्षपात, सन्देह, द्वयर्थकता,छिछलापन आदि नहीं होना चाहिए। उसकी वाणी में गाम्भीर्य, तेज, ओज, त्याग, तप एवं शान्ति का आभास होना चाहिए, ताकि उसके शब्दों से उसकी साधुता अभिव्यक्त हो। जीवन की गहरी साधना और चारित्र की तेजस्विता उसकी भाषा में झलकनी चाहिए। भाषा समिति

और वाग्गुप्ति से उसकी भाषा अनुप्राणित हो।

जिस प्रकार अहिंसा के भी स्थूल, सूक्ष्म ये दो भेद किये गए हैं, उसी प्रकार सत्य के भी स्थूल, सूक्ष्म ये दो भेद शास्त्रकारों ने बतलाए हैं। स्थूल बातों के लिए असत्य आचरण करना स्थूल असत्य है और सूक्ष्म रीति से असत्य-आचरण करना सूक्ष्म असत्य है।

गृहस्थ की साधना साधु की साधना जितनी उत्कृष्ट नहीं होती। उस पर पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व का बोझ होने के कारण वह इतने सूक्ष्म सत्य का पालन नहीं कर पाता। फिर भी ऐसा झूठ नहीं कहता; जिससे दूसरे का अहित होता हो, जिससे सरकार द्वारा वह दण्डनीय हो, समाज में निन्दित हो, दुनिया में अविश्वास का भाजन बने। इसी दृष्टि से श्रावक के लिए सत्य-अणुव्रत की मर्यादा इस प्रकार स्थिर की गई है-'थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, दुविहेण तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं।' जैसे अहिंसा-अणुव्रत की मर्यादा दो करण तीन योग से संकल्पी हिंसा के त्याग के रूप में बताई गई है, इसी प्रकार सत्य अणुव्रत में भी स्थूलमृषावाद (असत्य) विरमण (त्याग) की मर्यादा भी दो करण तीन योग से बताई गई है। यानी स्थूल मृषावाद का त्याग मन, वचन और काया (तीन योग) से स्वयं करे, और दूसरे से करावे।

कुछ लोग कहते हैं कि श्रावकों को मृषावाद (असत्य) का सर्वथा त्याग करने का ही उपदेश देना चाहिए, उसे सूक्ष्म-स्थूल के भेद नहीं समझाने चाहिए; क्योंकि ऐसा करने से सूक्ष्म असत्य का अनुमोदन होता है। लेकिन ऐसा कहने वाले लोग जैनशास्त्र के गहन विचारों से अनभिज्ञ हैं। जैनशास्त्र ऐसी किसी बात का निषेध नहीं करते, जिनके बिना मनुष्यों का कार्य न चल सकता हो। ऐसी अवस्था में उन श्रावकों को, जो सांसारिक कार्यों को करते हुए सत्य का पालन करना चाहते हैं, यदि स्थूल और सूक्ष्म झूठ के भेद न बतलाए गए तो वे सत्य का पालन कैसे कर सकते हैं? श्रावक के लिए स्थूलमृषावादविरमण व्रत का धारण करना उचित और आवश्यक है। इस व्रत के धारण करने पर गृहस्थ के सांसारिक कार्यों में किसी प्रकार की अड़चन नहीं हो सकती, बल्कि सांसारिक मार्ग सरल हो जाता है। इस सत्य-अणुव्रत का पालन करने वाले श्रावक पर समाज का विश्वास हो जाता है तथा इस व्रत के धारण करने पर वह असत्य के पाप से बहुत अंशों में बच जाता है।

सारांश यह है कि असत्य का पूर्णरूप से त्याग करना उचित ही है। इसमें मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है। इस दृष्टि से गृहस्थ श्रावक पूर्ण या किसी अंश में सूक्ष्ममृषावाद से बच सके तो कोई बुराई की बात नहीं है। लेकिन शास्त्रकारों ने गृहस्थ श्रावकों के लिए सूक्ष्ममृषावाद का त्याग न बतलाकर स्थूलमृषावाद का त्याग ही आवश्यक बताया है। (क्रमशः)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

कर्मजिज्ञासा- साध्वी युगल निधि-कृपा, ***प्रकाशक***- मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, बी - 117, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज - 1, नई दिल्ली, दूरभाष- 093130 - 93444, ***पृष्ठ*** 230, ***मूल्य*** 100 रुपए, ***संस्करण***- नवम्बर, 2007

साध्वीयुगल निधि कृपा के संयम रजत जयन्ती वर्ष में प्रकाशितयह पुस्तक जैन कर्म सिद्धान्त का संक्षेप में स्पष्ट रीति से निरूपण करती है। इसमें थोकड़ों की बौद्धिक उलझन नहीं है, किन्तु कर्मसिद्धांन्त से सम्बद्ध प्रमुख तथ्यों को सरल रीति से दो-दो पृष्ठों के 108 लघु अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। भाषा शैली सरल, प्रवाहमयी एवं सर्वजनग्राह्य हैं। पुस्तक में कर्मविषयक सिद्धान्तों एवं परिभाषाओं में कुत्रचित् मतभेद हो सकते हैं, तथापि पुस्तक की महत्ता निर्विवाद है।

जिनवाणी - मुनि श्री रामप्रसाद जी म.सा., ***प्रकाशक*** - डॉ. ए.पी. जैन, जे - 6/74, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027, दूरभाष - 011-25458951, ***पृष्ठ*** -140, ***मूल्य*** - निःशुल्क।

व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के शिष्य श्री रामप्रसाद जी महाराज प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ थे। इस 'जिनवाणी' पुस्तक में उनकी चार संस्कृत रचनाएँ एवं उनका हिन्दी पद्यानुवाद संकलित है। सबसे प्रमुख रचना 120 संस्कृत श्लोकों में है, जो शिखरिणी छन्द में है तथा 'जिनवाणी' (जिनेश्वर की वाणी) को सम्बोधित कर लिखी गई है। इसमें जिनवाणी की महिमा अभिव्यक्त हुई है। हिन्दी पद्यानुवाद एवं संस्कृत मूल रचना दोनों प्रभावशाली हैं। हिन्दी पद्यानुवाद का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

सब अरिहंत सिद्ध होते हैं जिनवाणी अनुवर्तन से,
आचार्योपाध्याय मुनि सब जीवित हैं श्रुतसेवन से।
भवभय नाशक पाँच पदों का जन्म तुम्हारे ही तन से,
परम गुरु माता हो, अतः सब कुछ मिलता आराधन से।।

पुस्तक में अन्य चार रचनाएँ, चार अष्टक हैं। एक अष्टक गुरुस्मरणाष्टक है जिसमें गुरुवर्य मदनलाल जी महाराज की स्तुति है। द्वितीय अष्टक का नाम पितृतर्पणाष्टक है, जिसमें गुरु मदनलाल जी, श्री प्रकाशचन्द जी महाराज आदि का

स्मरण किया गया है। तृतीय अष्टक श्री सुदर्शनलाल जी महाराज को समर्पित है जिसका नाम है - सुदर्शनाष्टक। चतुर्थ अष्टक गुरु मायाराम जी पर रचित है।

सद्धर्म मंजरी - डॉ. इन्दरराज बैद, ***प्रकाशक*** - डॉ. इन्दरराज बैद, 14, नारायण अपार्टमेण्ट, दसवीं गली, नंगनल्लूर, चेन्नई - 600061, ***पृष्ठ*** - 84, ***मूल्य*** - सप्रेम भेंट, ***प्रथम संस्करण*** - नवम्बर 2007

डॉ. इन्दरराज बैद अच्छे कवि एवं साहित्यकार हैं। सद्धर्म मंजरी उनके मुक्तक काव्य का संग्रह है। पुस्तक का प्रकाशन डॉ. बैद ने अपने माता-पिता की स्मृति में किया है। इसमें 21 विषयों पर मुक्तक हैं, जो भाव भाषा एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से गम्भीर, प्रांजल एवं प्रभावी हैं। **''अहोभाग्य है मेरा''** कविता का एक पद्य अवलोनार्थ प्रस्तुत है-

मेरे मन में तनिक कभी भी, अहंकार ना आवे।
बना रहूँ सुविनीत सदा, शुचि, प्रेम हृदय में छावे।
सब जीवों को क्षमादान दे, क्षमायाचना करता,
प्राणिमात्र है मित्र, नहीं मैं, वैरभावना धरता।
मिटी विषमता, आयी समता, लेकर नया सवेरा।
आदि-सुमति-मति-पार्श्व-वीर का बना आज मैं चेरा।
अहोभाग्य है मेरा।।

भावनाशतकम् (तीर्थंकर ऐसे बने) - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, संस्कृत टीकाकार - डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य, ***प्रकाशक*** - निर्ग्रन्थ साहित्य प्रकाशन समिति, पी - 4, कलाकार स्ट्रीट, कोलकाता - 700007, ***पृष्ठ*** - 118, ***मूल्य*** - 10 रुपये, ***द्वितीय संस्करण*** - 2008

आचार्य विद्यासागर कवि एवं साहित्यमनीषी हैं। उनके द्वारा रचित भावनाशतक में 101 श्लोक हैं, जिनमें 84 आर्याछन्द में, 16 मुरजबन्ध अलंकार के साथ अनुष्टुप् छन्द में तथा एक श्लोक वसन्ततिलका छन्द में है। इनके अतिरिक्त अन्त में 10 श्लोक मंगल कामना के हैं। पुस्तक में तीर्थंकर बनने की दृष्टि से 16 भावनाओं का वर्णन किया गया है, जो इस प्रकार है - 1. निर्मल दृष्टि, 2. विनयावनति, 3. सुशीलता, 4. निरन्तर ज्ञानोपयोग, 5. संवेग, 6. त्यागवृत्ति, 7. सत्तप, 8. साधुसमाधिसुधासाधन, 9. वैयावृत्य, 10. अर्हद्भक्ति, 11. आचार्यस्तुति, 12. शिक्षा गुरुस्तुति, 13. भगवद्भारती भक्ति, 14. विमलावश्यक, 15. धर्मप्रभावना और 16. प्रवचनवत्सलता। यह भावनाशतक दुरुह है, अतः इसे सुगम बनाने हेतु आचार्य श्री ने हिन्दी पद्यानुवाद दिया है तथा साथ में उसे पन्नालाल जैन 'साहित्याचार्य' कृत संस्कृत टीका भी अर्थ को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से उत्तम है।

स्वाध्यायी-परिचय

वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हीराचन्द जी मंडलेचा

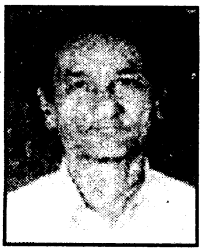

संघ समर्पित सेवाभावी वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हीराचन्द जी मंडलेचा सरलता, सौम्यता, सहनशीलता, सेवा और सहयोग भावना से ओतप्रोत सादा जीवन उच्च विचारों के धनी हैं। आपका जन्म श्री लखीचन्द जी मंडलेचा की सहधर्मिणी श्रीमती सरोजाबाई की कुक्षि से 19 मार्च,1940 को बाकड़ी गाँव में हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा फतेपुर तथा माध्यमिक शिक्षा जलगाँव में हुई। आप गुरुहस्ती की प्रेरणा से सन् 1982 में स्वाध्यायी बने। वर्तमान में आप श्री महावीर जैन पाठशाला योजना में निरीक्षक के पद पर रहते हुए क्षेत्रीय पाठशालाओं का अति कुशलता से संचालन कर रहे हैं।

सन् 1988 में योग विद्यापीठ नाशिक से 'योग परिचय परीक्षा' आपने प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। उत्तराध्ययन सूत्र के एक से तीन तक अध्ययन, दशवैकालिक सूत्र, आचारांग सूत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र पूर्ण कण्ठस्थ किये। उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय द्वारा आपने प्राकृत विषय में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। जैन धर्म का मौलिक इतिहास की 1 से 3 भाग की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। 25 बोल, 67 बोल, लघुदण्डक, समिति–गुप्ति, कर्म प्रकृति के थोकड़े कण्ठस्थ किये। भजन और चौबीसियों में भी आपकी रुचि है। आपने अध्यापक प्रशिक्षण शिविरों एवं स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित 6 परीक्षाओं में भाग लेकर अपने ज्ञान को पुष्ट किया।

आप प्रतिवर्ष जलगाँव में लगने वाले शिविरों में एवं स्थानीय शिविरों में शिक्षण कार्य करते हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के नये क्षेत्र खोलने तथा समय–समय पर परीक्षार्थियों की समस्याओं को हल करने हेतु आप क्षेत्र में जाकर शिक्षण सेवाएँ दे रहे हैं।

आपने लगभग 15 वर्षों तक श्री स्थानकवासी श्रावक संघ फ़त्तेपुर के मंत्री पद का निर्वहन करते हुए नये स्वाध्यायी तैयार किये। जलगाँव एवं आसपास के क्षेत्र से पर्युषण सेवा देने वाले स्वाध्यायियों की नियुक्ति भी आप सफलतापूर्वक कर रहे हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन धार्मिक कार्यों हेतु समर्पित है।

आप प्रतिदिन एक घण्टा स्वाध्याय एवं एक सामायिक करते हैं। रात्रि भोजन का त्याग एवं वर्ष में कम से कम 6 पौषध करते हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण में प्रतिवर्ष आप अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ दे रहे हैं। आपकी वक्तृत्व शैली उत्तम है। लगभग बीस वर्षों से आपने अब तक बड़लीमुई, शिरपुर, चिंचोली, पांडर कवड़ा, उस्मानाबाद, गौतमपुरा, अम्बे जोगाई, लातुर, पिंपलगाँव राजा, नागद, भण्डारा, पहुरदाभा, चान्दूर रेलवे, ठाणा, साक्री, अमरावती, बेटावद, मुकटी, केलसी, सिल्लोड, चिपलुण, ताहाराबाद, दूसरबीड़ आदि क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण में अपनी महती सेवाएँ देकर जिनवाणी की प्रभावना की है।

आप सदा स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों, गुरु हस्ती, हीरा मान के प्रति समर्पित रहते हुए उनके सामायिक–स्वाध्याय एवं फैशन व व्यसन मुक्ति का प्रचार–प्रसार कर जिनशासन की महती प्रभावना करें, यही स्वाध्याय संघ परिवार की ओर से आपके लिए मंगल कामना है।

अमृत-वाणी

- पाप का सम्पूर्ण त्याग किये बिना जीव संताप (दुःख) मुक्त नहीं हो सकता।
- मनुष्य अर्थ नीति में जितना समय लगाता है, उसका आधा समय भी धर्मनीति में लगाये तो उसका उद्धार हो सकता है।
- मानव स्वभाव की यह दुर्बलता सर्वविदित है कि जब छूट मिलती है तो शिथिलता बढ़ती ही जाती है।
- संसार की समस्त सम्पदा और योग के साधन भी मनुष्य की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं।
- यदि मनुष्य इच्छा को सीमित कर ले तो संघर्ष के सब कारण स्वतः समाप्त हो जाएंगे, विषमता टल जाएगी, वर्गभेद मिटकर सब ओर शान्ति और आनन्द की लहर फैलकर यह पृथ्वी स्वर्ग के समान बन जाएगी।
- भला इससे बढ़कर आश्चर्य की बात और क्या होगी कि हम भौतिक वस्तुओं को अपना समझकर उनके लिए तो चिन्ता करते हैं, पर आत्मध्यान की चिन्ता नहीं करते।
- जिन व्यक्तियों में सदाचार तथा सद्गुणों की सौरभ नहीं होती, वे संसार में आकर यों ही समय नष्ट कर चले जाते हैं।

-संकलित, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के आत्मचिन्तन से

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मशताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई है। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

नियमावली- 1. आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा। 2. आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा। 3. आवेदक एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प ले एवं तदनुसार सामायिक करे। 4. आमंत्रित छात्रों को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा। 5. आवेदक रत्नसंघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए।

छात्रवृत्ति योजना का प्रारूप

श्रेणि	प्राप्तांक प्रतिशत	कक्षा ८ से १० तक	कक्षा ११ से स्नातक स्तर तक	स्नातकोत्तर व्यावसायिक शिक्षा स्तर तक	प्रोफेशनल शुल्क ७५००० से ज्यादा होने पर
योजना प्रथम	व्यावहारिक शिक्षा एवं आ. शिक्षण में 60 प्रतिशत से अधिक होने पर	500/- प्रतिमाह	1000/- प्रतिमाह	1500/- प्रतिमाह	2500/- प्रतिमाह
योजना द्वितीय	व्यावहारिक शिक्षा एवं आ. शिक्षण बोर्ड में 60 प्रतिशत से कम होने पर	250/- प्रतिमाह	500/- प्रतिमाह	750/- प्रतिमाह	1250/- प्रतिमाह

विशेष- दोनों योजनाओं में छात्रवृत्ति 11 माह की प्रदान की जाएगी। छात्रवृत्ति संबंधी चयन समिति का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

नोट- इस योजना में आवेदक के परिवार की वार्षिक आय 50,000 रुपये से कम होने पर

1000/- रुपये प्रतिमाह से छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। आवेदक रत्नसंघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान- छात्र एवं छात्राएँ अपने आवेदन पत्र को चयन समिति के संयोजक श्री बुधमल जी बोहरा No.53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79, Ph. 044 42728476 के पते पर प्रेषित करें।

आवेदन प्रेषित करने की तिथि-आवेदन पत्र प्रेषित करने की अंतिम तिथि 30 सितम्बर, 2008 है एवं आवेदन पत्र की प्रतिलिपि मान्य होगी तथा वेबसाइट www.Jainyuvaratna.org पर भी आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं।

अर्थ सहयोग- उदारमना सुश्रावक वात्सल्य एवं सद्भावना से परिपूर्ण इस पुनीत योजना की सफलता के लिए मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करवायें। (एक छात्र के लिए राशि 12000/- अथवा इसके गुणक में) राशि Gajendra Nidhi Aacharya Hasti Scholar Ship Fund के नाम से चैक व ड्राफ्ट द्वारा (Donations are eligible for exemption under 80 (G) of Income tax ACT 1961 के तहत छूट लाभ) श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई, 044-42728476, श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, 094604-41570, श्री प्रवीण जी कर्णावट-मुम्बई, 098210-55932, श्री महेन्द्र जी बाफना-जलगाँव, 094227-73411, श्री प्रमोद जी हीरावत-जयपुर, 093145-07303, श्री महेन्द्र जी सुराणा-जोधपुर, 094149-21164, श्री राजकुमार जी गोलेछा-पाली, 098290-20742 से सम्पर्क कर प्रेषित करावें।

सहयोग राशि भेजने का पता- Sh.Ashok Ji Kavad C/O. Prithvi Exchange, 33-Montieth Road, Egmore Chennai-600008 Ph. 93810 41097

आवश्यकता है आशुलिपिक की

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में एक आशुलिपिक की शीघ्र आवश्यकता है। जिसकी हिन्दी में कम से कम १०० शब्द प्रति मिनिट की स्पीड हो तथा टंकण शुद्ध हो एवं जैनधर्म से सम्बन्धित जानकारी रखता हो (प्राकृत/संस्कृत की कुछ जानकारी हो)। साधु-साध्वियों के व्याख्यानों को कलम बद्ध करने की क्षमता हो। वेतन योग्यतानुसार रिटायर्ड सज्जन भी पात्रता रखते हों तो शीघ्र इस पते पर सम्पर्क करें :- मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. १८२ के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर - ३०२००३ (राज.) फोन नं. ०१४१ - २५७५९९७, फैक्स नं. ०१४१ - २५७०७५३१

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (18) का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई, २००८ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१८) में ३५२ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अप्रेल से जून २००८ के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये		नथमल कोठारी-बालोद	(५०)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये		विनोद कुमार रांका-जोधपुर	(५०)
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये		हेमराज सुराणा-जयपुर	(५०)
सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक			
रतनलाल रांका-अजमेर	(४९)	सरोज रूणवाल-धुले	(४९)
पुष्पा हस्तीमल गोलेछा-ब्यावर	(४९)	नोरतमल चंगेरिया-अजमेर	(४९)
हेमलता जैन-ब्यावर	(४९)	कवलराज मेहता-जोधपुर	(४९)
हस्तीमल मादरेचा-भीलवाड़ा	(४९)	नेणचंद बाफणा-जोधपुर	(४९)
राजुल कोठारी-धुले	(४९)	सतीश रमणलाल जैन-धुले	(४९)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये		रीमा जैन-बालोद	(५०)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये		अर्चना कोठारी-बालोद	(५०)
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये		अनुप्रिया जैन-मण्डीरोड़, आलनपुर	(५०)
सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक			
प्रज्ञा कुम्भट-ब्यावर	(५०)	आशा पारख-धनारी कलां	(४९)
बबीता जैन-सवाईमाधोपुर	(४९)	वर्षा बाफना-जोधपुर	(४९)
मोनिका जैन-सवाईमाधोपुर	(४९)	अभिषेक रतन बोहरा-बालोद	(४९)
रितु बेगानी-बीकानेर	(४९)	नीलम जैन-अजमेर	(४९)
वनमाला विक्रम राठौड़-धुले	(४९)	संगीता दरड़ा-जोधपुर	(४९)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- निशा लुकड़-कोटा, अमित जैन-मण्डीरोड़-आलनपुर, दिलीप जैन-धनारीकलां, सरोज जैन-धनारीकलां, संगीता जैन-जोधपुर,अभिषेक जैन- जोधपुर, राकेश सुराना-मेड़ता सिटी, अनिलकुमार जैन-कोटा, इन्द्रा जैन-आलनपुर, रोहन लुणावत-आचीणा, रुचिका लुणावत-जोधपुर, हंसराज मोहनोत-जयपुर।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- मोनिका देशलहरा-सिकंदराबाद, सुमेर लुणावत-पाँचलासिद्धा, पुष्पा लुणावत-पाँचलासिद्धा, नवकार लुणावत-पाँचलासिद्धा, शोभा कवाड़-जोधपुर, अरूणा दरड़ा-जोधपुर, महेन्द्र दरड़ा-जोधपुर, चुकी देवी दरड़ा-जोधपुर, सुखराज दरड़ा-जोधपुर, ललिता जैन-हा.बो. सवाईमाधोपुर, आयुषी लुणावत-आचीगा, दीपशिखा जैन-अलीगढ़, दीपिका जैन-अलीगढ़, उषा जैन-कोटा, श्रीमती आरती पी. कवाड़-देवपुर-धुले, रेणु अरिष्ठ रांका-अहमदाबाद, दीप्ति जैन- कोटा, अल्फा सुराणा-जोधपुर, जयमाला कांकरिया-पाली, अनिल कुमार-मैसूर,ललिता जैन-जोधपुर, दिलीप जैन-जोधपुर, रीतेश जैन-कोटा, पिंकु जैन-सवाईमाधोपुर, निक्कू जैन-सवाईमाधोपुर, श्रिया जैन-बूँदी, माधुरी जैन-बूँदी, प्रकाश चंद पारख-धनारी कलां, सुनीता लुणावत-आचीणा, शिल्पा कोठारी-जोधपुर, पूर्णिमा गांधी-जोधपुर, क्षितिज जैन-हा.बो.सवाईमाधोपुर, डी. सुनील जैन-मैसूर, दिनेश सुराणा-मेड़ता, सीमा जैन-हा.बो.सवाईमाधोपुर, शुभेष बोरा-चालीसगांव, अशोक बाबूलाल शिंगी-सूरत,कु. मयूरी एस. जैन-धुले, श्रीमती ममता राखेछा-बुलडाणा, लता सतीश आंचलिया-धुले, राखी शैलेष जैन-धुले, सौ. मनीषा जैन-सूरत, सौ. मंगला सिंघवी-शिव नगर, पारस जैन-बल्लारी, पारस चंद जैन- भरतपुर, बाबूलाल जैन-भरतपुर,विजयालक्ष्मी छाजेड़-धुले,विमला बोहरा-जयपुर,श्रीमती अनीता दुग्गड़-धुले, बाबूलाल जैन-दिगरशिवर,युगल रांका-अहमदाबाद,मोहनी जैन-आचीणा,सुनील मेहता-जोधपुर,श्रीमती शशिकला गांधी-जोधपुर,श्रीमती प्रेमलता चौधरी-भीलवाड़ा,श्रीमती इचरज देवी-जयपुर,अजीतराज जैन-धनारीकलां,सुनीता नवलखा-कोटा,श्रीमती सुनंदा लोढ़ा-धुले,सौ. विमला आर. कोचर-नासिक

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-नीलू जैन-लुधियाना, चंदनबाला जैन-अशोकनगर, कुसुम जैन-कोटा, पवन जैन-जयपुर, लवीष जैन-आलनपुर,अंकित जैन-जयपुर, नेहा जैन-कुण्डेरा,अक्षय जैन-मंडीरोड-आलनपुर, राहुल जैन-मंडीरोड-आलनपुर, नरेश सुराणा-जोधपुर, मोनिका जैन-अलीगढ़,महेन्द्रकुमार जैन-जयपुर, नेहा जैन-मदनगंज-किशनगढ़, राजेश लुणावत-आचीणा, प्रियंका बैताला-जयपुर, रिंकी जैन-अलीगढ़, मनोज जैन-जयपुर, गर्व लुंकड़-कोटा, विशा जैन-अलीगढ़, सौरभ जैन-गंगापुर, कु. राशि रांका-भडगाँव, प्रियंका गांधी-जोधपुर, प्राची जैन-खेरली, अंकुश जैन-खेरली, जयमाला जैन-सवाईमाधोपुर, विशाल जैन-खेरली, शालिनी जैन-खेरली, निशा जैन (बागमार)-जबलपुर, हर्षल जैन-शहादा,सुनील जैन-जोधपुर, निधि जैन-जोधपुर, मुनेन्द्र सुराणा-नागौर, मीनाक्षी जैन-नागौर, सुमेर वैद-धनारीकलां, दीपक कांकरिया-नागौर, नीलम कांकरिया-नागौर, योगिता अमित कर्नावट-अहमदनगर, संजना दरड़ा-गोटन, प्रवीण जैन-बैराथल कला, संगीता खाबिया-मैसूर, अपना अजय रांका-जलगांव, सुनील लुणावत-इन्दौर,महेन्द्र लुणावत-इन्दौर, दिव्या सतीश जैन-धुले, पूनमचंद राणुलाल जैन-शहादा,श्रीमती श्वेता प्रशांत वेदमुथा-नासिक, रश्मि राहुल जांबड़-औरंगाबाद, ज्योति राजेन्द्र तातेड़-धुले, डॉ. कविता कांकरिया-जलगांव, पुष्पा खींवसरा-जोधपुर,आशा अग्रवाल-जयपुर,मधुबाला जैन-आचीणा,श्रीमती ममता जैन-जोधपुर,पारस कंवर भण्डारी,कमला सिंघवी-जयपुर,पुष्पा गांधी-जोधपुर,विजया जैन-जोधपुर,शोभा सागरमल कोठारी-धुले,श्री प्रवीण जैन-धुले,श्रीमती प्रमिला पोखरणा-धुले,श्रीमती दर्शिका टाटिया-जलगांव,पुष्पा ताथेड़-धुले,लीला देवी पारख-होलनाथा,इंडियन प्लस-इन्दौर,श्रीमती विमला बाई खिंवसरा-धुले,सुशीला रांका-जलगांव,सरोज खाबिया-मैसूर,श्रीमती मधुबाला जैन-सुमेरगंज मंडी,सुबोध भाई-नवसारी,गणपत सुराणा-जोधपुर,श्रीमती मंजू श्री सुराणा-जोधपुर,हीरा कर्णावट-अहमदनगर,त्रिलोकचंद जैन-आचीणा,श्रीमती चन्द्रलता मेहता-दूदू,साधना जैन-नागौर,श्रीमती कंचन जैन-नागौर,श्रीमती विमला जैन-अजमेर,बाबूलाल कटारिया-हैदराबाद,सरला कांकरिया-जलगांव

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-रामविलास सुथार-बारनीखुर्द, गुड्डी जैन-बजरिया, पल्लवी जैन-बजरिया, विकास सुथार-बारनीखुर्द, मोनिका जैन-आलनपुर, योगेश जैन-जयपुर, नीरज जैन-खेरली, सुनीता जैन-हिण्डौन, दिव्या डागा-जयपुर, मधु जैन-ब्यावर,शिल्पा जैन-रतकुडिया, दीप्ति जैन-जयपुर, सुमन पोखरणा-पाली, प्रीति जैन-भरतपुर, अरिहंत जैन-चैन्नई,पूजा जैन-गंगापुर, श्रीमती पिंकी जैन-जयपुर, अश्विनी मोदी-टोहाना, नितेश जैन-सवाईमाधोपुर, अर्पित लुणावत-विजयनगर, जितेन्द्र जवाहरलाल पारख-शिरपुर, निकिता पारख-शिरपुर, पद्मा सुरेश मुणोत-भंडारा, सुचिता सूर्यकांत पारख-होलनांथा, भारती राजेन्द्र पारख-शिरपुर, संगीता महेन्द्र बोथरा-जलगाँव,बिंदु मेहता-जोधपुर, नवरत्न ओस्तवाल-गोटन, निकिता कांकरिया-नागौर, चंचल जैन-जयपुर,श्रीमती सुनीता कोटड़िया-शहादा, अनुजा कांकरिया-जलगांव।नवरतन ओस्तवाल-पीपाड़,श्रीमती शीतल संदेश

बंब-लासुर स्टेशन,श्रीमती मधु सिंघवी-गाजियाबाद,श्रीमती उपमा चौधरी-अजमेर,विजया जैन-बजरिया,रेणु बोहरा-दिल्ली,शशिकांता जैन-भरतपुर,सरोज नाहर-दिल्ली,इंदिरा मेहता-जयपुर,गौरव जैन-गंगापुर सिटी,श्रीमती मोनिका सुराणा-चेन्नई,श्रीमती विमला भंडारी-भंडारा,उषा बरड़िया-धुले,श्रीमती प्रमिला मेहता-दूदू,श्रीमती नीलम चीपड़-दूदू,मुन्नालाल भंडारी-जोधपुर,श्रीमती निर्मला भनागट-चन्द्रपुर,पंकज गोलेछा-जयपुर,मिथुन सेठिया-धनारीकलां,श्रीमती मीनाक्षी मेहता-किशनगढ़,कमला सेठिया-मसूदा,बसंती गांधी-चन्द्रपुर,

45 एवं उससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- हेमा जैन-बजरिया, मांगीलाल-बारनीखुर्द, मनोज उम्मेद जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती बबीता कोठारी-जयपुर, नमिता जैन-जयपुर, गौरव कटारिया-अजमेर, पीयूष जैन-सवाईमाधोपुर, प्रतीक्षा जैन-हिण्डौन, दीप्ति जैन-बजरिया, वैभव मेहता-जोधपुर, प्रितेश लुंकड़-उम्बरगाँव, श्रीमती प्रेमलता सुराणा-जयपुर, सुमन पूनमिया-पाली, कृतिका जैन-सवाईमाधोपुर, अनिल बरड़िया-जोबनेर, स्वप्निल जैन-अलवर, गुंजन पालावत-अलवर, टीना मेहता-दूदू, प्रीति जैन-अलीगढ़, निकिता जैन-हा.बो.सवाईमाधोपुर, मोहित जैन-मण्डीरोड़-सवाईमाधोपुर, दीपक कल्लानी-झाबुआ, शैला लुंकड़-उमरगाँव, सूर्यकान्त जैन-होलनाथा, महेन्द्रकुमार बोथरा-जलगांव, शैली कुम्भट-जोधपुर, राहुल कुम्भट-जयपुर, नवरती देवी जैन-रतकुड़िया, अंतिमा डोसी-ब्यावर, योगेश जैन-सवाईमाधोपुर, जितेन्द्र जैन-चौथ का बरवाड़ा, महेन्द्र जैन-चौथ का बरवाड़ा, मोतीलाल जैन-भंडारा,ऋषभ जैन-इन्द्रगढ,सुमेरगंजमंडी, नवरतन खींवसरा-जोधपुर, स्वीटी आशीष डोसी-ब्यावर, नेहा मेहता-जोधपुर, नरेश चंद जैन-नदबई, नेहा जैन-अलीगढ़, रागिनी जैन-हा.बो. सवाईमाधोपुर, श्रीमती मीनाक्षी रमेश जैन-भंडारा, नीरज जैन-हरसाना, रीमा जैन-लुधियाना, ऋतु जैन-भरतपुर, अरूणा एम. फिरोदिया-भंडारा, पूनम खींवसरा-मुकटी, अरूणा शैलेष रांका-नागपुर, श्रीमती मंजू नाहर-जोधपुर, रक्षिता जैन-सूरवाल, महेन्द्र दीपचंदजी जैन-जलगाँव, ममता महेन्द्र बाफना-जलगाँव, पुनीता जैन-करौली, रेखा अरूण जैन-जलगाँव, अमन जैन-सवाईमाधोपुर, विवेक जैन-हरसाना, मोनिका ओस्तवाल-उदयपुर, बीना लोढ़ा-कानपुर, भाविका जैन-अलीगढ़, हिमांशु पारस जैन-सवाईमाधोपुर, हिमांशु सतीश जैन-सवाईमाधोपुर, रजत जैन-सवाईमाधोपुर, विजया कोचर-जयपुर, दीपा तेजमल बागमार-फत्तेपुर, श्रीमती रंजना जैन-बरनाला, श्रीमती ज्योति संजय बोथरा-रालेगाँव, नेहा जैन-अलीगढ़, सुरभि जैन-नई दिल्ली, सुनीता डुंगरवाल-नई दिल्ली,ज्योति जैन-अलीगढ़, डोली जैन-बजरिया, मोनिका जैन-अलीगढ़, निर्मला सुराणा-बीकानेर, शांतिकुमार जैन-मौजपुर,मीना जैन-अलीगढ़, शोभा सुराणा-चैन्नई, एल. प्रवीण सुराणा-चैन्नई, जसाराम सुथार-बारनी खुर्द, छगनचंद जैन-खौह,ज्योतिप्रकाश जैन-चोरू,पवन कुमार जैन-बजरिया,नवरतन लाल जैन-जयपुर,राजेन्द्र राज मेहता-जोधपुर,निर्मला सुराणा-जोधपुर,किरण कर्णावट-बीड़,पदमचंद जैन-नदबई,सुरेश पुनमिया-पाली,मंजु पालावत-अलवर,बीना जैन-अलीगढ़,सुशील कुमार लुंकड़-उम्बरगांव,नीरा भंडारी-ब्यावर,मीना चौरड़िया-चेन्नई,बंसती कटेवर-धुले,संगीता छाजेड़-चालीसगांव,बृजेन्द्र जैन-पावडेरा,श्रीमती विजय जैन-जयपुर,किरण कुम्भट-जोधपुर,रमणलाल छाजेड़-धुले,श्रीमती कंचन बाई बंब-लासुर स्टेशन,अशोक भंडारी-भोपालगढ़,मंजू जैन-खेरली,स्मिता रूणवाल-बीजापुर,पवन देवी ओस्तवाल-नागपुर,बसंती बाई पारख-दुर्ग,शोभा धरमचंद कोठारी-धुले,घेवरचंद छाजेड़-बेल्लारी,हिम्मतमल ओस्तवाल-उदयपुर,श्रीमती प्रकाशवती ओस्तवाल-उदयपुर,हिम्मतमल ओस्तवाल-उदयपुर,श्रीमती ममता जैन-गंगापुर,सरिता भंडारी-भोपालगढ़,सुधा डागा-बीकानेर,कस्तूरचंद जैन-खेरली,राजुल जैन-गंगापुर सिटी,भावना सुभाष लोढ़ा-धुले,शांतिलाल जैन-चौथ का बरवाड़ा,प्रियंका सेठिया-धनारीकलां,गजराज सेठिया-धनारीकलां,निर्मल सेठिया-धनारीकलां,रोहिता जैन-उज्जैन,ललिता बाफना-नागपुर,निर्मला गादिया-आगरा,श्रीमती पिस्ता गोलेछा-जयपुर,शांता कुमारी जैन-रतलाम,मंजु कांस्टिया- कोलकाता, मनीला पारख-जयपुर,कंचन बागमार-जामनेर,गौतममल गांग-जोधपुर,जंबुकुमार जैन-मांजलपुर, धर्मेन्द्र कुमार जैन-हा.बो.सवाईमाधोपुर,आशीष जैन-जोधपुर,ललिता जैन-जोधपुर,शुभम् कांकरिया-जोधपुर,सौ. बसंता मदनलाल संकलेचा-नरड़ाणा,किरण मेहता-जोधपुर,कविता पारख-जोधपुर,दिलरूपचंद भंडारी-जोधपुर,रामस्वरूप जैन-हा.बो.सवाईमाधोपुर,कु. दर्शना कोठारी-खेतिया,

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (18) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. भगवान्	अप्रेल/13	2. असन्तोष	जून/64
3. धर्म	मई/25	4. जिन्दगी	जून/25
5. योग	मई/41	6. सामायिक	जून/10
7. अदालत	मई/18	8. शरीर	जून/67
9. क्रोध	मई/31	10. चक्रवर्ती	अप्रेल/11
11. गुरु	अप्रेल/28	12. युगलिक/एकोरुक	मई/42
13. संयम	जून/75	14. राग	मई/10
15. अनेकान्त दृष्टि	अप्रेल/54	16. सामाचारी	मई/23
17. उपाध्याय	जून/21	18. जिनानुलोम	मई/39
19. अभ्यास	अप्रेल/64	20. सूत्रकृतांग	अप्रेल/46
21. गृहस्थी	जून/62	22. चैतन्य	मई/68
23. ऐन्द्रियक	अप्रेल/55	24. पौद्गलिक	मई/78
25. भाव	अप्रेल/29	26. दार्ये (जीवणी तरफ)	जून/51
27. त्याग	अप्रेल/10	28. लंघन	मई/14
29. वणिक्	अप्रेल/17	30. उपबृंहण	जून/56
31. 13/12	मई/37-38	32. 2	मई/62
33. 118 या 119	अप्रेल/58एवं 63	34. 3,81,27,970	जून/11
35. 5	अप्रेल/28	36. 2	जून/26
37. 31	अप्रेल/47	38. 3	जून/6
39. 3000	मई/6	40. 5	जून/83
41. ना	जून/8	42. हाँ	मई/15
43. ना	अप्रेल/53	44. हाँ	मई/10
45. हाँ	अप्रेल/67	46. हाँ	जून/65
47. हाँ	अप्रेल/16	48. हाँ	मई/7
49. ना	अप्रेल/41	50. ना	जून/28

संशोधन

जिनवाणी, जून- 2008 के अंक में पृष्ठ 11 पर-

(1) 'तीन करोड़, इक्यासी लाख, सत्ताईस हजार दो सौ सित्तर' में दो के स्थान पर 'नौ' पढ़ा जाए।

(2) 'छः माह, छः दिन, छः घंटे और छः मिनट' के स्थान पर ' 6 माह, 6 दिन, 6 प्रहर एवं 6 घड़ी' पढ़ा जाए।

(3) 'तीन चक्कर' के स्थान पर 'सात चक्कर' पढ़ा जाए।

जिनवाणी, अगस्त-2007 अंतगडदसा सूत्र अंक में श्री जशकरण जी डागा के लेख में पृष्ठ 27 पर उपशम श्रेणी- ' पाँच बार' के स्थान पर चार बार पढ़ा जाए।

पच्चीस बोल प्रतियोगिता का परिणाम

'अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ' के राष्ट्रीय कार्यक्रम 'पच्चीस बोल सीखें' के अन्तर्गत पच्चीस बोल प्रतियोगिता का आयोजन 'अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल' के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किया गया, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता के परिणाम की वरीयता सूची माह अगस्त, 2008 में प्रकाशित की गई थी। इस अंक में सांत्वना पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के नाम दिए जा रहे हैं:-

सांत्वना पुरस्कार (प्रत्येक को 100 रुपये नकद)

चन्द्रकांता जैन योगेन्द्रजी-जयपुर (468),अर्चना मंडलेचा अशोककुमार जी मंडलेचा-कलवा (467.5), प्रमिला बम्ब संतोषचन्दजी-जयपुर (467.5), राजेश जैन महावीरजी -अलीगढ़ (467.5), सरोज रुणवाल पारसमलजी-धुलिया (467), मयूरी जैन सतीशजी-धुलिया (467), हिरामणि छाजेड़ चन्द्रेशजी-इन्दौर (467), रेणुका जैन पारसजी-इन्दौर (467),शीतल बोहरा महावीरजी-बैंगलोर (467), हेमन्त डागा ि ज्ञापचन्दजी-बून्दी (467), दिव्या डोसी राजेशजी-करही (467), सुनीता कवाड़ प्रभात कुमारजी-कानपुर (467), सपना हिंगड महावीरकुमारजी- मैसूर (467), सुनन्दा कुकलोल प्रकाशचन्द जी-पूना (467),रोहिणी लोढ़ा शाल भद्र जी-उज्जैन (467), दीपमाला जैन शैलेन्द्रकुमारजी-उज्जैन (467), अलका नाहर प्रसन्नचन्दजी नाहर-चेन्नई (467), अलका जैन संजीवजी-फरीदकोट-(467), प्रियंका मेहता अमित जी- जयपुर (467), मंजू मूसल कमलचन्दजी-जयपुर (467), मंजू डागा सुभाषचन्द जी- जयपुर (467), राजदुलारी सेठ भागचन्दजी-जयपुर (467), उषा सुराना गौतमचन्द जी-जयपुर (467), कंचन ओस्तवाल पारसमलजी-जोधपुर (467), पुष्पा गांधी ए. आर. गांधी-जोधपुर (467), कुसुम पुनमिया परेशजी पुनमिया-इचलकरंजी (466.5), प्रियंका जैन प्रकाशचन्दजी-जामनेर (466.5), मंजू भण्डारी लक्ष्मीचन्दजी-ब्यावर(466), मंजू लोढ़ा सुरेन्द्रसिंहजी-किशनगढ़ (466), सीमा कांकरिया विजयजी-पनवेल (466), तारा देवी चोरडिया कैलाशचन्दजी-उज्जैन (466), भावना छाजेड़ मनमोहनजी -चांदवड़(466), कुसुम जैन राकेशजी-जयपुर (466), श्वेता अब्बानी प्रशान्त जी - जोधपुर (466), चिराग लोढ़ा राजेन्द्रजी-जोधपुर (466), शोभा संकलेचा नेमीचन्द जी -जलगांव (466), निक्की लोढ़ा शांतिलालजी-अंजमेर (466), अजेश देशलहरा भूरेलाल जी-इन्दौर (465.5), ऋतु जैन महेन्द्र कुमारजी-इन्दौर (465 .5), रतन देवी जी मेहता जेठमलजी-बालोतरा(465.5),सीना मेहता नवीनचन्दजी-मुम्बई(465.5),चन्द्र कान्ता लुणावत विमलचन्दजी - शिमोगा (465.5), किन्नरी शाह नवीन जी - पीपलोद (465. 5),सपना कांकरिया प्रदीप जी -चेन्नई (465.5), अदिति मेहता सुनीलकुमार जी-गुड़गांव (465.5), सुनन्दा लोढ़ा सुभाषचन्द जी-धुलिया (465), चन्द्रा शाह जयन्तीलाल जी-ठाणा (465), विजयादेवी सालेचा महावीर चन्द जी - बालोतरा

(465), स्नेहा जैन सुभाषचन्दजी जैन–भरतपुर (465), हेमलता सिंघवी चन्द्रकान्त जी–राहुरी (465), अभय कुमार कोठारी नरेश जी–दूदू (465), पवन जैन नरेश कुमार जी–जयपुर (465), सुनीता हीरावत प्रमोदजी–जयपुर (465), इन्द्रचन्द सिंघवी किस्तूर चन्द जी–जोधपुर (465),मधुरिका जैन धर्मचन्द जी–जोधपुर (465), निधि कुमारी सालेचा महावीर चन्द जी–बालोतरा (464.5), शान्ता चण्डालिया पारस मल जी – भीलवाड़ा (464.5),सुवर्णा सिंगवी प्रवीण जी–राहुरी (464.5), परितोष जैन गौतम जी– सवाईमाधोपुर (464.5), विमला जैन बी. एल. कांकरिया–चेन्नई (464.5), अमृतदेवी भण्डारी पुनवान चन्द जी–जोधपुर (464.5), सुशीला पारख सोमचन्द जी–जोधपुर (464.5), रेखा कामदार रविन्द्र जी–नागपुर (464.5), एम. पी. जैन पी. एन. जैन–धुलिया (464), शिल्पा संघवी संजयजी–धुलिया (464), अनिता समदड़िया महेश समदड़िया–बैंगलोर (464), प्रभा कांकरिया अजीत राज जी–मेड़ता (464),प्रतिभा गांधी प्रदीपकुमारजी–पूना (464),सुषमा बैदमूथा विजय कुमारजी–चेन्नई (464), सरोज चोरडिया विनोदकुमारजी–बालाघाट (463.5), पुष्पा बोथरा रिखबचन्दजी–किशनगढ़ (463.5), अरुणा जैन संजीवकुमारजी–होशियारपुर (463.5), ज्योति बोथरा संजय जी– राजेगांव (463.5), हीरा कर्नावट रमेश लाल जी – अहमदनगर (463.5), संगीता जैन विजय जी–इन्दौर (463), आशा बोहरा महावीर चन्द जी–बैंगलोर (463), सरला जैन सुमतिलालजी जैन–कलवा (463), सुशीला बाई खिंवसरा सुभाषचन्दजी–मुकुटी (463), पिस्ता बाई बोहरा कैलाशचन्द जी–मैसूर (463), मनोहर सिंह भण्डारी मोहन लाल जी – किशनगढ़ (463), चम्पालाल टाटिया माणक चन्द जी–निफाड़ (463), बबिता जैन त्रिलोकचन्दजी–सवाईमाधोपुर (463), कपिल जैन नरेश जी–सवाईमाधोपुर (463), बीना मेहता भागचन्द जी–जोधपुर (463), सीमा नाहर धीरेन्द्र जी–जोधपुर(463), विजय लक्ष्मी लुणावत ज्ञानचन्दजी–पीपाड़ (462.5), नितेश जी जैन महेन्द्रकुमारजी जैन – सवाईमाधोपुर (462.5), संगीता मूथा रिखब चन्द जी–चेन्नई (462.5), तरुण खाटड़िया रसिकलालजी–पूना (462), कुमकुम जैन त्रिलोक चन्दजी–सवाईमाधोपुर (462), विमलाबाई सुखलेचा मिश्रीलालजी–चामराजा नगर (462), सुरेखा कोठारी राजेन्द्रजी–जामनेर (462), मधुकुमारी धोका शशि कुमार जी–इन्दौर (461.5), स्मिता ओस्तवाल चेतनकुमारजी ओस्तवाल–कलवा (461.5), सुमन जैन अभयकुमारजी – भवानी मण्डी (461.5), नमन मेहता सुमतिचन्दजी–पीपाड़ (461.5), सरस्वतीदेवी गोगड़ जितेन्द्रजी–जोधपुर (461.5), वंदना मरलेचा कमल चन्द जी–बैंगलोर (461), पंखुड़ी कवाड़ प्रभातकुमारजी–कानपुर (461), मीना चिण्डालिया दिलीपकुमारजी चिण्डालिया–वणी (461), अंकित जैन संजीव जी – फरीद कोट (461), पूनम जैन सुधीरकुमारजी–फरीदकोट (461), कविता भण्डारी जवरीमल जी–जोधपुर (461), ममता जैन मनीषजी–जोधपुर (461), रौनक–जोधपुर (461), मुन्नी देवी बाफना नवरत्नमलजी–जोधपुर (461), सुशील रांका इन्दरचन्द जी–जलगांव (461), गौरवजी कटारिया अशोककुमारजी कटारिया–अजमेर (461)

डॉ. मंजुला बम्ब	आशा गांग	सुनीता मेहता
अध्यक्ष	महासचिव	संयोजक

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 27 जुलाई 2008 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) प्रकाशित किए जा रहे हैं। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई हैं। **वरीयता सूची अगले अंक में प्रकाशित की जायेंगी।** उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए। यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना–पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 10 अक्टूबर 2008 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन–पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

9,10,31,32,33,35,37,39,81,83,85,98,99,102,103,132,138,142,149,150,159,161,163,
164,168,173,175,176,179,186,189,190,193,194,200,201,203,205,247,248,251,258,
259,260,298,299,301,302,303,304,305,306,332,333,334,336,337,347,358,359,362,
366,394,395,399,402,405,406,420,421,423,425,426,429,446,460,466,494,557,558,
562,566,567,571,574,601,605,606,607,608,609,610,614,615,639,641,643,646,647,
650,651,654,660,692,694,695,696,697,698,699,709,710,719,744,746,748,796,799,
802,803,806,807,813,831,848,855,858,859,869,872,873,880,883,889,893,952,955,
956,997,998,**1003**,4,17,22,36,38,43,45,117,123,124,127,129,132,139,145,147,150,
151,209,212,214,215,216,217,218,224,225,227,228,229,264,267,281,291,307,309,
327,386,387,388,390,397,475,484,485,492,494,497,502,511,529,603,604,605,608,
625,626,628,629,630,632,633,644,645,664,665,669,703,709,729,731,736,822,824,
825,826,828,829,830,832,835,836,837,838,848,874,880,881,922,923,924,925,926,
927,928,929,934,966,967,969,971,976,987,989,990,993,**2005**,17,18,20,21,22,23,
25,26,28,31,34,35,40,41,42,47,48,51,54,55,59,64,66,67,69,73,79,89,91,93,94,95,
96,97,102,104,105,133,144,146,147,148,149,150,152,156,157,165,171,172,173,
174,177,178,188,197,198,199,200,201,202,205,210,222,266,271,273,276,286,293,
298,301,304,306,307,309,311,334,335,339,340,341,358,363,364,388,396,397,400,
405,417,433,437,438,441,553,568,570,572,574,575,578,602,604,619,620,621,622,
623,632,637,640,668,669,688,691,693,694,706,714,715,716,767,769,770,773,774,
775,776,777,778,801,803,805,835,836,837,838,839,841,842,843,847,873,874,875,
877,881,882,883,884,887,888,889,935,936,**3007**,84,115,126,133,137,151,154,176,
179,180,201,210,216,224,225,236,237,238,240,241,265,267,281,282,297,333,345,
347,348,371,373,377,392,393,394,397,399,401,405,430,432,452,453,454,455,477,
478,480,481,513,514,515,516,537,574,575,576,577,578,586,595,596,598,599,602,
621,646,678,688,702,703,704,706,707,722,724,725,727,729,730,731,732,733,735,
736,737,738,739,740,776,797,799,828,829,830,831,858,859,880,882,884,885,886,
887,888,889,890,893,894,915,916,917,920,921,947,948,949,950,952,954,956,958,
961,962,998,**4003**,30,31,33,34,35,36,50,51,52,53,54,55,97,98,128,145,146,147,
176,179,237,238,240,244,251,253,257,258,263,265,284,285,286,289,290,291,292,
293,294,372,373,374,376,377,378,379,380,381,382,383,384,386,404,410,419,421,
425,453,454,464,467,472,498,499,502,507,508,513,520,523,530,535,536,543,544,
597,600,606,609,611,612,614,615,618,620,621,622,630,631,632,633,634,642,643,
645,647,648,650,657,659,670,680,681,682,683,684,685,686,687,688,689,690,691,
692,693,694,695,696,701,702,703,704,705,706,707,708,709,710,711,712,713,714,

716,717,718,720,722,723,724,725,727,728,729,730,731,732,734,735,737,738,739,
742,743,747,748,750,755,758,765,768,771,772,773,775,776,781,792,793,794,795,
797,798,800,801,802,803,804,805,812,816,817,818,847,849,852,856,857,859,860,
861,863,865,867,868,869,870,872,873,874,877,878,879,880,881,885,886,887,888,
889,890,891,892,893,894,896,898,899,900,903,904,908,909,910,912,915,916,920,
921,923,926,928,937,939,940,949,950,951,952,956,962,966,968,971,972,973,974,
975,976,977,980,982,983,986,987,988,989,990,992,993,998,999,**5004**,5,6,9,11,12,
14,16,17,18,19,21,22,23,25,27,28,29,31,36,37,38,41,42,43,44,47,48,49,52,55,57,
59,60,61,62,63,64,66,67,69,72,81,85,87,89,94,96,97,101,106,107,109,114,119,122,
125,126,131,136,138,141,143,144,145,147,148,149,150,152,154,155,156,157,159,
160,161,174,176,177,178,179,181,182,183,187,189,191,192,193,195,196,197,198,
199,200,201,203,204,206,207,209,212,213,214,215,217,218,219,220,221,222,223,
224,225,227,228,229,230,231,233,234,235,236,237,238,239,240,242,244,245,246,
247,248,249,250,251,252,253,254,255,256,257,258,259,260,261,262,263,264,265,
266,268,269,277,307,308,309,312,313,314,315,316,318,319,320,322,323,325,326,
327,329,333,334,335,353,361,362,363,366,368,372,375,376,378,379,380,382,383,
384,388,390,391,392,394,396,398,400,402,404,406,407,410,414,419,421,422,423,
429,433,436,437,438,439,441,442,444,445,448,449,451,454,455,456,466,472,476,
478,479,480,481,482,484,485,487,491,492,499,505,510,514,515,516,518,520,522,
526,529,530,531,532,533,534,535,536,537,538,539,540,541,542,543,544,546,548,
549,557,558,566,568,571,572,578,580,581,582,583,585,586,588,589,590,591,592,
593,594,595,598,599,600,601,603,608,609,610,611,613,614,618,621,622,623,625,
633,634,637,638,639,640,642,644,664,665,679,680,703,706,717,718,727,730,731,
732,745,746,747,748,749,750,751,752,768,769,770,771,774,775,776,777,778,802,
803,804,805,806,807,808,816,851,853,857,879,880,886,891,892,895,916,920,922,
923,924,925,927,929,930,944,951,**6055**,56,60,63,66,85,86,88,89,95,97,98,99,101,
102,103,104,105,106,107,108,132,136,137,138,139,172,197,198,199,215,232,233,
234,236,238,253,254,255,256,257,258,259,261,264,265,266,267,268,271,272,273,
278,297,299,302,303,304,305,328,353,359,368,369,373,377,380,389,391,393,394,
406,424,430,465,467,472,473,476,477,478,479,481,488,517,519,535,541,547,564,
565,566,570,589,616,631,632,642,643,645,646,686,687,688,689,697,698,708,710,
712,729,755,765,768,773,774,775,779,782,789,805,812,814,817,824,829,833,835,
836,849,850,867,900,901,902,917,918,919,928,949,951,953,956,960,963,973,974,
979,**7057**,58,59,60,70,71,72,80,89,90,91,94,105,106,107,108,109,110,111,113,
153,156,159,160,162,165,166,167,168,170,171,172,174,175,177,178,179,182,183,
188,189,190,192,194,199,200,202,203,204,209,211,215,231,232,233,270,273,274,
280,287,290,291,294,297,302,303,323,326,330,331,332,336,337,339,340,341,343,
344,356,357,358,367,368,370,371,372,379,392,399,400,401,402,403,404,405,406,
407,416,436,437,442,443,444,445,446,447,465,466,467,468,470,474,478,516,525,
531,533,534,537,543,544,571,572,573,574,575,576,577,580,581,583,586,623,641,
654,661,664,687,689,691,693,696,697,698,699,700,703,705,743,744,745,748,749,
757,759,761,763,764,765,766,769,770,771,772,773,842,845,934,937,938,939,942,
943,944,946,953,954,955,956,957,958,968,969,991,992,**8009**,10,11,12,26,29,44,
45,65,70,71,73,86,87,96,101,105,108,119,121,122,138,140,141,142,143,144,153,
156,163,205,206,207,208,209,215,216,222,223,224,227,230,239,243,253,260,262,
265,267,268,270,271,274,275,276,283,286,287,289,301,303,304,311,318,320,322,
323,324,325,326,327,331,332,334,345,352,354,355,357,358,361,363,364,371,380,
385,388,390,392,393,394,396,401,404,405,407,409,435,436,438,441,443,445,448,
450,451,452,458,460,461,462,467,474,475,476,477,479,483,484,486,488,489,490,
491,494,496,497,498,499,504,506,508,509,513,514,527,530,534,535,536,537,539,
544,546,547,550,551,553,557,559,560,561,562,565,568,569,571,572,573,574,602,
603,605,615,623,624,625,626,627,628,629,630,641,649,661,662,665,666,668,670,
672,673,674,686,694,695,696,699,704,708,709,710,717,718,719,722,723,724,733,
734,735,736,737,738,740,749,751,752,757,759,770,777,783,794,818,819,829,830,
831,845,851,858,863,865,873,874,877,879,881,886,887,888,889,890,891,894,895,
905,906,908,909,910,916,919,923,925,928,929,936,937,939,940,941,949,950,951,
956,957,968,971,973,974,975,976,977,979,983,988,989,990,991,992,994,995,996,

997,998,999,**9020**,29,33,34,35,36,37,38,44,46,51,53,56,57,64,72,75,86,89,90,93,
95,96,97,98,100,101,103,112,114,115,116,117,118,119,120,125,143,144,145=**1812**

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

105,7,9,52,209,13,68,69,88,89,309,10,11,12,28,41,73,75,76,409,30,32,67,530,77,
79,616,18,64,65,67,69,700,1,24,27,28,52,53,55,59,815,17,18,21,25,27,29,30,962,
67,**1057**,61,67,69,72,75,76,77,78,153,154,160,161,162,165,168,172,173,174,176,
206,234,238,239,240,245,249,269,333,335,338,339,343,346,349,360,399,400,402,
403,405,407,408,409,411,413,415,416,462,508,512,514,515,516,517,518,520,523,
579,580,581,636,637,663,711,712,734,741,744,746,748,751,754,756,759,769,773,
775,777,840,861,886,890,984,**2007**,36,106,112,113,114,116,117,118,119,120,135,
163,182,183,184,189,213,224,227,228,268,277,278,290,312,313,343,362,368,374,
418,419,500,501,502,503,504,506,507,508,555,580,585,595,605,606,624,642,671,
672,696,717,779,782,814,815,848,852,890,898,972,974,985,986,**3012**,16,101,
102,103,107,123,124,125,127,156,186,203,204,226,228,245,246,247,248,249,250,
251,285,286,352,353,388,406,409,410,411,413,456,457,458,483,484,505,506,517,
518,529,530,568,610,616,624,626,634,639,643,644,645,744,782,812,815,819,820,
832,864,865,866,867,868,870,871,896,898,899,900,903,922,923,924,925,926,927,
928,929,930,969,972,976,978,990,**4005**,39,40,58,59,60,61,63,64,65,84,116,118,
126,134,135,150,151,157,168,189,190,192,196,200,201,202,203,205,206,207,208,
209,211,214,216,218,233,239,266,267,268,269,272,283,287,295,296,297,299,300,
301,302,303,304,305,307,308,309,310,311,312,313,314,315,361,362,363,364,365,
366,367,368,369,370,371,387,388,389,391,392,393,394,395,396,397,398,452,455,
456,457,458,478,545,549,551,558,559,560,564,566,583,585,626,629,635,636,637,
639,651,652,653,654,655,660,661,662,663,664,665,666,667,697,807,808,810,819,
820,821,822,823,825,826,827,828,829,830,831,832,833,836,837,838,839,4,840,
841,844,846,930,931,932,933,934,935,942,946,947,948,**5162**,164,167,273,287,
574,648,649,666,668,692,693,694,696,708,709,754,755,756,757,779,781,782,784,
785,786,824,839,858,859,860,861,881,902,959,963,965,973,982,983,984,988,
6067,69,71,90,110,111,189,193,240,242,280,281,282,284,285,286,287,288,289,
08,309,310,329,330,341,342,343,344,345,346,347,348,350,379,381,468,503,505,
514,531,552,561,569,571,572,580,581,592,596,597,598,617,618,651,661,662,675,
759,770,798,799,801,815,819,820,837,854,861,868,870,886,893,894,895,896,897,
898,899,904,962,965,966,967,968,969,970,981,**7061**,62,73,74,237,241,267,307,
349,360,377,380,381,394,409,433,449,484,488,518,519,520,524,548,550,551,553,
555,589,624,625,626,642,643,649,655,656,657,708,709,753,754,846,847,854,858,
859,860,861,862,863,865,866,867,872,873,881,882,883,884,885,887,893,896,897,
898,901,914,915,924,926,927,928,929,931,936,959,979,993,**8015**,16,17,18,74,75,
85,115,126,127,129,149,164,252,279,293,300,329,340,360,410,412,413,517,518,
519,520,576,577,578,579,582,606,617,618,619,632,633,634,635,636,637,638,658,
659,667,688,692,785,792,799,822,826,833,842,844,859,860,898,899,907,913,927,
969,982,985,**9005**,12,15,16,27,28,40,52,54,66,88,94,104,107,110,126,127,128,129,
138,139=**740**

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

15,16,41,111,51,53,218,21,73,74,75,78,79,378,413,69,70,72,539,80,82,83,89,672,
73,704,32,64,833,34,35,37,917,19,24,34,74,76,80,81,**1082**,87,178,179,181,208,
210,246,248,250,273,369,370,371,372,373,376,377,378,418,419,422,424,525,527,
528,530,531,532,533,536,563,638,648,649,781,785,891,917,935,959,**2108**,109,
125,166,167,168,170,186,190,231,232,279,347,350,351,365,391,401,402,403,404,
411,412,413,420,421,422,423,424,425,447,449,453,454,455,456,509,510,511,512,
513,515,516,517,518,558,559,560,586,601,607,608,609,611,625,626,643,690,784,
785,786,788,790,823,902,904,905,906,**3000**,149,150,157,158,159,190,205,217,
230,231,252,253,254,255,274,275,289,311,312,336,337,355,415,459,460,461,462,
463,486,487,509,519,520,521,648,650,652,658,661,669,709,710,745,746,747,748,
750,768,771,786,788,801,823,824,825,833,907,934,981,982,991,992,**4006**,7,41,43
,66,67,68,99,101,102,103,104,105,158,159,160,161,162,163,170,171,172,174,222,
224,316,317,318,319,320,399,400,489,491,493,588,589,698,699,787,789,790,

5170,296,299,300,301,302,303,576,604,629,651,656,657,659,697,698,700,720,735,736,738,788,789,790,792,793,810,811,812,813,827,828,829,831,840,842,864,865,867,883,990,996,**6000**,4,73,75,91,92,114,116,117,118,119,120,121,122,217,244,245,312,331,332,333,383,384,395,396,463,509,558,574,575,576,577,582,583,600,601,636,653,678,679,691,699,700,761,785,786,802,845,855,864,865,871,873,905,931,989,**7033**,38,64,65,67,68,219,220,222,223,229,269,310,311,313,363,395,408,418,420,422,450,462,489,491,492,523,561,598,602,666,681,755,756,940,948,949,950,951,987,**8019**,20,21,22,28,33,46,49,98,130,132,180,181,184,203,213,232,294,305,341,415,417,521,522,583,607,612,620,660,663,677,698,793,835,855,861,942,980,984,986,**9041**,77,78,85,99,111,113,121,140= **441**

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

3,43,45,46,90,91,93,94,95,112,55,222,24,25,26,81,317,18,29,79,82,84,415,73,78,546,590,621,623,626,74,774,839,41,985,86,87,88,89,**1091**,94,95,100,189,190,194,251,252,276,428,429,432,545,547,548,616,639,650,651,794,796,868,876,892,938,939,**2123**,124,126,234,235,248,254,255,262,316,386,387,458,459,460,462,463,464,465,519,520,521,523,524,526,527,528,529,530,531,627,646,698,720,721,797,859,860,862,910,912,913,**3001**,2,20,192,316,320,321,356,357,378,464,465,466,468,470,471,472,473,488,491,510,511,512,671,672,692,711,712,713,714,715,752,802,803,804,834,835,836,909,935,986,987,988,994,**4069**,70,71,139,141,143,226,274,288,321,322,323,590,591,640,700,**5172**,173,304,670,671,673,701,710,711,712,739,762,795,796,814,833,844,870,872,**6015**,17,18,19,22,77,123,124,125,146,147,200,201,202,203,227,246,375,376,385,470,604,605,606,625,654,669,692,693,840,866,874,875,933,935,936,**7076**,115,116,117,118,119,224,225,268,283,314,424,425,438,494,496,497,526,562,563,604,607,627,669,670,682,683,713,974,975,**8034**,40,51,52,53,76,77,133,134,151,185,192,193,194,280,307,525,558,587,588,608,653,656,682,838,849,862,901,902,**9030**,42,43,59,70,80,105,109,122= **291**

जैन धर्म वन्दिका (पाँचवीं)

4,117,19,21,227,32,344,440,41,42,81,82,550,93,94,95,96,97,98,99,676,78,79.81,70705,06,41,42,842,995,**1103**,198,255,256,277,436,437,439,441,552,587,617,653,801,803,808,898,899,941,**2127**,191,192,236,263,317,318,352,414,415,466,468,469,535,587,588,589,612,613,614,628,629,649,722,724,791,863,918,920,922,923,924,963,964,965,966,967,**3055**,206,290,341,342,380,417,418,492,493,532,663,673,674,675,694,716,717,718,719,720,721,755,838,841,910,911,995,996,**4014**,16,17, 18,19,21,22,44,45,47,48,72,73,74,75,76,77,324,325,**5134**,321,632,660,661,662,663,674,764,798,835,836,845,873,906,**6023**,26,29,34,93,126,204,205,206,207,208,209,210,212,213,214,219,228,386,387,608,630,657,682,694,762,823,844,889,914,972,**7034**,39,47,120,121,315,411,412,427,439,451,500,628,644,650,651,673,941,965,976,**8024**,36,55,78,79,135,196,306,308,309,421,427,592,621,655,683,828,839,840,972,**9004**,130,131,136= **224**

जैन धर्म विशारद (छठी)

122,123,124,125,126,235,236,240,284,285,319,320,385,484,628,782,784,**1107**,109,110,201,202,258,259,278,279,442,445,559,560,640,656,809,811,812,900,901,919,920,952,965,**2137**,193,194,195,196,237,250,265,269,320,321,322,331,348,370,371,536,537,538,539,540,541,542,543,544,561,674,703,725,792,793,928,968,969,993,994,995,**3003**,56,160,161,198,233,358,382,420,495,497,498,499,500,533,697,842,843,989,**4049**,275,**5675**,676,765,766,799,846,875,908,**6035**,38,94,221,250,318,460,461,475,483,507,587,609,695,703,704,787,813,841,858,879,880,940,941,**7069**,122,378,440,452,527,529,629,634,674,675,676,685,960,963,998,**8038**,118,219,229,231,299,343,422,423,439,594,622,675,825,841,911,912,920,921,**9018**,63,81,124= **170**

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

136,157,241,322,386,387,454,455,683,684,685,**1113**,446,447,556,589,658,816,943,944,**2009**,128,129,130,323,324,325,327,349,359,562,590,630,726,870,950,**3058**,

164,166,280,421,437,502,700,844,845,846,847,848,849,**4078**,**5135**,714,715,911, **6080**,152,223,224,248,319,321,464,510,562,706,788,816,828,881,882,883,884, 943,**7103**,375,413,430,431,434,454,617,630,678,**8027**,57,58,94,136,200,254,281, 424,425,824,903= **96**

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

242,389,390,418,456,486,556,631,632,633,944,**1114**,115,205,451,618,641,817, 873,879,**2010**,251,252,329,932,976,**3167**,221,292,701,850,851,**4175**,5,724,800, 912,**6044**,45,46,82,229,249,251,322,323,658,672,684,696,945,**7125**,126,127,227, 238,432,435,455,456,530,631,632,633, 679,967,**8060**,81,82,255,597,610,**9123= 72**

जैन धर्म सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमीं)

8,128,345,686,687,688,689,690,**1452**,946,**2011**,12,132,140,141,218,353,564,565, 592,705,728,833,952,953,955,957,958,959,**3063**,64,168,234,362,852,912,**5884**, **6083**,230,594,612,659,742,766,804,830,831,890,908,909,**7077**,128,129,130,131, 132,133,134,135,239,458,646,**8526**,598,600,601,**9132= 67**

जैन धर्म सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

137,392,707,708,**2219**,243,292,678,947,948,**3069**,70,71,365,**4279**,**5741**,742,849, **6084**,614, 763,**7137**,148,647,648,**8426**,671,693,**9102= 29**

जैन धर्म सिद्धान्त रत्नाकर - पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं)

945,**1261**,385,455,821,903,**2244**,245,246,552,593,681,933,**3072**,73,74,75,76,169, 170,171,172,173,209,366,**6324**,615,**7138**,139,140,284,285,384,**9133= 34**

जैन धर्म सिद्धान्त रत्नाकर - उत्तरार्द्ध (बारहवीं)

325,**1948**,**2332**,594,682,**3367**,387,808,**5801**,**6388**,891,**7142**,619,**8204**,915,**9134**, 135= **17**

जैन धर्म सिद्धान्त शास्त्री - पूर्वार्द्ध (तेरहवीं)

244,**1262**,456,**2**,**333**,683,**3368**,**5605**,725,**7144**,145,**8083**,84= **12**

जैन धर्म सिद्धान्त शास्त्री - उत्तरार्द्ध (चौदहवीं)

29,245,743,**1263**,949,**3369**,**4594**,**6049**,**7147**,659,**8681= 11**

परिणाम रोका गया :-

(1) उमरी (रेल्वे स्टेशन) (2) **8730, 5279, 9001, 9002, 9003**

Applicant	Present	Pass %	Present %	Passed
9127	5425	4016	59.44	74.03

सुशीला बोहरा
संयोजक

राजेश कर्णावट
सचिव

बोर्ड की आगामी परीक्षा 4 जनवरी 2009 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा 4 जनवरी 2009, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें – *सुशीला बोहरा, संयोजक, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-०२९१-२६३०४९०, मोबाइल-९४१४१३३८७९*

समाचार-विविधा

मुम्बई चातुर्मास में अपूर्व उत्साह एवं अनूठी धर्म-साधना

परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश से प्रारम्भ ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना में आबाल-वृद्ध सबकी भावना उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रही है। श्रावण मास में वर्षा की निरन्तरता से भी स्थान की अनुकूलता के कारण धर्म-साधना में किसी भी प्रकार की कोई बाधा नहीं आई। कल्पतरु गार्डन भवन का विशाल प्रांगण, जिसमें प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, ध्यान-साधना, शास्त्र-वाचन सभी दैनिक कार्यक्रम सुव्यवस्थित चल रहे हैं, हर कार्यक्रम में मुम्बई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालुओं के अलावा बैंगलोर, चेन्नई, बंगारपेट, दिल्ली, कोलकाता, जयपुर, जलगांव जैसे नगरों के परिवारों द्वारा गुरु चरण सन्निधि में साधनारत रहना विशेष उल्लेखनीय है।

प्रातः श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा. प्रार्थना करवाते हैं, जिसमें श्रद्धालु भक्ति भावना से भावविभोर होकर प्रार्थना का आनन्द उठाते हैं। प्रातः 9.30 बजे से प्रवचन के प्रारम्भ के साथ सैकड़ों श्रद्धालुओं का स्वप्रेरित अनुशासन से प्रवचन सभा में बैठना एवं शान्त भाव से तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचनामृत का पान करना एवं परम पूज्य आचार्यप्रवर के प्रभावी एवं प्रेरक सुभाषित के साथ नित्य प्रति प्रत्याख्यान अंगीकार करने का सुन्दर रूप अत्यन्त मनभावन लगता है। पूज्य गुरुदेव शनिवार-रविवार एवं विशिष्ट पर्व दिवसों पर प्रवचन फरमाते हैं। प्रवचन का श्रोताओं के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता ही है परिणामस्वरूप व्रत नियमों में हर दिन कुछ-न-कुछ वृद्धि देखने को मिल रही है। शीलव्रत के खंद एवं बारह व्रत अंगीकार करने के साथ कषाय-त्याग के नियम भी बराबर हो रहे हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर कल्पतरु गार्डन भवन का विशाल प्रांगण सबकी साधना में सहायक बन रहा है। परठने की समुचित सुविधा के कारण दया-संवर जो महानगरों में प्रायः कम होते हैं, आचार्यप्रवर के इस चातुर्मास में बहिनों और भाइयों में पचरंगी, नौरंगी एवं ग्यारहरंगी के अलग-अलग आयोजन उमंग-उल्लास के साथ

चल रहे हैं। संवर-पौषध में संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सदस्यगण, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, प्रमुख श्रावक-श्राविकाओं के साथ मुम्बई महानगर के विभिन्न उपनगरों एवं समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के साधकों द्वारा आस्रव त्याग का सुन्दर रूप सबको सहज प्रेरित एवं प्रभावित करता है। संघ-संरक्षक-मण्डल के संयोजक एवं मुम्बई संघ प्रमुख श्री मोफतराज जी मुणोत, रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, संघ कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत, गजेन्द्र निधि के प्रबन्ध ट्रस्टी श्री नवरतनमल जी कोठारी, संघ संरक्षक प्रो. चांदमल जी कर्नावट, श्री उमरावमल जी सुराना, संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, स्थानीय संघाध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत, संघमंत्री श्री दिलखुशराज जी मेहता, चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री रतनराज जी भंडारी सहित संघ, युवक परिषद् श्राविका मण्डल के पदाधिकारीगण एवं संघ सेवी-संत सेवी सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं के अलावा तेरापंथी, मंदिरमार्गी समाज के भाई-बहिनों की प्रवचन सभा में उपस्थिति देखकर मुम्बईवासियों को आचार्यप्रवर का यह चातुर्मास हर दृष्टि से सफल व सार्थक लग रहा है।

दिन भर साधना-आराधना के कार्यक्रमों में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में प्रातः प्रार्थना के पश्चात् 8.30 बजे से अन्तगड़ सूत्र का वाचन महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. सुन्दर विवेचन के साथ फरमाते हैं, जिससे जैन समुदाय में शास्त्र श्रवण की रुचि बढ़ी है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. प्रेरक प्रवचन एवं आचार्यप्रवर के हृदयस्पर्शी प्रवचनामृत का पानकर जन समुदाय अत्यन्त प्रभावित है। मध्याह्न में 2 से 3 बजे तक कल्प सूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. फरमाते हैं। मध्याह्न में 3.10 से 4 बजे तक ध्यान-साधना में सैकड़ों भाई-बहिन तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के निर्देशन में ध्यान-साधना के माध्यम से अपनी ऊर्जा को ध्यान में लगा रहे हैं। अपराह्न 4 से 5 बजे योग साधना कार्यक्रम में भी श्रावक-श्राविकाओं का अच्छा उत्साह है। सायंकालीन प्रतिक्रमण में श्रावकों की विशाल संख्या एवं महासती मण्डल के 'सी' विंग में बहिनों की उपस्थिति सराहनीय है। प्रतिक्रमण पश्चात् संतों की सन्निधि में श्रावक वर्ग एवं महासती मण्डल की सेवा में बहिनें प्रश्न चर्चा करती हैं। संवर-पौषध की साधना में अपूर्व उत्साह मुम्बई महानगर के लिए अजूबा है। जो सुख-सुविधा से कभी महरूम नहीं रहते उनका साधना-आराधना में सक्रिय होना आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव का कारण तो है ही संत-सतीवृन्द के पुरुषार्थ से एवं सतत प्रेरणा से यह संभव हो सका है।

हर रविवार को बालक-बालिकाओं का प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक संस्कार शाला में आना तथा आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के दर्शन लाभ लेने की अच्छी प्रवृत्ति चल रही है। 15 से 17 अगस्त 2008 तक तीन दिन का जैन जीवन शैली से जीने की कला के अभ्यास हेतु बालकों एवं युवकों का शिविर प्रभावशाली रहा।

चातुर्मास में प्रतिदिन जहाँ सामूहिक प्रत्याख्यान में जीवन-निर्माण के सूत्र मिल रहे हैं, व्यक्तिशः उपवास आयंबिल, एकाशन से लेकर मासक्षपण एवं मासक्षपण से ऊपर तक की अनेकानेक तपश्चर्याओं में कतिपय उल्लेखनीय तपस्याएँ हुई हैं; तप-साधना में श्रावक-श्राविकाओं का पुरुषार्थ बना हुआ है। मुम्बई के तपस्वी बन्धु श्री धर्मेन्द्र कुमार जी लोढ़ा ने मौन सहित 41 दिवसीय सुदीर्घ तपश्चर्या की। लोढ़ा साहब विगत छः सात वर्षों से मौन सहित मासक्षपण तप करते आ रहे हैं, इस बार 41 दिन की तप-साधना उनके प्रबल पुरुषार्थ का उदाहरण है। वीरमाता श्रीमती शशिकला जी इन्दरचन्द जी गांधी ने जोधपुर से गुरु चरण सन्निधि में यहाँ आकर मासखमण किया। श्रीमती चैनीबाई पुखराज जी कोठारी, श्रीमती ऋतुजी पंकज जी संकलेचा, श्रीमती विमला देवी बाबूलाल जी उज्ज्वल ने मासक्षपण तप की साधना की। तपस्वी श्रावकरत्न श्री मानसिंह जी ने एक साथ पन्द्रह के प्रत्याख्यान किए हैं, मासखमण तक बढ़ने की भावना है। श्रीमती संतोष इन्दरमल जी जैन के 21 की तपश्चर्या हो चुकी है। तेले, पाँच, आठ की एवं अठाई से ऊपर तक की सैकड़ों तपश्चर्याएँ हो चुकी हैं, तप साधना का अनवरत क्रम चल रहा है। पचरंगी, नौरंगी, ग्यारहरंगी के अलावा पर्वाधिराज पर्युषण में अखण्ड नमस्कार मंत्र का जाप सुव्यवस्थित रूप से गतिमान है।

ज्ञान-साधना की दृष्टि से चातुर्मास में सामायिक-प्रतिक्रमण, बोल, थोकड़े सीखने हेतु कई नए युवक जुड़े हैं, स्वाध्यायी एवं बुजुर्ग जानकार श्रावक-श्राविकाएँ आगम-शास्त्रों के अभ्यास में सक्रिय हैं। विरक्त-विरक्ता भाई-बहिन भी ज्ञानाराधन में जागरूक हैं।

चातुर्मास में मुम्बई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों से प्रवचन सभा में आने वालों के साथ दया-संवर, आयंबिल-एकाशन करने वालों की एवं बाहर से पधारने वालों की संघ द्वारा भोजन-चाय-नाश्ते की व्यवस्था यहीं होने से किसी को कहीं आने-जाने की आवश्यकता तक महसूस नहीं होती। संघ के पदाधिकारियों द्वारा आत्मीयता के साथ आतिथ्य सेवा अनुकरणीय-अनुमोदनीय है।

कल्पतरु गार्डन, कांदिवली में आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द का यह

चातुर्मास आने वाले समय में यादगार रहेगा। युवक-युवतियों का व्यवस्था में सहयोग विशेष उल्लेखनीय है। आचार्यप्रवर का यह चातुर्मास संघ की गरिमा के अनुरूप दीप्तिमान हो रहा है। सितम्बर में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं का वार्षिक साधारण सभा के साथ रत्नसंघ सम्मान, आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान, स्वाध्यायी सम्मान एवं गुणी अभिनन्दन का कार्यक्रम मुम्बई में रखा गया है। आचार्यप्रवर प्रभृति संत-संतीवृन्द के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

गढ़ सिवाना में तपाराधन एवं धर्माराधन का उत्साह

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में गढ़ सिवाना नगरी में उमंग एवं उल्लास के साथ धर्माराधना का वातावरण बना हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ के समय सुश्राविका श्रीमती बक्षुदेवी जी मोहनलाल जी कानूंगा के ग्यारह की तपस्या चल रही थी। बहिन ने आगे बढ़ते हुए 31 दिवस की तपाराधना पूर्ण की। श्री दीपचन्द जी गिरधारीलाल जी मेहता ने अर्धमासखमण कर तप-साधना में ठोस कदम रखा। श्रावक-श्राविकाओं में अठाई, नौ आदि की तपस्याएँ निरन्तर चल रही हैं। एकाशन के तीन मासखमण हुए हैं।

पर्युषण पर्वाराधन के अवसर पर बालोतरा, भोपालगढ़, पीपाड़, जोधपुर, कंवलियास, निमाज, मेड़ता, जयपुर आदि स्थानों से 100 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने यहाँ उपस्थित रहकर जीवन को तप-त्यागमय बनाया। श्री गुलाबचन्द जी पनवडिया, कंवलियास ने चौविहार त्याग के साथ पाँच की तपस्या का आदर्श उपस्थित किया। पर्युषण के दिनों में ग्यारह, नौ (5), अठाई (15), पन्द्रह, अष्टरंगी, पचोला, तेला, बेला आदि की उल्लेखनीय तपस्याएँ हुई। दयाव्रत-संवर, उपवास-पौषध के ठाट रहे। अभ्यागतों एवं स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं में तप-त्याग का अनूठा उल्लास नजर आया।

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर , मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्री यशवन्तमुनि जी म.सा., श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. आदि संतवृन्द एवं महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि महासती वृन्द के सान्निध्य में अपूर्व शान्ति के साथ तपाराधन, ज्ञानाराधन का वातावरण उत्साहजनक है। यहाँ अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

द्वारा संस्कार शिविर भी आयोजित हुआ, जो उल्लेखनीय रहा।

महासतियाँ जी के चातुर्मास में धर्म प्रभावना

पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6 का वर्द्धमान भवन, पावटा में यह प्रथम स्वतन्त्र चातुर्मास है। धर्माराधना की दृष्टि से यह चातुर्मास विशेष उल्लेखनीय है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तप-त्याग, दया, संवर-पौषध एवं ज्ञानाराधन, धर्माराधन में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह प्रशसंनीय है। प्रवचन सभा में उपस्थिति उल्लेखनीय रहती है। महापर्व पर्युषण तक चार मासखमण तप हो चुके हैं। 1. श्रीमती सीमाजी भंसाली (30 वर्ष) धर्मपत्नी श्री अभिषेक जी भंसाली, 2. श्रीमती सूरजबाई जी पारख धर्मपत्नी श्री मिश्रीमल जी पारख, 3. श्रीमती मंजू जी कोठारी (34 की तपस्या) धर्मपत्नी श्री यशवंत जी कोठारी, 4. श्रीमती शशिकला जी इन्दरचन्द जी गाँधी (यहाँ 27 की तपस्या कर मुम्बई में मासखमण पूर्ण किया)। पन्द्रह दिवसीय तपस्याएँ 5, तेरह की तपस्या 1, ग्यारह की तपस्या 7, दस की तपस्या 5, नौ की तपस्या 9 एवं अठाई तप 21 हो चुके हैं। सात, पचोला, चोला अनेक हुए हैं। तेले की तपस्या 175 हो चुकी है। सिद्धितप, श्रेणीतप एक-एक हुए हैं। भाइयों में एक नवरंगी एवं बहनों में 2 नवरंगी हो चुकी है, पंचरंगी 8 हुई है। दयाव्रत की संवर साधना की निरन्तरता बनी हुई है, लगभग 1200 दयाव्रत हो गए हैं। रात्रिकालीन संवर-पौषध लगभग 1700 हो गए हैं। 13 बहनें एकान्तर उपवास कर रही हैं। एक बहन बेले-बेले उपवास कर रही है। इसके अतिरिक्त एकाशन, आयम्बिल, उपवास, बेला आदि की तपस्या का ठाट रहा। चार दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए हैं- 1. श्रीमती एवं श्री आर.के.मेहता, 2. श्रीमती एवं श्री अमरमल जी मेहता, 3. श्रीमती विद्या देवी एवं श्री सरदारचन्द जी सुराणा, 4. श्रीमती सुधा जी एवं श्री अजीतराज जी लोढ़ा।

अपराह्न में शास्त्रवाचन का कार्यक्रम चलता है तथा धार्मिक प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी के कार्यक्रमों में प्रतियोगियों की उपस्थिति सराहनीय रही। सायंकालीन प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रही। प्रातः काल शास्त्रवाचन, प्रश्नोत्तर एवं व्याख्यान के पश्चात् दिन में चौपाई चलती है। यहाँ जैन रत्न बालिका मंडल का गठन हुआ है। श्रावक-श्राविकाओं की धर्माराधना के प्रति उत्साह की दृष्टि से यह चातुर्मास अत्यन्त सफल रहा है।

वैशाली नगर, अजमेर- सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में धर्माराधन उत्साह एवं उमंग के साथ गतिशील है। यहाँ 24 से 30

जुलाई तक श्राविकाओं का धार्मिक प्रशिक्षण शिविर प्रतिदिन दिन में 1 से 4 बजे तक आयोजित किया गया, जिसमें 40 महिलाओं ने भाग लिया। नवकार मंत्र पर आधारित परीक्षा में 50 महिला-पुरुषों ने भाग लिया। महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. के 80 वें वर्ष के उपलक्ष्य में 140 भाई-बहनों ने सामूहिक एकाशन तप किया।

- मघराज खींवसरा, सचिव

मानसरोवर, जयपुर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री दर्शनप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास से मानसरोवरवासी पुलकित हैं, क्योंकि मानसरोवर क्षेत्र में यह प्रथम चातुर्मास है। यहाँ पर्युषण पर्व तक लगभग 200 तेले हुए हैं। श्री पूनमचन्द जी दुगड़ ने मासखमण तप किया है। 30 अठाई तप एवं ग्यारह, नौ एवं पचोले की तपस्याएँ भी हुई हैं। चार दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है- 1. श्रीमती एवं श्री गौतमचन्द जी बरमेचा, 2. श्रीमती एवं श्री भंवरसिंह जी जैन, 3. श्रीमती एवं श्री ज्ञानचन्द जी चोरडिया, 4. श्रीमती एवं श्री देवेन्द्रकुमार जी सामोता। पर्युषण के आठ दिनों में धर्माराधन का ठाट रहा। महावीर भवन खचाखच भरा रहा। 53 अष्टप्रहर पौषध हुए। पर्युषण के पूर्व 17 अगस्त को 150 दयाव्रत एवं एकाशन हुए, 24 अगस्त को 100 दयाव्रत एवं एकाशन हुए। पर्युषण में 31 अगस्त को 250 दया-एकाशन हुए। तेले की लड़ी चातुर्मास के प्रारम्भ से चल रही है। सम्वत्सरी के दिन लगभग 500 उपवास हुए हैं। महासती मण्डल की नेश्राय में प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, स्तोत्र एवं थोकड़े सीखे जा रहे हैं। पर्युषण पर्व में 8 दिन नवकार मंत्र का जाप चला। - *नरेन्द्र जैन*

बेलगाँव- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्माराधन एवं तपाराधन निरन्तर गतिशील है। यहाँ श्री महेन्द्र भाई नेमीचन्द बोरा ने 41 उपवास किए हैं। सूरज बेन ने 16 उपवास, मनीता राजेन्द्र सामसुखा ने 11 उपवास किए हैं। अठाई, पचोला, तेला, उपवास आदि की तपस्याएँ भी हैं। नमस्कार महामन्त्र का अखण्ड जाप जारी है। - *राजेन्द्र पी. जैन*

मेड़ता सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास से मेड़ता सिटी के आबाल-वृद्ध सभी उत्साहित है। प्रतिदिन के सुनियोजित कार्यक्रमों के साथ-साथ पर्युषण के अष्ट-दिवसों में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसमें अच्छी धर्म-प्रभावना हुई। मेड़ता सिटी में दर्शनार्थियों के ठहरने की व्यवस्था- स्वाध्याय भवन, दाणियों का मौहल्ला में रखी गयी है। सम्पर्क करें- 1. हस्तीमल जी डोसी-मेड़ता, 9413368997, 2. महावीरजी ओस्तवाल, 9414608948

शास्त्रीनगर,जोधपुर- महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4 का यह चातुर्मास शास्त्रीनगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड एवं निकटवर्ती क्षेत्रों के लिए आध्यात्मिंक रुचि उत्पन्न करने में वरदान सिद्ध हुआ है। महासती श्री इन्दुबाला जी एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी के आध्यात्मिक एवं जीवनोपयोगी प्रेरक प्रवचनामृत का पान कर सभी जन प्रमुदित हैं। प्रतिदिन प्रातः 8 से 8.30 बजे धार्मिक कक्षा में महासती श्री मुदितप्रभा जी युवकों को प्रेरणा करती हैं। तदनन्तर शास्त्रवाचन, प्रतिक्रमण एवं धर्मचर्चा के कार्यक्रम यथा समय चलते हैं। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. एवं श्री सागरमल जी म.सा. की पुण्यतिथि के प्रसंग पर भाइयों एवं बहनों में अलग-अलग पंचरंगी हुई। पर्युषण पर्वाराधन अत्यन्त उमंग एवं उल्लास के साथ मनाये गए। प्रातः 8.45 बजे से 9.30 बजे तक अंतगडसूत्र का वाचन महासती श्री अंजनाश्री जी ने किया तथा विवेचन महासती श्री देवागंना श्री जी ने किया। उसके पश्चात् 11 बजे तक महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के पावन प्रवचन हुए। अपराह्न कल्पसूत्र का वाचन एवं सायंकाल प्रतिक्रमण तथा धर्मचर्चा के कार्यक्रम चले।

चातुर्मास में विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि है- 12 दम्पतियों द्वारा आजीवन शीलव्रत के नियम। यह नियम ग्रहण करने वाले दम्पती हैं- 1. श्रीमती मैनादेवी जी एवं श्री मूलचन्द जी लुणावत, 2. श्रीमती लीलाजी एवं श्री पूरणराज जी अब्बाणी, 3. श्रीमती एवं श्री नेमीचन्द जी श्रीमाल, 4. श्रीमती सविता जी एवं युवारत्न श्री सुरेश जी जीरावला (मात्र 35 वर्ष की वय में) 5. श्रीमती सज्जनकंवर जी एवं श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, 6. श्रीमती पारसकंवर एवं श्री जवरीमल जी कुम्भट, 7. श्रीमती उत्तम जी एवं श्री अर्जुनराज जी मेहता, 8. श्रीमती मदनकंवर जी एवं श्री प्रकाशचन्द जी चौपड़ा, 9. श्रीमती सावित्री जी एवं श्री सम्पतराज जी सुराना, 10. श्रीमती सुमनजी एवं श्री नवरतन जी डागा (महामंत्री), 11. श्रीमती प्रमिला जी एवं श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, 12. श्रीमती बीना जी एवं श्री भागचन्द जी मेहता।

29 अगस्त को श्रीमती शान्तिदेवी कोठारी धर्मपत्नी श्री शान्तिलाल जी कोठारी, खांगटा ने 23 दिवसीय तप के प्रत्यख्यान किए।

पाली-मारवाड़- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही धर्माराधन का ठाट लगा हुआ है। अब तक 4 पंचरंगी हो गई है। तेले की लड़ी, आयम्बिल एवं एकाशन की लड़ी चल रही है। श्राविकाओं का 11 दिन का धार्मिक

शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 55-60 बहनों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविर में श्री जिनेन्द्र जी जैन, जयपुर न अध्यापन किया। पर्युषण पर्व में भाई-बहनों में नवरंगी का आराधन हुआ है। यहाँ से 22 अगस्त को गढ़सिवाना में उपाध्यायप्रवर की सेवा में संघ ने उपस्थित होकर चातुर्मास पश्चात् सम्भाव्य दीक्षाओं के लिए पाली की विनति प्रस्तुत की है।

शिमोगा- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के पावन सान्निध्य में 8 से 10 अगस्त, 2008 तक तीन दिवसीय 'दिव्य रत्न निधि' शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में बैंगलोर, मैसूर, चेन्नई, हुबली, कोप्पल, शिमोगा आदि अनेक क्षेत्रों से आकर 25 शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञान-ध्यान में अभिवृद्धि की। शिविर प्रातः 6.30 से रात्रि 11.30 बजे तक निराबाध चला। शिविर में जिनशासन का महत्त्व बताकर उसकी सेवा के लिए सभी को उत्साहित किया गया। शिविर की विशेषता यह रही कि एक-एक शिविरार्थी को एक-एक विषय पर बिन्दु लिखाए गए, जिससे वे उस विषय पर कभी भी कक्षा ले सकें। उदाहरण के लिए विषय थे- देव, गुरु, धर्म, 25 बोल, पाँच अभिगम, 14 नियम, 3 मनोरथ, पुण्यवान को प्राप्त 10 बोल, देव-गुरु-धर्म, चमड़ा, सिल्क, फटाखे, जिनशासन, अंडे का केक, सकारात्मक विचार, मानव सम्बन्ध। सभी सदस्यों का उत्साह प्रशंसनीय था। नई प्रतियोगिताओं के आयोजन की कला का भी प्रशिक्षण दिया गया। एक ही घण्टे में 40-50 महापुरुषों की कथा बच्चों को सिखाने की भी प्रतियोगिताएँ हुई। दिव्य रत्न निधि के द्वारा विभिन्न स्थानों पर सम्यक् संस्कार शिविर आयोजित करने की योजना बनाई गई।

शिविर में महासती मंडल का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्री अनिल जी भंसाली-बैंगलोर एवं श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर ने भी अध्यापन किया।

यहाँ 15 अगस्त से 17 अगस्त तक **'कर्म का मर्म'** शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 150 शिविरार्थियों ने भाग लिया। यह शिविर प्रातः 10.30 से दोपहर 12.00 बजे तक आयोजित हुआ। शिविर में बताया गया कि जीव कर्म का बंध किस तरह से करता है और किस तरह से उसका फल प्राप्त होता है। शिविर में एक-एक कर्म को प्रायोगिक एवं व्यावहारिक उदाहरणों से समझाया गया।

24 अगस्त को **'व्यसन-मुक्ति अभियान दिवस'** मनाया गया, जिसमें व्यसनमुक्ति के लिए संकल्प पत्र भरे गए।

बीजापुर- महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्माराधन

का ठाट लगा है। यहाँ प्रार्थना, प्रवचन, चौपाई, प्रतिक्रमण, धर्म-चर्चा आदि के कार्यक्रम नियमित रूप से चल रहे हैं। आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के पुण्य दिवस पर 80 तेले एवं एकासन हुए। महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. के मासखमण का पारणा 18 अगस्त को सम्पन्न हुआ एवं महासती श्री उदित प्रभाजी म.सा. के 33 उपवास का पारणक 25 अगस्त को पूर्ण हुआ। महासतीद्वय के पूर पर अठाई, तेला, एकाशन तेला, आयम्बिल आदि 80 हुए हैं। कच्चे पानी का त्याग, जमीकन्द का त्याग, रात्रि भोजन का त्याग आदि अनेकविध त्याग हुए। चातुर्मास में महासती श्री इन्दिरा प्रभा जी एवं महासती श्री रक्षिता जी प्रवचन फरमा रहे हैं। पर्युषण में अंतगडवाचन एवं विवेचन महासती श्री उदितप्रभाजी ने किया। कल्पसूत्र का वाचन श्री संयमप्रभाजी म.सा. ने किया। युवकों को भी दशवैकालिक, सामायिक, प्रतिक्रमण का स्वाध्याय कराया। पर्युषण पर्व के आठों दिन नमस्कार मंत्र का अखण्ड जाप चला। यहाँ 20 वर्षों से प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम चलता है। व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति रही। उपवास, बेला, तेला, आदि की अनेक तपस्याएँ हुई हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा हेतु आमन्त्रण-सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवम् सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा का आयोजन रविवार, **दिनांक २१ सितम्बर, २००८ मध्याह्न १ बजे से कल्पतरु गार्डन, अशोक चक्रवर्ती रोड के सामने, कांदिवली (ई.) मुम्बई** में रखी गई है।

गुणी अभिनन्दन सम्मान समारोह का आयोजन शनिवार, दिनांक २० सितम्बर, २००८ सायं ७.३० बजे से इसी स्थान पर रखा गया है।

विचारणीय विषय सूची-

1. मंगलाचरण
2. गत बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन।
3. गत बैठक के निर्णयों की क्रियान्विति की जानकारी।
4. कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत वर्ष 2007-2008 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2008-2009 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
5. संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के उन्नयन हेतु सुझावों पर विचार एवं निर्णय।
6. संघाध्यक्ष महोदय की आज्ञा से अन्य विषयों पर विचार विमर्श।

-: सम्पर्क सूत्र :-

श्री पारसचन्द जी हीरावत मो.-98210-13530/98206-31366

श्री नरेन्द्र जी हीरावत मो.- 98210-40899

नोट-

1. परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा का लाभ भी प्राप्त होगा।
2. मुम्बई पधारने वाले महानुभाव अपने कार्यक्रम की पूर्व सूचना उपर्युक्त पदाधिकारियों में से किसी एक के फोन पर अवश्य करें। *-नवरतन डागा, 09828032215*

10 अगस्त को संघ एवं सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

रविवार, 10 अगस्त को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र आदि संस्थाओं की कार्यकारिणी बैठक जोधपुर में आयोजित हुई। बैठकों में आय-व्यय के लेखे पारित हुए तथा विभिन्न उपयोगी निर्णय लिए गए। समागत सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने पावटा में शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. से मार्गदर्शक उद्‌बोधन श्रवण किया। शास्त्रीनगर में महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के प्रवचनों का लाभ लिया।

महाराष्ट्र सहित दक्षिणी राज्यों का दो-दिवसीय सम्मेलन 1 व 2 नवम्बर को

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र सहित दक्षिणी राज्यों में गुरुभ्राताओं का दो-दिवसीय सम्मेलन मुम्बई महानगर के कांदिवली क्षेत्र स्थित कल्पतरु गार्डन भवन में 1 व 2 नवम्बर, 2008 को रखा गया है। परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द ने महाराष्ट्र, कनार्टक, तमिलनाडु प्रदेशों में आठ सफल चातुर्मास किए, नौवां चातुर्मास मुम्बई में उमंग-उल्लास से चल रहा है।पूज्य गुरुदेव के विचरण-विहार,चातुर्मास दीक्षा महोत्सव,अक्षय तृतीया एवं महापुरुषों के विशिष्ट पर्व दिवसों पर त्याग-तप की विपुल आराधनाएँ हुई हैं। गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में सेवा-भक्ति का अनूठा

आदर्श देखने को मिला, हर क्षेत्र में हमारी दक्षिणी राज्यों के गुरु भ्राताओं के साथ आत्मीयता, अपनत्व और अनुराग बढ़ा है। पूज्य गुरुदेव के जलगाँव, धूलिया, बालकेश्वर, इचलकरंजी, बैंगलोर, चैन्नई, बंगारपेट, बीजापुर के यशस्वी चातुर्मास, शेखेकाल विचरण-विहार, स्वाध्याय-साधना में व्यक्तिशः एवं संघ स्तर पर जिनशासन की प्रभावना में अपूर्व सहयोग मिला। हम समस्त सहयोग प्रदाताओं के प्रति धन्यवाद-साधुवाद ज्ञापित कर अपनत्व वृद्धि हेतु सम्मेलन में विचार-चिन्तन भी करेंगे।

महाराष्ट्र सहित दक्षिणी राज्यों के गुरुभ्राता 1 एवं 2 नवम्बर 2008 के सम्मेलन में पधारने हेतु अभी से अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करें एवं अपने कार्यक्रम की अग्रिम सूचना प्रदान कर अनुग्रहीत करें। - *एरसचन्द जी हीरावत, मुम्बई*

श्री जैन रत्न युवक परिषद् की कार्यकारिणी बैठक एवं सम्मान समारोह

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की 46वीं केन्द्रीय कार्यकारिणी बैठक का आयोजन शनिवार, 20 सितम्बर 2008 को दिन में 12.30 बजे से कल्पतरु गार्डन, अशोक चक्रवर्ती क्रोस रोड़ के सामने, कान्दिवली (ईस्ट), मुम्बई में रखा गया है। बैठक में विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा के साथ अंकेक्षित खातों एवं वार्षिक बजट की भी प्रस्तुति होगी। युवक परिषद् द्वारा कार्यकर्ता सम्मान-समारोह 20 सितम्बर को ही अपराह्न 1.30 बजे से आयोजित है।

सम्पर्क सूत्रः- (11) श्री अजय जी हीरावत, शाखा प्रमुख, मुम्बई-022-24225420, 093225-32079 (2) श्री नरेन्द्रकुमार जी डागा, शाखा सचिव, मुम्बई-098211-26803 - *महेन्द्र सुराणा, महामन्त्री- 94149-21164*

गढ़सिवाना में नैतिक एवं धार्मिक शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में षड्दिवसीय नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कार शिविर का आयोजन 3 से 8 अगस्त 2008 तक गढ़सिवाना जिला-बाडमेर में आयोजित किया गया। शिविर में 12 वर्ष से ऊपर के 216 युवक-युवतियों एवं श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर में सवाईमाधोपुर, जयपुर, जोधपुर, सुमेरगंजमण्डी, बजरिया,आलनपुर,आवासन मण्डल, फलौदी,कुण्डेरा,अलीगढ़,हिण्डौन,भरतपुर, ब्यावर, बालोतरा, पीपाड़शहर, सिवाना आदि विभिन्न ग्राम-नगरों के शिविरार्थियों ने पूर्ण लगन एवं उत्साह के साथ प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक 9

कक्षाओं में सामायिक, ध्यान, प्रवचन एवं विविध कालांशों में ज्ञानार्जन किया।

उपाध्याय प्रवर पं. रत्नश्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. द्वारा प्रवचन के माध्यम से प्रभावी प्रेरणाएँ प्रदान की गईं। फलस्वरूप सभी शिविरार्थियों ने प्रवचन सभा में निम्नलिखित प्रत्याख्यान स्वेच्छा से ग्रहण किए - 1. भ्रूण हत्या नहीं करना एवं नहीं करवाना। 2. आत्महत्या नहीं करना। 3. आतिश बाजी नहीं करना। 4. सड़कों पर नृत्य नहीं करना। 5. प्रीतिभोज में जमीकंद का प्रयोग नहीं करना। 6. अश्लील फिल्में नहीं देखना। 7. सप्त कुव्यसन का त्याग रखना। 8. रात्रि भोजन नहीं करना। 9 मांसाहारी होटलों में भोजन नहीं करना। 10. धर्मस्थानों में पहनावे का विवेक रखना।

प्रवचनोपरान्त श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. एवं महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. का विशेष मार्गदर्शन एवं प्रभावी प्रेरणा प्राप्त हुई। चार कालांशों के माध्यम से शिविरार्थियों को कक्षानुसार सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल, वक्ता के गुण, देव, गुरु,धर्म, गति-आगति आदि विविध विषयों की विस्तृत जानकारियाँ प्रदान की गईं। सामूहिक कक्षा के माध्यम से सामायिक, प्रतिक्रमण, सामान्य जीवन संबंधी एवं मान्यता भेद की जिज्ञासाओं का समाधान सम्यक्रूपेण सरलता के साथ प्रमाण सहित रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन जोधपुर द्वारा किया गया।

सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् शिविरार्थियों के ज्ञानार्जन, उत्साहवर्धन एवं प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से विभिन्न रुचिप्रद एवं शिक्षाप्रद प्रतियोगिताओं यथा मेरी आवाज सुनो, अंताक्षरी प्रतियोगिता, हम बनेंगे ज्ञानवान, प्रश्नमंच, कौन बनेगा ज्ञान स्मार्ट शिविरार्थी आदि का आयोजन किया गया।

शिविरार्थियों की लिखित परीक्षा के माध्यम से ज्ञानार्जन का अंकन किया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को समापन समारोह में सम्मानित किया गया। शिविर की मुख्य उपलब्धियाँ रहीं - नये स्वाध्यायी तैयार हुए, शिक्षण बोर्ड की प्रभावी प्रेरणा हुई, विविध त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए गए।

शिविर में श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंज मंडी, श्रीमती शान्ता जी मोदी-जयपुर, श्रीमती लाडकंवर जी हीरावत-जयपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्रीमती आशा जी गांग-जोधपुर, श्रीमती मीना जी जैन-जोधपुर, श्रीमती बीना जी मेहता-जोधपुर, श्रीमती प्रेमलता जी सुराणा-जयपुर, श्री इन्दरचन्द जी जारोली-बालोतरा, श्री विनोद जी जैन-चेन्नई, श्री दिलीप जी जैन-

जोधपुर, श्री सुनील जी जैन-जोधपुर, श्री दीपक जी जैन-जोधपुर, सुश्री अल्फा जी सुराणा-जोधपुर एवं श्री कमलेश जी मेहता- जोधपुर एवं श्री इन्द्रकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर द्वारा अध्यापन सेवाएँ प्रदान की गईं।

समापन समारोह का आयोजन एस.एस.जैन स्कूल के विशाल परिसर में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. मंजुला जी बम्ब-जयपुर, समारोह अध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, विशिष्ट अतिथि श्री रूपकुमार जी चौपड़ा-पाली, श्री राजेन्द्र जी जैन-बाड़मेर(आयकर अधिकारी-बाडमेर संभाग), श्री मीठालाल जी मधुर, बालोतरा आदि थे।

समारोह में विविध ग्राम-नगरों के अनेक महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम में पधारे हुए महानुभावों के सम्मान-अभिनन्दन के पश्चात् शिविरार्थियों के अनुभव एवं विचार प्रस्तुत किये गये। शिविर संचालिका श्रीमती मोहनकौर जी जैन ने शिविर प्रतिवेदन का पठन किया।

श्री मोहनलाल जी कानूँगा, श्री पारसमल जी जिन्नाणी बागरेचा, श्री उत्सवराज जी, श्री दीपचन्द जी मेहता, श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, श्री धर्मेश जी चौपड़ा आदि विभिन्न महानुभावों का शिविर में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती आशा जी गांग ने स्थानीय संघ को शिविर की सुन्दर आवास-भोजन व्यवस्था हेतु धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री दिलीप जी जैन जोधपुर द्वारा किया गया।

उत्तराध्ययन सूत्र खुली किताब परीक्षा आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की जयपुर शाखा द्वारा 'उत्तराध्ययन सूत्र खुली किताब परीक्षा' का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'उत्तराध्ययन सूत्र' के तीन भागों पर की जा रही है। पुस्तक के तीनों भाग 110 रुपये में उपलब्ध हैं। डाक द्वारा मंगवाये जाने पर 140 रुपये भेजने होंगे। प्रश्न-पुस्तिका 30 रुपये में उपलब्ध है तथा डाक द्वारा मंगवाये जाने पर 40 रुपये में भेजी जा सकेगी। प्रश्न पुस्तिका के वितरण की प्रारम्भ तिथि16 सितम्बर, 2008 है। उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2008 है तथा परिणाम तिथि 15 जनवरी, 2009 है। प्रतियोगिता में पुरस्कार इस प्रकार देय हैं-

१. पूर्ण ५०० अंक प्राप्त करने पर(आगमश्रेष्ठी सम्मान)- ५१,०००/-रु.

२. प्रथम स्थान- २१,०००/-

३. द्वितीय स्थान- ११,०००/-

४. तृतीय स्थान- ५,०००/-

५. तीस प्रोत्साहन पुरस्कार(आगम वाचना सम्मान)- १०००/- रु.(प्रत्येक)

सम्पर्क सूत्रः- श्रीमती उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष-93145-01856, श्रीमती मीना गोलेछा, मन्त्री- 93144-66039

शिमोगा में दस दिवसीय ज्ञान उपासना शिविर सम्पन्न

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा., महासती श्री संगीता श्री जी म.सा. ठाणा 3 के पावन सान्निध्य में 25 जुलाई से 3 अगस्त 2008 तक 10 दिवसीय **'ज्ञान उपासना शिविर'** का आयोजन किया गया। शिविर में स्थानीय, बैंगलोर, मैसूर, हैदराबाद, कोप्पल, हुबली, सवदत्ती आदि अनेक क्षेत्रों से लगभग 115 शिविरार्थियों ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, अंतगड सूत्र वाचन एवं अर्थ, 25 बोल, 67 बोल, 25 क्रिया, 14 नियम, 3 मनोरथ, लघुदण्डक, कतिपय छोट-छोटे सारगर्भित थोकड़े (भवभ्रमण, पुण्यवान को प्राप्त 10 बोल, गुरु-शिष्य के प्रश्नोत्तर) एवं जीवन-निर्माण सम्बन्धी विषयों का अध्यापन कराया गया। शिविर में महासती मण्डल का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ तथा श्री कल्याणमल जी बाफना-मुम्बई, श्री दिनेश जी भंसाली-बैंगलोर, श्रीमती सीमाजी भंसाली-बैंगलोर, श्री विनोद जी जैन-चेन्नई, सुश्री पूनम जी लुंकड-कोप्पल एवं श्री राकेश जी जैन-बैंगलोर ने अमूल्य समय देकर शिविर को सार्थक और सफल बनाया। शिविर में अनेक विशेषताएँ रहीं-

(1)शिविरार्थियों को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप सबने अपनी थालियाँ भूसे से साफ की।इससे लगभग 5000 लीटर पानी की बचत भी हुई।

(2) शिविरार्थियों ने अनेक संकल्प किए, यथा- रेशमी वेशभूषा का त्याग, शुद्ध चमड़े के प्रयोग का त्याग, तरणताल(Swimming Pool) में स्नान का त्याग, आत्महत्या, भ्रूण हत्या, अण्डे का केक एवं जमीकन्द का त्याग, अपने से सम्बद्ध कार्यक्रमों में जमीकंद-प्रयोग का त्याग, हिंसक सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री का त्याग, अन्तरजातीय विवाह का त्याग, माता-पिता से कोई बात नहीं छुपाना आदि का संकल्प।

(3) 45 शिविरार्थियों ने स्वाध्यायी सेवा देने की स्वीकृति प्रदान की।

(4) आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा हेतु 55 आवेदन पत्र भरे गए।

(5) सभी शिविरार्थियों ने 4 माह में दूसरे व्यक्तियों को भी अण्डे का केक खाने के त्याग करवाने का संकल्प किया।

(6) शिविर के अन्तिम दिन ज्ञान उपासिका का चयन किया गया। इसमें ज्ञान उपासिका- 2008 - सुश्री पूजा ज्ञानचन्द जी मुणोत-हुबली, ज्ञानपथिका द्वितीय- श्रीमती कविता जी मेहता-शिमोगा, ज्ञानपथिका तृतीय- श्रीमती कोमल जी कवाड़-शिमोगा का चयन किया गया। शिविर में स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं नवयुवक मण्डल, शिमोगा ने अच्छी सेवाएँ प्रदान की।

स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा इस वर्ष पर्युषण पर्व में 28 अगस्त से 4 सितम्बर 2008 तक राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, गुजरात, कर्नाटक, कोंकण, आन्ध्रप्रदेश के लगभग 190 ग्राम-नगरों में स्वाध्यायी भेजकर धर्माराधना का कार्यक्रम करवाया गया। स्वाध्याय-संघ से प्रतिवर्ष विभिन्न राज्यों के साधु-साध्वियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम-नगरों में स्वाध्यायी भेजकर पर्युषण पर्वाराधन पर तप-त्याग, सामायिक, स्वाध्याय एवं ज्ञानाराधन, धर्मक्रिया करायी जाती है। इस वर्ष चेन्नई एवं विजयवाड़ा में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही स्वाध्यायी भेजकर जिज्ञासु क्षेत्रों को अधिक लाभ प्रदान किया गया।

विजयवाड़ा में स्वाध्यायियों द्वारा चातुर्मास-धर्माराधन

विज़यवाड़ा संघ की मांग पर इस वर्ष श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की ओर से चातुर्मास प्रारम्भ (17 जुलाई,2008) से ही धर्माराधन हेतु स्वाध्यायियों को भेजा गया। वरिष्ठ स्वाध्यायी सुज्ञ सुश्राविका श्रीमती अकलकंवर बाई मोदी-जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती कंचन जी मूथा-भोपालगढ़ एवं सुश्राविका श्रीमती सुशीला जी गोलेछा-जोधपुर ने एक माह तक विजयवाड़ा में ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन का परचम लहराया। प्रातः 6.30 बजे प्रार्थना, फिर दशाश्रुतस्कन्ध का वाचन हुआ। 8.45 से 10.00 बजे तक व्याख्यान एवं उत्तराध्ययन सूत्र के 5 अध्ययनों का वाचन किया गया। दिन में महिलाओं ने थोकड़े सीखे एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा की तैयारी की। सायंकाल प्रतिक्रमण एवं तदनन्तर रात्रि 10 बजे तक प्रतिदिन धार्मिक प्रश्नोत्तर एवं चर्चा की गई। चार रविवारों को प्रतियोगिताएँ रखी गई। दो रविवार को रात्रि में एक्यूप्रेशर चिकित्सा का अभ्यास कराया गया। इन दिनों में पर्याप्त तप-त्याग भी हुए।

550 नये कत्लखाने खोलने का विरोध

भारत सरकार के कृषिविकास, पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन मन्त्रालय द्वारा 550 नये बूचड़खाने खोले जाने की योजना है। इनके लिए 3500 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया है। इससे देश की पशु सम्पदा में कमी आएगी, जलसंकट बढेगा एवं पर्यावरण प्रदूषण बढ़ेगा। यह हिंसा भारतीय संविधान के आर्टिकल सं. 31 एवं 14 के विरुद्ध है। अनेक संस्थाएँ इन कत्लखानों का विरोध कर रही हैं। जीवदया मण्डल, टोंक ने हमें विरोधपत्र की प्रति प्रेषित की है।

जोधपुर में पीड़ित पशुओं की सहायता का केन्द्र

जोधपुर में पीड़ितों को आश्रय(Shelter to Sufferings) नाम से पशुओं की देखभाल हेतु बनाड़ रोड़ पर इण्डेन गैस गोदाम के पीछे असहाय पशुकेन्द्र कार्य कर रहा है। इस केन्द्र में मूक प्राणियों हेतु जीवन रक्षक औषधि एवं शल्य चिकित्सा की समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह असहाय पशु केन्द्र उदारमना समाजसेवियों की मूक प्राणियों के प्रति जीवदया की भावना एवं संवेदनशीलता के कारण उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग से कार्यरत है। संस्था के पंजीकृत कार्यालय का पता है- Shelter to Sufferings, Ganeshi lal Building, Opp. Indian overseas Bank, Sojati Gate, Jodhpur, Tel. 0291-3241872

13 वें महावीर पुरस्कार एवं पुस्तकों के लिए विशेष पुरस्कार हेतु नामांकन आमन्त्रित

भगवान् महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा निम्नाङ्कित क्षेत्रों में प्रचार की दृष्टि से मानव प्रयासों में प्रकट उत्कृष्टता के लिए पुरस्कारों हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं-

(1) अहिंसा एवं शाकाहार (2) शिक्षा एवं चिकित्साशास्त्र

(3) सामाजिक एवं सामुदायिक सेवाएँ

तीन पुरस्कारों में प्रत्येक के लिए 5 लाख रुपयों का पुरस्कार दिया जाएगा। फाउण्डेशन द्वारा इस वर्ष शाकाहार पर हिन्दी या अंग्रेजी में प्रकाशित या अप्रकाशित पुस्तक के लिए एक लाख रुपयों की राशि दी जानी है। दोनों प्रकार के पुरस्कारों के लिए नामांकन प्रपत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, 2008 है। अधिक विवरण फाउण्डेशन से प्राप्त किया जा सकता है। नियमावली एवं आवेदन पत्र वेबसाइट www.bmfawards.org. में उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र-Bhagawan Mahaveer Foundation, 11, Pornnappa Lane, Triplicane, Chennai-05, Post Box no.2983, Phone : 044-28480668/1353

सूचना

श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर(राज.) में कक्षा 1 से 12 तक, जिसमें कक्षा 11 व 12 के वाणिज्य वर्ग में Computer Science, Maths, Type तथा विज्ञान वर्ग में Bio-logy एवं Maths की व्यवस्था है, में प्रवेश प्राप्त करने हेतु प्रधानाचार्य महोदय से सम्पर्क करावें। जरूरतमंद छात्रों के लिए आवश्यकतानुसार शुल्क-मुक्ति की व्यवस्था एवं कम से कम 10 जैन छात्र होने पर हॉस्टल की भी सशुल्क/निःशुल्क व्यवस्था पर विचार संभावित है। **पता-** प्रधानाचार्य, श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़,जिला-जोधपुर(राज.) फोन नं. 02920-222280। **जोधपुर का पता-** सम्पतराज बोथरा-मंत्री, सर्किट हाउस के पास, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2510009

- प्रसन्नचन्द ओस्तवाल, अध्यक्ष

राजस्थान में 9 दिन पशुवध गृह एवं मांस-मछली की दुकानें बन्द रखने के आदेश

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर पर्युषण पर्व के दौरान 31 अगस्त से 16 सितम्बर के मध्य 31 अगस्त, 1,2,3,4,7,10,14 और 16 सितम्बर, 2008 को राजस्थान राज्य में सभी पशुवध गृह एवं मांस-मछली की दुकानें बन्द रखने का आदेश राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के निर्देश पर जारी हुआ। राज्य में पर्युषण पर्व को अहिंसा-दिवस घोषित करने के तहत यह कदम 30 अगस्त 2008 को उठाया गया। जैन समाज के प्रतिनिधिमण्डल ने मुख्यमंत्री से मिलकर उन्हें ज्ञापन दिया था। फलतः ये आदेश प्रसारित हुए।

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- ओसवाल जाति का 2465 वाँ ओसवाल स्थापना दिवस ओसियां सहित सम्पूर्ण देश में 100 से अधिक स्थानों पर 31 जुलाई को उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया।- *मिट्ठूलाल डागा*

मण्डी डबवाली- मण्डी डबवाली(सिरसा)में संचालित श्री महावीर जैन विकास संस्थान (मन्दबुद्धि, मूक, बधिर एवं विकलांग बच्चों के पुनर्वास केन्द्र) के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री सुमति जैन को 15 अगस्त,2008 को जिला प्रशासन स्तर पर हरियाणा सरकार के शिक्षा मन्त्री के कर कमलों से सम्मानित किया गया। 24 अगस्त,2008 को श्री महावीर जैन विकास संस्थान के प्रथम वार्षिक समारोह में गुरु सुदर्शन हीयरिंग सिस्टम

का शुभारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री हुकमचन्द जैन, प्रधान जैन सभा भटिण्डा एवं श्री विमल जैन, जे.जे. सोलवेण्ट समाना ने की। परम विशिष्ट अतिथि श्री कैवलकृष्ण जैन एवं पुरुषोत्तम दास थे। श्री ज्ञानचन्द जैन-दिल्ली ने बच्चों के उत्थान हेतु 51 हजार की राशि प्रदान की।

चेन्नई- श्री मुक्ता-मिश्री गुरु सेवा समिति, तमिलनाडु द्वारा प्रदत्त 'सेवा शिरोमणि' 2007-2008 का अलंकरण प्रमुख समाजसेवी श्री रिकबचन्द बोहरा, बडपलनी को दिया गया। आप दानवीर सुश्रावक हैं। - *महावीरचन्द सिसोदिया*

रतलाम- गोमूत्र एवं आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से अब मिर्गी रोग की चिकित्सा में भी सफलता मिली है। रविकुमार बाबूराव सोनी ने अपने अनुभव में बताया कि तीन माह तक रतलाम के कामधेनु औषधि केन्द्र में चिकित्सा के पश्चात् उसका स्वास्थ्य एवं मस्तिष्क सामान्य हो गया है। - *चन्दनमल घोटा, चिकित्सक, 23-24, चांदनी चौक, रतलाम (म.प्र.) फोन: 094259-71987(मो.)*

बीकानेर- श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के नवीन केन्द्रीय कार्यालय भवन का शिलान्यास समारोह आयोजित हुआ। समारोह में संघ के गणमान्य श्रद्धालुओं एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया।

बधाई/चुनाव

जोधपुर- श्री सचिन भाण्डावत सुपुत्र संदीप भाण्डावत ने राज्य स्तरीय अंग्रेजी वाद-

विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उनका चयन राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिता हेतु किया गया है। अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत के सुपौत्र श्री सचिन जी भाण्डावत होनहार प्रतिभासम्पन्न एवं धर्मनिष्ठ छात्र हैं। सन्त-सती दर्शन, सामायिक, धार्मिक अध्ययन एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनका कार्य सराहनीय है।

चेन्नई- श्री एस. एस. जैन युवक संघ, साहुकार पेट, चेन्नई के जैन भवन में आयोजित बैठक में श्री हस्तीमल जी खटोड़ को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया।

बूँदी- राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूँदी में इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ.

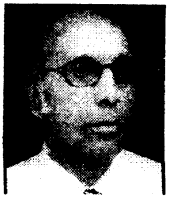

एस.एल. नागौरी को स्वतन्त्रता दिवस समारोह में राजस्थान सरकार के राज्यमन्त्री श्री बाबूलाल जी वर्मा द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। डॉ. नागौरी अब तक इतिहास पर 108 पुस्तकें लिख चुके हैं। उनका नाम विश्व के 125 इतिहासकारों

की सूची अमेरिकन बायोग्राफिक्स इंस्टीट्यूट, नार्थ केरोलिना में दर्ज है। वे देश के विभिन्न प्रान्तों में अनेक सम्मान से अलंकृत हो चुके हैं।

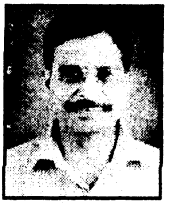

नागपुर- सुश्रावक श्री महेन्द्र कुमार जी एम. कटारिया को भारतीय जैन संघटना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत किया गया है। आप रत्नसंघ के प्रति समर्पित कार्यकर्ता हैं। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के विदर्भ शाखा के आप संयोजक भी हैं।

चेन्नई- करुणा अन्तरराष्ट्रीय (Karuna International) की साधारण सभा में आगामी दो वर्षों के लिए नई समिति का गठन किया गया है। चेयरमेन श्री सुरेन्द्र जी एम. मेहता, वरिष्ठ संरक्षक श्री भंवरलाल जी सोनी एवं अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी जैन हैं। श्री कैलाशमल जी दूगड़ सहित 9 उपाध्यक्ष हैं। महामन्त्री के रूप में श्री पदमकुमार जी टाटिया ने कार्य सम्हाला है तथा कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार जी जैन हैं।

श्रद्धाञ्जलि

पाली(मारवाड़)- श्रद्धानिष्ठ धर्मनिष्ठ एवं पाली संघ की वरिष्ठतम सुज्ञ श्राविका

श्रीमती जतनादेवीजी हिंगड़ धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनराज जी हिंगड़ का 11 अगस्त 2008 को संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आपका अधिकांश समय धर्म-आराधना, त्याग-तप, दया-संवर, पौषध एवं सामायिक-स्वाध्याय में व्यतीत होता था। आप संघहित के कार्यों में सदैव अग्रणी रहीं तथा आपने ज्ञान के साथ तप को विशेष महत्त्व दिया। आपका जीवन सरल, विनम्र, धर्ममय, वात्सल्यमय एवं करुणामय था। धर्मसाधना में सजग श्राविकारत्न ने मरण के पूर्व संथारा अंगीकार करने की भावना रखी तो परिवारजनों ने वहाँ विराजित श्रद्धेय महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। लगभग आधा घंटा पश्चात् सुश्राविका ने नश्वर देह का त्याग कर दिया। गुरु हस्ती, गुरु हीरा एवं गुरु मान के प्रति अटूट आस्थाशील श्राविका अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। उनके सुपुत्र श्री कान्तिलाल जी एवं श्री सुशीलकुमार जी संघसेवा एवं धर्माराधन में सक्रिय हैं। दिवंगत पुण्यात्मा की भावना के अनुसार परिवार ने शोकादि के कार्यक्रम नहीं रखे।

- ताराचन्द सिंघवी, पाली

गंगापुर सिटी- सुश्रावक श्री हुकमचन्द जी जैन हलवाई का 27 अगस्त 2008 को 72 वर्ष वय में निधन हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे तथा प्रतिदिन महावीर भवन में सामायिक करते थे। - ***रेवती प्रसाद जैन***

जोधपुर- समाजसेवी सरलमना सुश्रावक श्रीमान् राजेन्द्र जी गुलेच्छा सुपुत्र श्री गुलाबचन्द जी गुलेच्छा का 2 अगस्त 2008 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्तियों के साथ सेवा कार्य में सदैव अग्रणी रहे। भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति के एक्जिक्यूटिव सदस्य होने के नाते आपने अनेक असहाय लोगों को सम्बल प्रदान किया। इसके अतिरिक्त आप अन्तरराष्ट्रीय मानवाधिकार सुरक्षा संघ -राजस्थान स्टेट काउन्सिल के अध्यक्ष, लायन्स क्लब जोधपुर गोल्डन जुबली के चार्टर अध्यक्ष तथा समता महाजन, मुम्बई के सदस्य थे।

जीन्द- सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन पूर्व प्रधान एस.एस. जैन सभा जीन्द का 3 अगस्त,2008 को समाधि भाव के साथ निधन हो गया। श्री राजकुमार जैन सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते थे। उनका जीवन सरल और विनम्र था। जीन्द शहर में पधारने वाले संत-सतियों की सेवा सुश्रूषा में बराबर तत्पर रहते थे। उनके मन में धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा भावना थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गये हैं। आपके सुपुत्र वरिष्ठ पत्रकार कमल कुमार जैन उनके ही पद चिह्नों पर चल कर जन सेवा तथा राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र में निरन्तर गतिशील है।

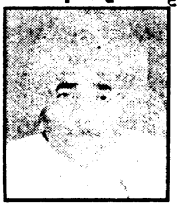

पीपाड़ शहर- दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री रूपचन्द जी लुणावत का 19 जुलाई 2008 को स्वर्गवास हो गया। आप समाज के निष्ठावान श्रावक थे तथा सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं अतिथि-सत्कार में तत्पर रहते थे। मूक पशुओं के प्रति आपमें करुणा भावना थी। आपने अनेक संस्थाओं का संचालन किया। आप विशेष धार्मिक रुचिशील, क्रियावान् एवं श्रद्धावान श्रावक थे। *-राजेश लुनावत, चेन्नई*

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी धर्मपत्नी स्व.श्री सरदारमल जी नवलखा का 28 अगस्त, 2008 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविका थीं। आपका जीवन अनेक सद्गुणों से पूरित था।

जोधपुर- सुश्रावक वैद्य श्री सम्पतराज जी मेहता का 22 अगस्त 2008 की रात्रि में देहावसान हो गया। पूज्य हस्ती, हीरा एवं मान के प्रति समर्पित श्री मेहता सा, संघ-सेवा में पूर्ण निष्ठा से तत्पर रहते थे। सन्त -सतीवृन्द की निरतिचार औषधोपचार-सेवा में सदैव अग्रणी रहने वाले वैद्य श्री का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से पूरित था। 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा' इस सूत्र को जीवन में अपनाते हुए आयुर्वेद चिकित्सा-क्षेत्र में तो मेहता सा ने नाम कमाया ही, साथ में धर्म की जाहोजलाली में भी

सदैव अन्तःकरण से जुड़े रहे। सेवा के साथ आप सामायिक-स्वाध्याय भी करते थे तथा रात्रिभोजन -त्याग आदि विविध प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप सेवा भावना एवं उच्च व्यक्तित्व के कारण लोकप्रिय चिकित्सक के रूप में जनसाधारण के मन में बसे हुए थे। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री भरत जी, बसन्त जी मेहता सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती प्रभादेवी जी गोलेच्छा धर्मपत्नी स्व. श्री हेमचन्द्र जी गोलेच्छा का 1 सितम्बर,2008 को निधन हो गया। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति श्रद्धालु एवं पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित सुश्राविका का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता आदि सद्गुणों में ओत-प्रोत था। आप सामायिक, त्याग-तप एवं धर्माराधन में तत्पर रहती थी। जीव दया के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान था। लाल भवन में नियमित रूप से आकर धर्माराधना करने का आपका लक्ष्य रहता था। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

प्रेरक आजीवन शीलव्रत

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा एक ऊर्जावान, दृढ़धर्मी, दृढ़प्रतिज्ञ एवं कर्मठ सुश्रावक हैं। उन्होंने ३ वर्षों पूर्व नये व्यावासायिक कार्य से निवृत्ति लेनी थी तथा अब इस वर्ष पर्युषण में शास्त्रीनगर, जोधपुर में महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ठाणा ४ के चातुर्मास में ५१ वर्ष की वय में आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इनके साथ ही संघ के अतिरिक्त महामन्त्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल ने भी इस दिशा में चरण बढ़ाते हुए ५२ वर्ष की वय में आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए हैं। एक अनूठा उदाहरण रहा श्री सुरेश जी जीरावला द्वारा मात्र ३५ वर्ष की वय में आजीवन शीलव्रत अंगीकार करना। ये तीनों प्रेरक उदाहरण हम सबको आगे बढ़ने की प्रेरणा करते हैं।

क्षमायाचना

संवत्सरी महापर्व (4 सितम्बर 2008) के पावन प्रसंग पर समस्त जीवों से मैंने क्षमायाचना की है। मेरी 90 वर्ष की अवस्था है। विगत वर्षों में जाने-अनजाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मेरी किसी भी प्रवृत्ति से यदि किसी का भी दिल दुःखा हो तो उसके लिए समस्त श्रावक-श्राविकाओं, पाठकों से हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ। विश्वास है सब मुझे अवश्य क्षमा कर देंगे। *-मोहनराज चाम्बड़, जोधपुर*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11593 Smt. Nirmala ji Bora, Chalisgaon, Jalgaon (M.H.)
11594 Shri Mahavir Chand ji Chordia, Bangalore (Karnataka)
11595 श्रीमती नीलम जी जैन, मोहननगर, हिण्डौनसिटी, जिला–करौली (राजस्थान)
11597 श्री राजमल जी मेहता, अहिंसापुरी, फतेहपुरा, उदयपुर (राजस्थान)
11598 श्री रमेश जी खोखावत (जैन), बेदला रोड़, बड़गाँव, जिला–उदयपुर (राजस्थान)
11599 Shri Pankaj ji Parakh, Sainthia, Birbhum (W.B.)
11600 Shri J. Shanti Lal ji Jain, Tirupathi, Chittoor (A.P.)
11601 Smt. Amita ji Jain, Gita Nagar, Indore (M.P.)
11602 श्री सुरेन्द्र की गोलछा, खरे टाऊन, नागपुर (महाराष्ट्र)
11606 श्री प्रकाशचन्द जी श्री श्रीमाल, देवेन्द्र नगर, आदर्श स्कूल के सामने, रायपुर (छत्तीसगढ़)
11607 श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, ओस्तवाल प्लाजा, सुन्दरवास, उदयपुर (राजस्थान)
11608 श्रीमती शशि जी जैन (गुगलिया), सर्राफा बाजार, लक्षकर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
11609 श्री अतुल जी हीरावत, अप्पा साहिब रोड, प्रभादेवी, मुम्बई (महाराष्ट्र)
11610 श्री चैनमल जी पामेचा, नई आबादी, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
11611 Shri Sanjeev ji Doshi, Borivally (West) Mumbai (M.H.)
11612 श्री प्रफुल्ल चन्द जी कर्णावट, प्रताप नगर, जलगाँव (महाराष्ट्र)
11613 श्री लूणकरण जी कोठारी, मलाड (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
11614 श्री कुलदीप जी कोठारी (गाँधी), मालेगाँव-444503, वासिम (महाराष्ट्र)
11615 श्री जितेन्द्र जी शाह, काब्राजी बाजार, बीजापुर (कर्नाटक)
11616 श्री गोपाल जी कात्रेला, सुमति नगर, बीजापुर (कर्नाटक)
11617 Shri Deelip Kumar H. Bhandari Ji, Ilkal, Bagalkot (Knt)
11618 Shri U. Subhashmal ji Lodha, Chennai (Tnd)
11619 Shri Sumit ji Kankaria, V.& Post.-Sakri, Dhulia (M.H.)
11620 Shri B. Shanti Lal ji Saklecha, Chepauk,Chennai (T.nadu)
11621 Shri Sushil ji Solanki (IRS), Shaikh Sarai, NewDelhi
11622 Dr. Narpat ji Solanki, Rajaj ji Nagar,Bangalore (Karnataka)
11623 Shri S. P. Chhajed ji, Andheri (West), Mumbai (M.H.)
11624 Shri G. C. Gulecha Ji, New Pali Road,Jodhpur (Rajasthan)
11625 Shri Aruna Davendra ji Chhajed, Mumbai (M.H.)
11626 श्री विनय जी रामपुरिया, तिवाड़ी जी का बाग, आदर्शनगर, जयपुर (राजस्थान)
11627 श्री शिव कुमार जी संचेती, चित्रगुप्त नगर प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर (राजस्थान)
11628 श्री अंकित जी छाजेड़, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राजस्थान)
11629 श्री तुषार जी भंडारी, पुलिस स्टेशन के सामने, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)

11630 श्री भूपतराज जी कोठारी, कोठारियों का बास, मेन बाजार, जसोल, बाड़मेर (राजस्थान)
11631 श्री अशोक कुमार जी जीरावला, बाड़मेर कलेण्डर रोड, बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)
11632 श्री नवीन कुमार जी गाँधी, विद्युतनगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
11633 श्री महावीर कुमार जी ओस्तवाल, ओसिया इलेक्ट्रोनिक, विजयवाड़ा (आन्ध्रप्रदेश)
11634 श्रीमती मधु जी ओस्तवाल, आयरन सेण्टर, मेन बाजार, विजयवाड़ा (आन्ध्रप्रदेश)
11635 श्री अनिल जी नाहर, सौभाग्य अपार्टमेन्ट,मंत्री हॉस्पिटल के पास,गंजमाल,नाशिक (महा.)
11636 श्री प्रेरणा नेत्रा जी भंडारी, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)

श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई के सौजन्य से

11596 Shri Som Chand ji Nahar, Chennai (Tamilnadu)
11603 Shri Vir Chand ji N. Baghmar, Bagalkot (Karnataka)
11604 Shri Chettan ji, Arsikere, Distt. Hassan (Karnataka)
11605 Shri Ajit Kumar ji H. Betala (Jain), Bagalkot (Karnataka)

जिनवाणी हेतु साभार

21000/- श्री टीकमचन्द जी हीरावत, मुम्बई, सुपुत्री श्रीमती काजल चोरडिया धर्मपत्नी श्री अशोककुमार चोरडिया एवं प्रद्युम्न चोरडिया सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी चोरडिया, जोधपुर के अठाई की तपस्या पर सप्रेम भेंट।

21000/- श्री टीकमचन्द जी हीरावत, मुम्बई, स्वर्गीय श्री संजय जी हीरावत की प्रथम पुण्य तिथि के प्रसंग में सप्रेम भेंट।

11000/- सज्जनकंवर जी, चैनराज जी, प्रेमचन्द जी एवं परिवार-सूरत, सुश्रावक श्री पन्नालाल जी चौपड़ा, अजमेर निवासी सूरत का दिनांक 24.08.2008 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/- श्री मोहनलाल जी, पारसमल जी बोहरा, तिरूवन्नमलई, परम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शनार्थ सपरिवार मुम्बई उपस्थित होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2001/- श्री शांतिलाल जी, कांतिलाल जी गाँधी एवं समस्त गाँधी परिवार, आकोला, पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शनार्थ मुम्बई में उपस्थित होने तथा दादा सा श्री गणेशमल जी की पुण्य स्मृति में एवं श्रीमती शशिकला जी के मासखमण की तपाराधना सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री झूमरलाल जी बाघमार 'कोसाणावाले' चेन्नई, आचार्यश्री के दर्शन लाभ प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कान्तिलाल जी सुनीलकुमार जी हींगड, पाली (मारवाड़),अपनी पूजनीय माताजी श्रीमती जतनादेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनराज जी हिंगड के दि. 11.03.2008 को हुए समाधिमरण की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती मंजू जी, संदीप, शानु एवं ध्रुव धारीवाल, जोधपुर, स्व. श्री नरेन्द्र राज जी धारीवाल की आठवीं पुण्य तिथि पर भेंट।

1001/- श्री दिलीप कुमार जी भण्डारी-रत्नागिरी(महा.) की तरफ से भेंट।

1000/- श्री जीवराज जी अशोक कुमार जी लोढ़ा, बैंगलोर, अपनी दोहित्री सौ.कां. ममता के शुभविवाह पर मायरा प्रदान करने की खुशी में लोढ़ा परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

551/- श्री रमेशचन्द जी जैन (बिलोपा वाले), सवाईमाधोपुर-जयपुर,अपने सुपुत्र श्री संजय जी जैन

(सी.ए.) के ओबेराय ग्रुप ऑफ होटल, उदयपुर में प्रबन्धक (वित्त) के रूप में पदस्थापन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री दानमल जी जैन, जयपुर, अपने सुपुत्र डॉ. दीपक जी जैन का डी.एम. न्यूरोलॉजी एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर, में प्रवेश के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री अभिनन्दन जी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार मुम्बई में दर्शनलाभ की खुशी में भेंट।

501/- श्री राजेश जी लुणावत, चेन्नई, सुश्रावक श्री रूपचन्द जी लुणावत का दिनांक 19.07.2008 को पीपाड़सिटी में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सम्पतलाल जी संजय जी, मुकेश जी, नितीन जी जैन, जबलपुर, परम पूज्य आचार्य भगवन्त के मुम्बई चातुर्मास में पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नौरतनमल जी, प्रकाशचन्द जी मेहता, जोधपुर सुपुत्र कमलेश एवं पुत्रवधू श्रीमती मीनू के पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से गुरु आम्नाय अंगीकार करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी, रमेश जी, तेजराज जी, दीपक जी, गौरवली-चेन्नई आचार्यप्रवर आदि ठाणा सन्त-सती मंडल के पावन दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती चांदकंवर जी खिंवसरा, जोधपुर की तरफ से भेंट।

500/- श्री पारसमल जी मुणोत(मोहनोत)अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमला जी मुणोत के सिद्धि तप पर एवं पुत्रवधू श्रीमती करुणा जी मोहनोत धर्मपत्नी श्री महेश जी मोहनोत की अठाई की तपस्या पर सप्रेम भेंट।

500/- श्री किस्तूरचंद जी, संजयकुमार जी, शैलेन्द्रकुमार जी डोसी, ब्यावर, श्रीमती रेखा जी डोसी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री शान्तिलाल जी मदनलाल जी बरडिया, जोधपुर, सुश्री दीपिका बरडिया के 11 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री अनिल जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, धर्मपत्नी श्रीमती अलका रानी जी जैन के 9 दिवसीय उपवास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार

2100/- श्री मनोज जी मेहता, किशनगढ़।

1100/- श्री नवीन जी डागा, जोधपुर अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रेणु पुत्रवधू श्री सुधा जी धर्मपत्नी श्री बहादुरमल सा डागा एवं (पौत्रवधू स्व. श्री गुमानकंवर जी एवं श्री सौभाग्यमल सा डागा,बीकानेर) के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1069/- श्री जैन समिति, रेणुकूट।

500/- श्रीमती कमला जी मोदी, श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, श्रीमती ऋतु जी लोकेन्द्र नाथ जी मोदी,जोधपुर बहिन स्व. विमला बाईसा सा धर्मपत्नी स्व. श्री रणजीत सिंह सा. भण्डारी की 19 वीं पुण्य तिथि (सम्वत्सरी पर्व) पर सादर स्मरणांजलि स्वरूप भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

5,00,000/- श्री गजेन्द्र फाउण्डेशन, मुम्बई भवन निर्माण हेतु सप्रेम भेंट।

10,000/- श्री घेवरचन्द जी लोढ़ा, जयपुर, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के व्याख्यानों पर आधारित पुस्तक 'पथ की रुकावटें' के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

6,500/- श्री प्रसन्नचन्द जी बाघमार, बैंगलोर, मण्डल से प्रकाशित "हस्ती-हीरा-मान चालीसा" के

पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

3500/- श्री प्रेमचन्द जी जैन-मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के स्वाध्यायी के रूप में रत्नागिरी पधारने पर सप्रेम भेंट।

500/- श्री बाबूलाल जी जैन, पो. देई, जिला-बूंदी (राज.)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

१२,०००/- श्री विमलचन्द जी धोका, मैसूर

१२,०००/- श्री राकेश जी ललवानी, चेन्नई

१२,०००/- श्री महावीर जी मुणोत, चेन्नई

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए १२०००/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of IncomeTax Act 1961) **से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें-** *श्री अशोक जी कवाड़, ३३, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

भूलसुधार

माह अगस्त की जिनवाणी में पृष्ठ सं. 108 पर साहित्य प्रकाशन हेतु साभार में इस प्रकार पढ़ा जावे "85,000/- श्री रिषभ जी मेहता C/o श्री प्रेमचन्द जी गाँधी, दिल्ली द्वारा पुस्तक हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4 के प्रथम संस्करण के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।"

आगामी पर्व

आश्विन कृष्णा ८	सोमवार, २२.०९.२००८	अष्टमी
आश्विन कृष्णा १४	रविवार, २८.०९.२००८	चतुर्दशी
आश्विन कृष्णा ३०	सोमवार, २९.०९.२००८	पक्खी
आश्विन शुक्ला ७	सोमवार, ६.१०.२००८	आयंबिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला ८	मंगलवार, ७.१०.२००८	अष्टमी
आश्विन शुक्ला १०	गुरुवार, ९.१०.२००८	पू.आचार्यश्री भूधरजी म.सा. की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ला १४	सोमवार, १३.१०.२००८	चतुर्दशी / पक्खी
आश्विन शुक्ला १५	मंगलवार, १४.१०.२००८	आयंबिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा १	बुधवार, १५.१०.२००८	पूज्य आचार्यप्रवर श्री हमीरमलजी म.सा की १५५ वीं पुण्यतिथि

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

कर्म निर्जरा का प्रबल साधन।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन॥

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बडा इसके पालन का॥

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
– धोवन पानी

Prithvi Exchange
A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED
33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008
Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

A GLASS OF WATER WILL MAKE
YOUR KARMA QUARTER
- धोवन पानी -

GURU HASTI GOLD PALACE
(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)
22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056
Hello-Hello
044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD।BAD॥
बिक्लरी पानी-OK।OK॥
छाना हुआ पानी-GOOD।GOOD॥
धोवन पानी-BEST।BEST॥

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सहजता में धर्म का आधार।
धोवन पानी प्रथम आचार।।

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN – पियें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 9 ★ मूल्य : 10 रु.
15 सितम्बर, 2008 ★ भाद्रपद सं. 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, **Ghatkopar** (W)

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road,
Andheri (E)

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, **Mulund** (E)

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, **Thane** (W)

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by
PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD.
www.propertysolutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।